...रतीय
तिथि ... : ३२
ओइम् पुस्तकालय २३३२

पुराण परीक्षा

३५५५

श्रीमान् पं० रुद्रदत्तशर्मा कृत

प० ५

जिस को

पं० रामनारायण शुक्ल ने सत्यव्रतशर्मा
द्विवेदी के वेदप्रकाशयन्त्रालय
इटावा में मुद्रित कराके
प्रकाशित की ॥

रजिस्टरी कराई गई किसी को छापने का
अधिकार नहीं ॥

प्रथमवार
१०००

मूल्य ≡)

पुस्तकालय
२५०१
महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

[illegible] भारतीय
संख्या 3545
तिथि .... प. पु.
पुस्तकालय

अथ पुराणपरीक्षा

—::※::X::※::—

उस सर्वशक्तिमान् परमात्मा की भी क्या ही अपारमहिमा है कि जिसने जीवों को कर्मानुसार विविध प्रकार के स्वभाव और बुद्धिवैलक्षण्य प्रदान करके अपनी विचित्र रचना का अपूर्व परिचय दिया है। उन में भी मनुष्ययोनि में प्राप्त जीव अत्यन्त ही विचित्र भाव [illegible]श्चर्यों से परिपूर्ण जान पड़ते हैं, कोई मनुष्य जिस [illegible] को बना के प्रसन्न होता है दूसरा उस ही वस्तु को बिगाड़ कर आनन्द मानता है, प्रत्यक्ष देख लीजिये कि माली वृक्ष को लगा कर और बढ़ई वृक्ष को काट के [illegible]मोद मानता है। जुलाहा कपड़े को बना के और दरजी [illegible] को काट के हर्षित होता है, परन्तु विचित्रता यह [illegible] कि समयानुसार किसी का भी कार्य्य निन्दित वा [illegible]निकारक नहीं समझा जासकता है परन्तु असमय में [illegible]वा अनाड़ी कारीगर का कार्य्य निन्दित अरोचक और [illegible]निकारक भी प्रायः जचा करता है। जगत् में वह [illegible]ारीगर भी हानिकारक समझा जात है जो "कोल्हू को काट कर मूंगरी बनावे" वा "पश्मीने के शाल को फाड़ कर दुपल्ला टोपी सिये"।

यही नियम विज्ञान और साहित्य में भी देखा जाता है जिन इतिहासग्रन्थों को सांसारिक और पारमार्थिक नियमों की रक्षा के निमित्त आर्य्यावर्त्तीय विद्वानों ने निर्माण किया था और जिन इतिहासग्रन्थों से प्रजा को सुचरित्रों की तथा राजा और सम्राटों को सुशासन की शिक्षा प्राप्त होती थी उन्हीं इतिहास ग्रन्थों को मुगलसम्राटों ने भस्म कर कर के अपने हर्ष की सीमा को बढ़ाया, अबतक भी अनेक पुस्तकों में लिखा पड़ा है कि मुसलमानों के शासन में प्रतिदिन सहियों संस्कृतग्रन्थ जला के हम्माम का पानी गर्म्म किया जाता था ॥

इस ही दुष्काल के विकराल गाल में संस्कृत के इतिहास ग्रन्थ जब चर्वण से चले गये तब उस समय के अनाड़ी वा अल्पज्ञलोगों ने बेतुकी तान के समान "पुराण" नाम के नूतन ग्रन्थों की रचना करके संस्कृत साहित्य को कलंकित किया।

इन पुराण नाम के नवीन पुस्तकों की रचना एतो इस कारण घृणित और बुरी हो गई कि उस समय के हिन्दु भी मुसलमानों का अनुकरण करना उत्तम और हितकारी समझते थे, दूसरे अनेक विषयों में परतन्त्र थे तीसरे उस समय के श्रीमान् लोग काव्यप्रिय थे, चतुर पुस्तकप्रणेता ब्राह्मण लोग ऐसे निर्धन हो गये थे कि जिस राजा वा ज़मीन्दार के वंश का वर्णन करते लगे

उस वंशको श्रीरामचन्द्र तक पहुंच दिया और उसके प्रत्येक पुरुष को दिग्विजयी और चक्रवर्त्ती बना के छोड़ा अस्तु—

इन बातों का क्रमशः इस पुस्तक में वर्णन किया जायगा किन्तु प्रथम यह दिखाना आवश्यक है कि पुराणकारों ने पुराण का क्या लक्षण लिखा है (क्योंकि व्याकरण की रीति से पुरातन शब्द के तकार को लोप कर ने से वा एक पक्ष में तुडागम न करने से अथवा पृषोदरादिगण के अन्तर्गत पुराण शब्द की सिद्धि मानने से यह व्युत्पत्ति हो जायगी कि "पुरानवमभवतीतिपुराणम्" जो पहिले नया हो उसे पुराण कहते हैं परन्तु इस अर्थ से घटपटादि सभी पदार्थ पुराण शब्दवाच्य हो जायगे इस कारण पुराण प्रणेताओं ने पुराण शब्द को लाक्षणिक माना है)

पुराणवालों ने जो पुराणों के लक्षण लिखे हैं उन में भी परस्पर मतभेद है और न वह लक्षण पूरी रीति से घटते हैं । पुराणों का सामान्य लक्षण यह है

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशयानुचरितंचैव पुराणं पञ्च लक्षणम् ॥

जिस में सर्ग नाम जगत् की उत्पत्ति का वर्णन, प्रतिसर्ग प्रलय का वर्णन सृष्टि के आरम्भ से वंश वा कुलों का वर्णन, मन्वन्तरों की व्यवस्था और अनेक कुलों में उत्पन्न हुये प्रधान पुरुषों के चरित्रों का वर्णन हो उसे

(वा उन्हें) पुराण कहते हैं। इन लक्षणों के विरुद्ध भागवत के १२ स्कन्ध के ७ अध्याय में लिखा है।

सर्गोस्याथविसर्गश्च वृत्तिरक्षान्तराणिच ।
वंशोवंश्यानुचरितम् संस्थाहेतुरपाश्रयः १
दशभिर्लक्षणैर्युक्तम् पुराणन्तद्विदोविदुः ।
केचित्पञ्चविधंब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया २

भागवत वाले ने पुराणों के दो भेद माने हैं एक अल्पपुराण, और दूसरा महापुराण, प्रकृति से लेकर इन्द्रियों और उन के विषय पर्यन्त की रचना को सर्ग, बीज बनने के तुल्य कार्य्यसृष्टि के प्रवाह वर्णन का नाम विसर्ग, जड़ वा चेतन से अथवा दोनों से प्राणियों के भोजन निर्वाह की वृत्ति, तिर्य्यक् वा मनुष्य योनि में जन्म ले कर जो ईश्वर दुष्ट दैत्यों का वध करता है और जगत् की रक्षा करताहै उसेरक्षा कहतेहैं मनु,मनुपुत्र देवता, ऋषि, इन्द्र और अंशावतारों का वर्णन मन्वन्तर कहाता है। ब्रह्मासे उत्पन्न हुये राजाओं की त्रैकालिक वंशपरम्परा का दिखाना वंशवर्णन, शुद्ध वंशों में उत्पन्न हुये विशेष पुरुषों के चरित्रों के वर्णन को वंश्यानुचरित कहते हैं। चार प्रकार अर्थात् नित्य, नैमित्तिक, स्वाभाविक, और महाप्रलय के वर्णन को संस्था, जीव की अविद्यादि बन्धनों के वर्णन को हेतु और मुक्ति वर्णन को अपाश्रय कहते हैं इन दश लक्षणों से जो युक्त हो उस की महापुराण संज्ञा है।

अब विचारणीय विषय यह है कि भागवतवालों ने जिन पुस्तकों के वास्ते इन लक्षणों को घड़ा है उन में से कोई भी पुस्तक ऐसा नहीं है जिस में यह सब लक्षण घटते हों अधिक क्या कहें खुद भागवत शरीफ़ में ही सब लक्षण नहीं घटते, इन पुराणों की संख्या का गड़बड़ दिखाने के अनन्तर क्रमशः दश लक्षणों का खण्डन लिखा जायगा।

देवी भागवत स्कन्ध १२ के ७ अध्याय में पुराणों की संख्या यों लिखी है:—

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं लैङ्गं सगारुडम्।
नारदीयं भागवत्तमाग्नेयं स्कन्दसंज्ञितम् ॥
भविष्यं ब्रह्मवैवर्त्तम् मार्कण्डेयं सवामनम्।
वाराहंमात्स्यकौर्म्यंचब्रह्मांडाख्यमितित्रिषट्

अर्थात् यही १८ महापुराण हैं। १ ब्रह्मपुराण, २ पद्म०, ३ विष्णु०, ४ शिवपु०, ५ लिङ्गपु०, ६ गरुड़पु०, ७ नारदीय०, ८ भागवत, ९ अग्निपु०, १० स्कन्धपु०, ११ भविष्यपु०, १२ ब्रह्मवैवर्त्तपु०, १४ मार्कण्डेय, १४ वामनपु०, १५ वाराहपु०, १६ मत्स्यपु०, १७ कूर्म्मपु०, १८ब्रह्माण्ड।

यद्यपि पुराणों की संख्या सर्वत्र १८ ही लिखी है तथापि आजकल २१ पुस्तक महापुराण के नाम से और २० पुस्तक उपपुराणों के नाम से प्रचलित हो रहे हैं। यथा—विष्णुपुराण १, भागवत २, नारदीयपु० ३, ग-

रुद्रपु० ४, पद्मपु० ५, वाराह ६, ब्राह्म ७, ब्रह्माण्ड ८, ब्रह्मवैवर्त्त ९, मार्कण्डेय १०, भविष्य ११, वामन १२, वायु १३, लिङ्ग १४, स्कन्ध १५, अग्नि १६, मत्स्यपु० १७, कूर्म्म १८ भागवत १९, वह्निपु० २०, पुराणब्रह्मवैवर्त्त २१, ।

उपपुराण:—१ नृसिंहपु०, २ बृहन्नारदीयपु०, ३ शिवपु०, ४ दुर्वासापु० ५ कपिलपु०, ६ मानवपु०, ७ औशनसपु०, ८ वरुणपु०, ९ कालिकापु०, १० शाम्बपु०, ११ नन्दीपु०, १२ सौरपु०. १३ पाराशरपु०. १४ आदित्यपु०. १५ माहेश्वरपु०. १६ भार्गवपु०. १७ वाशिष्ट. १८ भविष्य १९ ब्रह्माण्ड. २० कूर्म्मपुराण । (देखो पण्डित अक्षयकुमारदत्त की बनायी भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदाय की भूमिका)

पुराणों को कब किसने बनाया ?

——(:०००:)——

पुराणों के मानने वालों का विश्वास और कथन है कि १८ हों पुराणों को महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास ने बनाया क्योंकि भागवत में यही लिखा है ।

अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः ।
भारताख्यानमतुलं चक्रे तदुपबृंहितम् ॥

अर्थात् सत्यवती के पुत्र व्यास ने १८ पुराण और महाभारत के भारी आख्यान को बना के पश्चात् भागवत् को बनाया परन्तु इस श्लोक से यह सिद्ध हो जाता है कि

भागवत् व्यासदेव की बनाई नहीं है क्योंकि उसही भागवत् में लिखा है कि भगवान् विष्णु ने ब्रह्मा को ४ श्लोक की भागवत् का उपदेश किया इस से सिद्ध हुआ कि भागवत् के मूल ४ श्लोक विष्णु के बनाये हैं व्यास के नहीं फिर जहां पर सूत और शौनकादि का संवाद है वह श्लोक न सूत के बनाये और न व्यास के बनाये होसक्ते हैं वरन वह किसी तीसरे के ही बनाये हैं क्योंकि उन श्लोकों में प्रथम पुरुष की क्रिया दीगई हैं।

जो लोग व्यास को ही सब पुराणों का कर्त्ता मानते हैं उनको आंख खोलकर विष्णुपुराण पढ़ना चाहिये जिस के आरम्भ में ही लिखा है. कि हे मैत्रेय! जब मैंने अपने दादा वशिष्ठ के कहने से राक्षसों को नाश करने वाला यज्ञ बन्द किया तब उन्होंने प्रसन्न हो के मुझे यह वर दिया।

पुराणसंहिताकर्त्ता भवान् वत्स भविष्यति।
देवतापरमार्थं च यथावद्वेत्स्यतेभवान्॥

अर्थात् तुम पुराण संहिता के बनाने वाले और ब्रह्मज्ञान के यथावत् जानने वाले होगे। विष्णुपुराण के इस श्लोक और उपाख्यान से स्पष्ट सिद्ध होता है कि पुराण भी अपने को व्यास का बनाया सिद्ध नहीं कर सक्ते हैं मार्कण्डेयपुराण में तो व्यास और सूत की कथाका कुछ सम्बन्ध ही नहीं रखा है अस्तु यह तो सब पुराणों की ही बात है।

अब हम विद्वानों की सम्मति और प्रमाणों से यह सिद्ध करना चाहते हैं कि पुराण ग्रन्थ न एक समय के बने हैं और न किसी एक मनुष्य के बनाये हैं।

भागवतादि पुराणों में भी राधा का नाम नहीं लिखा है परन्तु ब्रह्मवैवर्त्त में लिखा है कि

राधा शब्दस्यव्युत्पत्तिः सामवेदे प्रकीर्त्तिता

(राधा शब्द की व्युत्पत्ति सामवेद में लिखी है)

इस के अतिरिक्त ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के प्रकृतिखंड ५१ अध्याय ३. लिखा है।

आदौराधांसमुच्चार्यपश्चात् कृष्णं चमाधवम्
प्रवदन्तीतिवेदेषु वेदविद्भिः पुरातनैः।
विपरीतं येवदन्ति निन्दन्ति च जगत्प्रसूम्
ते पच्यन्ते कालसूत्रेयावदिन्दुदिवाकरौ
भवन्ति स्त्रीपुत्रहीनाः रोगिणः सप्तजन्मसु।

प्रथम तो यह श्लोक ही अशुद्ध है द्वितीय राधा और कृष्ण का एकत्र नाम लिखा रहने से स्वयम् सिद्ध होता है कि राधाबल्लभीय सम्प्रदाय के चलाने वाले हरिवंश नामक वैष्णव ने इस पुराण की रचना करके वा करवा के १६४१ विक्रमाब्द में इस का प्रचार किया एक महाशय की यह भी सम्मति है कि इन्हीं हरिवंश जी ने हरिवंश का भी प्रचार किया।

पण्डितवर वराहमिहर० ने अपने समय के प्रचलित और मान्य पुस्तकों की जो सूची लिखी है उस में भी पुराण ग्रन्थों के नाम लिखे नहीं हैं।

पण्डित वराहमिहर ने जो मथुरापुरी का वर्णन किया है उस में लिखा है कि मथुरापुरी में बौद्धों के बड़े बड़े २० मन्दिर और २००० बौद्ध धर्मोपदेशक हैं इन के अतिरिक्त चीन के प्रसिद्ध यात्री फाहिङ्ग ने ख्रीष्टाब्द की ५ वीं शतब्दी में जो भारत की यात्रा की थी उसबार के यात्रा पुस्तक में उस ने लिखा है कि मथुरापुरी बौद्ध मन्दिरों से परिपूर्ण होरही है।

अब पाठकों को यह परिज्ञान हो सकता है कि जिन पुराणों में मथुरापुरी को विष्णु के मन्दिरों से परिपूर्ण लिखा है वह सब पुराण ख्रीष्टाब्द की पांचवीं शताब्दी के पश्चात् बनाये गये हैं।

इस बात को सम्पूर्ण इतिहासवेत्ता स्वीकार करते हैं कि महाराज बुद्ध देव ने (जिनका नाम शाक्य मुनि भी है) महाराज शुद्धोदन की पत्नी मायादेवी के गर्भ से कपिल वस्तु नामक नगर में जन्म ग्रहण किया था, इन के जन्म का समय ईसामसीह के जन्म से ५०० वर्ष पूर्व निर्णीत हुआ है, जिन ग्रन्थों में बुद्धदेव का नाम है वह

०यह भारत के अन्तिम इतिहास प्रणेता हुए हैं और इन के राजतरंगिनी तथा ऋषितरंगिनी आदि प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ बनाये हुये हैं।

अवश्य ही बुद्धदेव के पश्चात् बने होंगे पद्मपुराण से निकले हुये गया माहात्म्य में लिखा है कि-

धर्म्मं धर्म्मेश्वरं नत्वा महाबोधितरुं नमेत्।

महाराज शाक्यमुनि की मृत्यु के पश्चात् बुद्ध गया को बौद्धों ने तीर्थ माना था इस से अनुमान होता है कि बुद्धदेव की मृत्यु के पश्चात् पद्मपुराण बना है !

जिस पौण्ड्रक वासुदेव की कथा भागवतादि अनेक पुराणग्रन्थों में लिखी है उस के सिक्के जो दक्षिण देश में एक भूमि खण्ड को खोदने से निकले थे उन पर लिखे वर्षों की संख्या को जोड़ने से यह सिद्ध हो चुका है कि पौण्ड्रक वासुदेव खीष्टाब्द की दूसरी शताब्दी में मौजूद था इस से सिद्ध होता है कि जिन पुराणों में उन की कथा है वह सब खीष्टाब्द की दूसरी शताब्दी के पश्चात् बने हैं

ब्रह्मवैवर्त्तादि की भविष्यत वाणियों के पढ़ने से जाना जाता है कि वह ग्रन्थ मुसलमानों के भारताक्रमण के पश्चात् बने हैं क्योंकि उन में यह लिखा है कि कांची और काश्मीर मण्डल का राज्य यवन भोग करेंगे ॥

गान्धारं सिन्धुसौवीर कांचीकाश्मीरमण्डलम्।
भोक्ष्यन्ति निन्द्यकृतयः यवनाः कलिदूषिताः।

अर्थात् यवन लोग कन्दार, सिन्ध, कांची और काश्मीर में राज्य करेंगे इस से साफ मालूम होता है कि जब मुसलमानी राज्य उक्त देशों में हो गया था तब

ब्रह्मवैवर्त पुराण बना था, यदि यह भविष्यत् वाणी होती तो समस्त भारतखण्ड को ही लिखते कि यवनों के आधीन हो जायगा अस्तु—

इत्यादि अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि बौद्ध राजों के पश्चात् और यवनों के समय में पुराणोंकी रचना हुई अब यह भी विचारना चाहिये कि पुराण ग्रन्थों की रचना किसी एक मनुष्य ने की वा अनेकों ने इन को रचा।

पुराण पुस्तकों को पढ़ने से यही सिद्ध होता है कि इन सब पुस्तकों का बनाने वाला कोई एक मनुष्य नहीं था, क्योंकि कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं होसकता है जो अपने वचनों का स्वयम् खण्डन करदे वा अपने एक लेख के प्रतिकूल दूसरा लेख लिख।

यदि भागवत और विष्णु पुराण एक ही मनुष्य के बनाये होते तो यह परस्पर भेद न होता कि एक जगह कृष्ण को साक्षात् ईश्वर और दूसरी जगह नारायण के बाल का अंश कहा जाता भागवत के १० स्कन्ध अध्याय ३३ में लिखा है।

संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च।
अवतीर्णो हि भगवान् अंशेनजगदीश्वरः॥

अथवा

एतेषांशकला पुंसः कृष्णस्तु भगवान्स्वयम्।

अर्थात् धर्म के स्थापन और अधर्म के नाश करने

को भगवान् ने अंश से स्वयम् अवतार धारण किया अथवा और सब अवतार भगवान् के अंश वा कला हैं और कृष्ण साक्षात् भगवान् हैं परन्तु इस के विरुद्ध विष्णु पुराण में लिखा है।

एवंसंस्तूयमानस्तु भगवान् परमेश्वरः।
उज्जहारात्मनः केशौ सितकृष्णौमहामुने॥
उवाचचसुरानेतौ मत्केशौ वसुधातले।
अवतीर्य्यभुवोभारंक्लेशहानिंकरिष्यतः॥
वसुदेवस्ययापत्नी देवकीदेवतोपमा।
तस्यायमष्टमोगर्भो मत्केशोभवितासुराः॥
अवतीर्य्य च तत्रायं कंसंघातयिताभुवि।
कालनेमिसमुद्भूतमित्युक्त्वान्तर्दधेहरिः॥

वि० पु० ५–१।

अर्थात् देवतों ने जब नारायण की स्तुती करी तब उस को सुन के परमेश्वर ने अपने दो बाल उखाड़ेऔर देवतों से कहा कि मेरे यह काला और सफेद दो बाल पृथ्वी में जन्म लेकर भूमि के भार को उतारेंगे देवता के समान जो वसुदेव की स्त्री देवकी है उस के आठवें गर्भ से मेरा यह केश उत्पन्न होके कालनेमि से उत्पन्न हुए कंस को मारेगा ऐसा कह के भगवान् गुप्त हो गये। विचारने का स्थल है कि जो ग्रन्थकार कृष्ण को

साक्षात् परमेश्वर कहेगा वही कृष्ण को बाल क्यों बतलावेगा

पुराणों की रचना से जान पड़ता है कि आधुनिक सम्प्रदाय वालों ने अपने अपने इष्टदेव को सर्वाग्रगण्य सिद्ध करने के निमित्त ही जुदे २ पुराण बनाये हैं क्योंकि वैष्णवों के पुराणों में शिव को परम तुच्छ और उन की भक्ति करने को पाप लिखा है ऐसे ही शैवों के पुराणों में विष्णु को तुच्छ और उनकी भक्ति को पाप लिखा है यथा

पद्मपुराण के उत्तर खण्ड के ७८ अध्याय में लिखा है

मोहाद्यःपूजयेदन्यम् सपाखण्डीभविष्यति ।
इतरेषान्तुदेवानाम् निर्माल्यं गर्हितम्भवेत्
सकृदेवहियोऽश्नाति ब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः ।
निर्माल्यंशंकरादीनाम्सचांडालोभवेद्ध्रुवम्
कल्पकोटिसहस्राणि पच्यतेनरकाग्निना ॥

जो मनुष्य मोहवश विष्णु को त्यागकर दूसरे देवता को पूजता है वह पाखण्डी होता है ।

विष्णु के सिवाय और देवतों पर चढ़ा हुआ पदार्थ जो ब्राह्मण एक वार भी खाता है वह अवश्य चाण्डाल होता है और कल्प तक नरक की आग में शिव के अतिरिक्त और देवतों के भक्तों की भी बुराई लिखी है ॥

सौरस्य गाणपत्यस्य शैवादेर्भरिमानिनः ।
शाक्तस्यवैष्णवोवारि हस्ते ह्यन्नम्परित्यजेत्

सङ्गं विवर्जयेच्छैवशाक्तादीनान्तु वैष्णवः
न कार्य्या प्रार्थना तेभ्यः तेषांद्रव्यममेध्यवत्

सूर्य्य के. गणेश के शिव के और देवी के भक्तों का छुआ अन्न और जल वैष्णव ग्रहण न करे, न उन के सङ्ग में रहे और न उनसे कुछ मांगे क्योंकि उनका धन विष्ठा के समान है। इस ही प्रकार से शिवपुराण में विष्णु के भक्तों की निन्दा है॥

तथान्यदेवताभक्तिर्ब्राह्मणस्यविगर्हिता
विदूरमतिविप्राणाञ्चाण्डालत्वंप्रयच्छति।
तस्यसर्वाणिनश्यन्ति पितरंनरकंनयेत्।

अर्थात शिव को छोड़ के दूसरे देवता की भक्ति करने से ब्राह्मण चाण्डाल हो जाता है और उस का पिता नरक में जाता है।

बस इन साम्प्रदायिक झगड़ों से सिद्ध होता है कि अनेक मनुष्यों ने इन पुराण नाम के पुस्तकों को रचा है यदि ऐसा न होता तो इन के नामों में झगड़ा न होता आजकल जो पुराणों में दो भागवत् प्रचलित हैं उन के मानने वालों में यह झगड़ा है कि वैष्णव लोग श्रीमद्भागवत को और शाक्तलोग देवीभागवत को महापुराण मानते हैं, अपने अपने मुख से सियां मिठ्ठू बनने के अ-

तिरिक्त दोनों वादी अन्य पुराणों के प्रमाण भी अपने पक्ष की पुष्टि में देते हैं।

यथा पद्मपुराण में लिखा है:-

शैवमादि पुराणंच देवीभागवतंतथा।

इस के अतिरिक्त और भी लिखा है।

भगवत्याःकालिकायास्तु माहात्म्यं यत्रवर्ण्यते
नानादैत्यवधोपेतं तद्वै भागवतंविदुः।
कलौकेचिद्धरात्मानो धूर्तावैष्णवमानिनः
अन्यद्भागवतंनाम कल्पयिष्यन्ति मानवाः

भगवती कालिका का जिस में माहात्म्य लिखा हो वह भागवत है, कलियुग में बहुत से धूर्त जो अपने को वैष्णव मानते हैं दूसरी भागवत बनावेंगे, यदि पुराण एक ही मनुष्य के बनाये होते तो एक पुराण में दूसरे पुराण बनाने वाले को गाली क्यों लिखी होती।

उपरोक्त प्रमाण और लेखों से भली भांति सिद्ध हो गया कि मुसलमानी राज्य के आरम्भ में भिन्न भिन्न सम्प्रदायवालों ने पुराणों को बनाया है।

पुराणों में जैसी निन्दनीय रीति से सृष्टि और प्रलय का वर्णन लिखा है उसको इस ही पुस्तक के किसी अन्य भाग में दिखलाया जायगा परन्तु इस स्थान पर केवल इतना प्रकाशित करना आवश्यक है कि पुराणों में कैसी

मिथ्या कथाओं की भर्ती की गई हैं।

मार्कण्डेय पुराण जो भारत भर में प्रसिद्ध है उसका आरम्भ ही ऐसी कथा से भरा है जिस को सुन के पाठक लोग अवश्य हंसेंगे उस में लिखा है——

तपःस्वाध्यायनिरतम् मार्कण्डेयंमहामुनिम्
व्यासशिष्योमहातेजा जैमिनिः पर्य्यपृच्छत
कस्मान्मानुषतांप्राप्तो निर्गुणोपिजनार्दनः
वासुदेवोजगत्सूतिः स्थितिसंहारकारणम्
कस्माच्चपाण्डुपुत्राणामेका द्रुपदात्मजा
पंचानामहिषीकृष्णा ह्यत्रनःसंशयोमहान् ॥
एतत्सर्वं विस्तरशोममाख्यातुमिहार्हसि ।

अर्थात् तप और वेदाध्ययन में तत्पर रहने वाले महामुनि मार्कण्डेय से व्यास के शिष्य महातेजस्वी जैमिनि ने पूछा हे महामुने! निर्गुण विष्णु ने किस कारण से मनुष्यरूप धारण किया जो सब जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय करने वाले हैं वह वसुदेव के पुत्र क्यों बने? पांच पाण्डवों की एक ही द्रुपदपुत्री (द्रौपदी) पटरानी क्यों बनी थी? इत्यादि मेरे संशयों को आप दूर करने योग्य हैं।

जैमिनि के इन प्रश्नों को सुन के देखिये क्या मजेदार जवाब दिया है उन्हों ने यथाः—मार्कण्डेय उवाच

क्रियाकालोयमस्माकं संप्राप्तोमुनिसत्तम ! विस्तरेचापिवक्तव्ये नैषकालःप्रशस्यते। ये तुवक्ष्यन्तिवक्ष्येद्य तानहंजैमिनेतव तथा-चनप्रसन्देहं त्वांकरिष्यन्तिपक्षिणः।

महामुनि मार्कण्डेय ने कहा कि यह समय हमारे नित्य कर्म्म का है और आप के उत्तर में बहुत कहना पड़ेगा इस कारण तुम पक्षियों के पास चले जाओ वह तुम्हारे सन्देहों को दूर करेंगे। द्रोणनामक पक्षी के चार पुत्र जिनमें से एक का नाम पिङ्गाक्ष, दूसरे का नाम विबोध, तीसरे का नाम सुपुत्र और चौथे का नाम सुमुख है वह सब वेद और शास्त्र केजानने वालेऔर महाज्ञानी हैं

मार्कण्डेय के मुख से चिड़िया खाने के अद्भुत पक्षियों की बात को सुन के महर्षि जैमिनि बड़े घबड़ाये और पूछने लगे कि महाराज ! उन पक्षियों को ऐसा ज्ञान क्योंकर हुआ जो ज्ञान देवतों को भी होना दुर्लभ है द्रोणनामक पक्षी कौन था जिसके ऐसे ज्ञानी पुत्रहुए ?

जैमिनि के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये महर्षि मार्कण्डेय को पूरेतीन अध्याय जिन में २०२ श्लोक हैं कहने पड़े और इन में इन्द्र के अखाड़े में नारद का जाना एवम् वहां अप्सराओं का नाच देखना अप्सराओं का परस्पर झगड़ा करना उस झगड़े को मिटाने के वास्ते

दुर्वासा ऋषि को काममोहित करने की परीक्षा को नियत करना, फिर दुर्वासा को अप्सरा को पक्षिणी बनने के निमित्त शाप देना इस के पश्चात् गरुड़ के वंश का वर्णन गरुड़ के पुत्रों से और एक राक्षस से घोर युद्ध का होना फिर उन ४ पक्षियों के पूर्वजन्म का वर्णन लिखा है कहिये तो इतने जटल काफिये कहने की तो हजरत को छुट्टी थी और इन के वास्ते काफी वक्त भी मिलगया मगर जैमिनि मुनि के असल प्रश्नों का उत्तर देने का वक्त न मिला वाह ? जो लाल बुजक्कड़ जी खूब पुराण बनाया

मार्कण्डेय पुराण में जितनी कथा हैं वह सब उन हीं ४ पक्षियों की कही हुई हैं जिन का वर्णन पूर्व लिख चुके हैं इस से इस पुराण को चिड़ियाखाने का पुराण कहना चाहिये इस ही प्रकार के पुराणों में जटल काफियेभरे हैं जिन को कोई भी बुद्धिमान् नहीं मान सक्ता है।

देवीभागवत में लिखा है कि एक दैत्य ने तपस्या करके शिव महाराज से ऐसे पुत्र का वर पाया जो ब्रह्मादिक से न मारागाय और न कोई मनुष्य उस को जीत सके परन्तु जब वह वर पाके घर को लौटा आता था और मन में विचार रहा था किसी सुन्दरी स्त्री से विवाह करके अजेय पुत्र उत्पन्न करूंगा इतने में उस ने देखा कि एक भैंसा भैंस को रगेदे फिरताहै दैत्यने बिना समझे भैंसे को मारडाला तब भैंस ने कहा फिरे मूर्ख ! मैं वा-

मारती हूं और तैंने मेरे भैंसे को मारडाला या तो तू मेरे साथ रति कर नहीं तो मैं तुझे शाप दूंगी भैंस के शापके डरके उस दैत्य को भैंस से रति करनी पड़ी शिव महाराज ने दैत्य को वर देते समय यह भी कहा था कि जिस स्त्री से प्रथम तुम रति करोगे उस के ही गर्भ से अजेय पुत्र उत्पन्न होगा बस उस ही भैंस से महिषासुर की उत्पत्ति हुई।

इस किस्से ने तो फसाने अजायब और अलिफलैला के किस्से को भी मात करदिया।

पुराण ग्रन्थ मुसलमानों के समय में बनाये गये हैं इस में एक प्रमाण यह भी है कि देवीभागवत के स्कन्ध ९ अध्याय ८ में लिखा है कि कलियुग में सब लोग यवन होजायंगे, यह भविष्यत्वाणी होती तो अंगरेज़ों का नाम क्यों न होता, यवनों का नाम लिखे रहने से स्पष्ट सिद्ध होता है कि मुसलमानों ने जब भारत पर आक्रमण किया उसके पश्चात् देवीभागवत कीरचना हुई।

इस के अतिरिक्त इस देश के प्रचीन पुस्तकों के देखने से और अरब के पुराने इतिहासों के विचारने से यह सिद्ध होता है कि आर्य्यावर्त्त देश में नरबलि (अर्थात् किसी देवता के निमित्त आदमी की कुर्बानी करना) की रीति प्रचलित नहीं थी जब नरबली करने वाले मुसलमानों का इस देश में आवागमन होने लगा तब इसदेश के निवासी भी यवनों की रीतियों को ग्रहण करने लगे

देवीभागवत के सप्तम स्कन्ध में एक नरवली की अद्भुत कथा लिखी है ।

देवीभागवत के स्कन्ध ७के १६ अध्याय से इस कथा का आरम्भ हुआ है । लिखा है कि सूर्य्यवंशी महाराज हरिश्चन्द्र ने पुत्रप्राप्ति के निमित्त महाराज वरुण की तपस्या की तप से प्रसन्न होके वरुण देवता प्रकट हुए और राजा हरिश्चन्द्र से कहा कि यदि तुम मेरे निमित्त यज्ञ करो और उस यज्ञ में अपने पुत्र का वलिदान करो तो मैं तुमको पुत्र दूं महाराज हरिश्चन्द्र ने इस बात को स्वीकार किया तब उन की स्त्री के रोहिताश्व नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । राजा को इस पुत्र का इतना मोह बढ़ा कि १२ वर्ष तक पुत्र का वलिदान न किया राजा हरिश्चन्द्र ने अनेक वार प्रतिज्ञा करके भी अपने पुत्र का वलिदान न किया तब वरुण देवता ने क्रोध करके शाप दिया कि तूने मेरे साथ छल किया इस से तुझे जलोदर का रोग होगा, राजकुमार रोहिताश्व पिता की प्रतिज्ञा को सुन के प्रथम ही वन को चला गया था किन्तु पिता को रोग पीड़ित सुनके फिर घर चला आया, तव राजा ने यज्ञ करने का विचार किया परन्तु पुत्र के मोह से राजा वलि देने में हिचकते थे इस कारण उन्हों ने महर्षिवशिष्ठ से प्रश्न किया कि महाराज किस उपाय से मेरा यज्ञ पूरा हो वशिष्ठ ने कहा कि मोल लियाहुआ वालक

आठ प्रकार के पुत्रों में से एक होता है इस कारण तुम किसी ब्राह्मण के पुत्र को मोल लेके उस का बली करो, राजा ने वैसा ही किया अर्थात् अजीगर्त्त नामक ब्राह्मण के मझले पुत्र को मोल लेके बलि देने को उद्यत हुआ परन्तु विश्वामित्र ने यज्ञ में पहुंच के उसे वरुण देवता का मंत्र बतलाया और उस के जपने से वरुण देवता ने प्रकट होके शुनः शेप की रक्षा की।

यह कथा ठीक उस कहानी की नक़ल है जो मुहम्मद इस्माईल साहिब के पिता मोहम्मद इबराहीम के विषय में सुनी जाती है।

पुराणों की कथाओं को आद्योपान्त विचारने से यही सिद्ध होता है कि यह सब पुस्तक मुसलमानों के समय में बनाये गये हैं।

यह भी अनेक लोगों को विदित नहीं है कि पुराण वाले "ईसामसीह" के समान विना पितृसंयोग के बल राम की उत्पत्ति मानते हैं हम नहीं जानते कि बलदेव की उत्पत्ति की कथा बायबिल को देख के गढ़ी गई है वा बायबिल के बनाने वाले ने भागवत को देख के ईसामसीह के जन्म की असम्भव कहानी बनाई है, जोहो परन्तु इस में सन्देह नहीं है कि इस असम्भव कहानी का कुछ भी सिर पैर नहीं है, इस बात को कौनसा मनुष्य स्वीकार कर सकता है कि एक स्त्री का गर्भ (गर्भस्थमासपिण्ड) दूसरी स्त्री के गर्भ में चला गया।

भागवत के दशम स्कन्ध अ० २ में लिखा है।

हतेषु षट्सु बालेषु देवक्या श्वौग्रसेनिना ४
सप्तमो वैष्णवं धाम यमनन्तं प्रचक्षते
गर्भोबभूव देवक्या हर्षशोकविवर्द्धनः ५
भगवानपि विश्वात्मा विदित्वा कंसजंभयम्
यदूनांनिजनाथानाम् योगमायांसमादिशत् ६
गच्छ देवि व्रजं भद्रे गोपगोभिरलंकृतम्
रोहिणी वसुदेवस्य भार्य्यास्ते नन्दगोकुले ७
अन्याश्च कंससंविग्ना विवरेषु वसन्तिहि
देवक्या जठरे गर्भं शेषाख्यंधाममामकम् ८
तत्संनिकृष्य रोहिण्या जठरे संनिवेशय
गर्भसंकर्षणात्तं वै प्राहुः संकर्षणम्भुवि
रामेति लोकरमणात् बलं बलवदुच्छ्रयात् १०
सन्दिष्टैवं भगवता तथेत्योमितितद्वचः
प्रतिगृह्य परिक्रम्य गां गतातत्तथाकरोत् १४
गर्भे प्रणीते देवक्या रोहिणीं योगनिद्रया
अहो विस्रंसितो गर्भ इति पौरा विचुक्रुशुः १५

इन श्लोकों का तात्पर्य यह है, कि उग्रसेन के पुत्र कंस ने जब देवकी के ६ पुत्र मार डाले तब विष्णु का

शयन स्थान जिस को अनन्त (शेषनाग) कहते हैं वह सातवें गर्भ में आया, देवकी का वह सातवां गर्भ हर्ष और शोक का बढ़ाने वाला हुआ, तब जगत्व्यापक भगवान् (विष्णु) ने अपने दास यदुवंशियों को कंस के डर से व्याकुल देख के योगमाया (देवी) को आज्ञा दी है देवि ! तुम ग्वाले और गौओं से भरे हुए ब्रज में जाओ गोकुल में वसुदेव की स्त्री रोहिणी रहती है, उसके उदर में मेरे निवासस्थान शेष को देवकी के उदर से निकालके पहुंचादो (वा स्थापन करदो)

* * गर्भ अवस्था में जो वह खींच कर दूसरे गर्भ में पहुंचाये गये इस से उन का नाम संकर्षण, लोक में रमण करने से राम और अत्यन्त बलवान् होने से बल जगत् में प्रसिद्ध होगा । योगमाया (देवी) भगवत से ऐसी आज्ञा पाकर और उसे स्वीकार करके पृथ्वी में गई और वैसे ही कार्य्य किया । योगमाया ने जब देवकी के उदर से गर्भ को निकाल के रोहणी के उदर में पहुंचा दिया तब शहर के रहने वालों ने ओः गर्भपात हो गया ऐसा कह के शोक किया ।

अब इस में प्रश्न यह है कि प्रत्येक स्त्री का गर्भाशय नसों से ऐसा जकड़ा रहता है कि उस के निकल जाने से कोई स्त्री नहीं बच सक्ती है, यदि गर्भाशय को छोड़ कर योगमाया ने देवकीके गर्भ को रोहिणी के गर्भ में पहुंचाया तो उस का पुनः संस्थापन क्यों कर हुआ

यदि गर्भाशय के सहित पहुंचाया तो देवकी क्योंकर जीवित रही, यह पौराणिकों की लीला ईसाइयों की लीला से किसी अंश में कम नहीं है ॥

अब एक और अद्भुत कथा सुनिये बलराम की स्त्री रेवती न मालूम कितने करोड़ वर्षों की थी, लिखते हंसी आती है कि जब बलदेव के पड़दादा का भी जन्म नहीं था तब रेवती ब्रह्मा की सभा में बैठी हुई गन्धर्वों के गीत सुन रही थी ।

श्री मद्भागवत के नवमस्कन्ध अ० ३ में यह अद्भुत कथा लिखी है ॥

उत्तानबर्हिरानर्तो भूरिषेण इति त्रयः
शर्यातेरभवन्पुत्रा आनर्ताद्रेवतोभवत् २७
सोन्तः समुद्रे नगरीम् विनिर्मायकुशस्थलीम्
आस्थितो भुंक्तविषयानानर्तादीनरिंदम २८
तस्य पुत्रशतं जज्ञे ककुद्मिज्येष्ठमुत्तमम्
ककुद्मी रेवती कन्यां स्वामादायविभुं गतः २९
पुत्र्या वरं परिप्रष्टुं ब्रह्मलोकमपावृतम्
आवर्त्तमानेगान्धर्वे स्थितोलब्धक्षणः क्षणम् ३०
तदन्त आद्यमानम्य स्वाभिप्रायंन्यवेदयत्
तच्छ्रुत्वा भगवान्ब्रह्मा प्रहस्य तमुवाच ह ३१

गुरु वि... सन्दर्भ पु...
परिग्रहण क्रमांक 2101 ...
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

अहो राजन्निरुद्धास्ते कालेन हृदयेच्छताः
तत्पुत्रपौत्रनप्तॄणां गोत्राणिचनशृणमहे ३२
कालोभियातस्त्रिणवचतुर्युगविकल्पितः
तद्गच्छदेव देवांशो नरदेवो महाबलः ३३
कन्यारत्नमिदं राजन् नररत्नायदेहिभो
भुवो भारावताराय भगवान् भूतभावनः ३४
अवतीर्णो निजांशेन पुण्यश्रवणकीर्त्तनः
इत्यादिष्टोभिवाद्याजं नृपः स्वपुरमागतः ३५
त्यक्तं पुण्यजनत्रासात् भ्रातृभिर्दिक्षुवस्थितैः
सुतां दत्वा नवद्यांगी बलाय बलशालिने
वदर्य्याख्यंतपोराजा तप्तं,नारायणाश्रमम् ३६

इन सब श्लोकों का अभिप्राय यह है कि राजा शर्य्याति के उत्तानवर्हि, आनर्त्त और भूरिषेण यह तीन पुत्र उत्पन्न हुए। आनर्त्त का पुत्र रेवत हुआ जिस ने समुद्र के बीच में कुशस्थली नगरी बसाई और आनर्त्त आदि देशों का राज्य भोगा। राजा आनर्त्त के १०० पुत्र हुये इन में ककुद्मी सब से बड़ा था राजा ककुद्मी अपनी पुत्री रेवती को साथ लेके आदिदेव ब्रह्मा के पास गया, ब्रह्मा की सभा में उस समय गन्धर्व गान कर रहे थे इस कारण राजा ककुद्मी क्षणमात्र (मौका पाने के

चाहते) दुख रहे जब गन्धर्व गा चुके तब राजा ककुद्मी ने ब्रह्मा से अपना अभिप्राय कहा (पूछा कि इस कन्या के योग्य वर बतलाइये) ब्रह्मा ने हंस कर कहा कि राजन् ! तुम ने जिन राजपुत्रों के साथ अपने हृदय में इस कन्या का विवाह करना विचारा था उन के पुत्र पौत्र और नातियों का तो क्या उन के गोत्रों का भी अब चिन्ह नहीं रहा है, जितनी देर तुम यहां खड़े प्रतीक्षा करते रहे उतने काल में चारों युग २७ वार व्यतीत हो चुके अब संसार में पृथिवी का भार उतारने को स्वयम् भगवान् ने अवतार लिया है तुम उन्हीं नर रत्न बलराम से इस कन्यारत्न का विवाह करदो ब्रह्मा की इस आज्ञा को सुन के राजा ककुद्मी अपने नगर में आये और अपने नगर को गन्धर्वों के भय से तथा स्वजन शून्य जान के त्याग दिया और बलराम के साथ रेवती का विवाह करके आप बदरिकाश्रम में तप करने को चला गया।

पाठक ! विचारिये तो कि मुसलमानों के बहिश्तमें जो हूरें रहती हैं उन को बुढ़ापे का दुःख नहीं होता परन्तु वह बहिश्त से ज़मीन पर नहीं आती हैं और न बहिश्त में गये आदमी यहां फिर कर आते हैं किन्तु पुराणवालों के वहिश्त (ब्रह्मलोक) से राजा ककुद्मी अपने कन्या के सहित लौट आये और रेवती को वृद्धावस्था न आई खैर यह भी सही

परन्तु उस विवाह में ज्योतिषियों ने गोत्रादि का मिलान क्योंकर किया था ? और बलराम से युगों बड़ी रेवती का विवाह कैसे काशीनाथ को शीघ्रबोध से शुद्ध हुआ ? क्या कोई पौराणिक पण्डित कह सक्ता है कि यह विवाह जन्मकुण्डली के मिलान से हुआ था ? क्या २७ चौकड़ी युग बीत जाने पर भी सब ग्रहों की चाल ज्यों की त्यों बनी रही थी ? यदि नहीं तो भारतधर्म महामण्डल रेवती और बलराम के विवाह को धर्मविवाह कह सकता है ? सत्य तोयह है कि ऐसे ही जटलकाफियों से भागवतादि पुराण परिपूर्ण हैं और उन को ही मूर्ख लोग अपना धर्म पुस्तक मान रहे हैं ॥

गणेशदेव की और कार्त्तिकेय की अद्भुत उत्पत्ति को सुन के किसे हंसी नहीं आती है । शिवपुराण में लिखा है; कि एक वार श्रीपवतनन्दिनी अपने परम प्यारे पति से रुष्ट हो गईं और कैलाश से पृथक् स्थान में जा रहीं इधर भोलानाथ महादेव को पार्वती जी के विरह में असह्य वेदना होने लगी, तब महादेव ने अपने भृङ्गी भृङ्गी आदि गणों को श्री पार्वती जी के ढूढ़ने को भेजा महादेव के गणों ने पार्वती जी का खोज लगा के श्री शंकर महाराज को सूचना दी और भोलानाथ स्वयं डुण्डे बैल पर सवार होकर गिरिनन्दिनी के आश्रम पर आये इधर पार्वती ने स्नान करने की इच्छा की और अपने

शरीर का मैल उतार के उस से एक पुतला बनाया पश्चात् पुतले में जीव डाल के अपने आश्रम के द्वार पर बैठा दिया और उसे समझा दिया कि मैं जब तक स्नान न कर चुकूं तब तक कोई भी पुरुष आश्रम के भीतर न आने पावे वह पुतला पार्वती जी के आदेशानुसार द्वार की रक्षा कर रहा था कि इस ही अवसर में श्री महादेव जी ने अपने दल बल के सहित आके आश्रम में प्रवेश करना चाहा परन्तु उक्त पुतले ने महादेव को रोका इस ही कारण दोनों में घोर युद्ध होने लगा, उस युद्ध में महादेव ने उक्त पुतले का सिर काट डाला, इस समाचार को सुन के पार्वती जी अत्यन्त व्याकुल हुईं और रोकर महादेव से कहा कि यदि आप इस पुतले को न जिलावेंगे तो मैं भी मर जाऊंगी, तब तो महादेव जी बड़े घबड़ाये और कहने लगे कि प्रिये! इस पुतले का सिर कट गया और उसे देवतों ने ले जाके चन्द्रलोक में रक्खा है, इस कारण इस का पुनः जीवित होना कठिन है, पार्वती जी ने फिर वही कहा कि यदि यह पुतला न जीवेगा तो मैं भी मर जाऊंगी। लाचार हो के महादेव ने अपने दूतों को आज्ञा दी कि किसी बालक का सिर काट लाओ। रात्री के समय एक हथिनी अपने बच्चे की ओर से पीठ फेरे सोती थी बस महादेव के दूत उस ही बच्चे का सिर काट कर लेआये, श्री भोला-

नाथ महादेव जी ने उस ही सिर को उक्त पुतले के धड़ पर रख दिया, तब से उस ही पुतले का नाम गणेश रक्खा गया। पुराणों में जहां महादेव जी के विवाह का वर्णन लिखा है वहां स्पष्ट यह लिखा हुआ है कि प्रथम गणेश की पूजा होके पीछे वैवाहिक कार्य किये गये। अब कहिये कि जिस पुतले को पार्वती जी ने अपने शरीर के मैल से बनाया था वह महादेव जी के विवाह में सब से पहिले पूजा गया और समस्त ब्रह्मादि देवता उस ही की पूजा करते हैं।

अब कार्त्तिकेय की उत्पत्ति सुनिये। एक वार तारकासुर ने देवतों को अत्यन्त दुःख दिया इस कारण देवतों ने ब्रह्मा से प्रार्थना की कि हे ब्रह्मन्! इस दैत्य के मारने का शीघ्र उपाय कीजिये, ब्रह्मा ने विष्णु की स्तुति की उस को सुन के आकाश वाणी हुई, जिस का अभिप्राय यह था कि यदि शिव के वीर्य्य से पुत्र की उत्पत्ति हो तो वही इस असुर का वध करेगा तब सब देवतों ने कामदेव से प्रार्थना की और ब्रह्मा ने पार्वती जी को महादेव जी के पास पहुंचाया कि "गणेशंकुर्वाणोवानरंचकार" वा "ओदनंभुंजानोविषंभुंक्ते" इन कहावतों के अनुसार देवतों की कार्यसिद्धि तो न हुई वरन कामदेव को ही शिव ने भस्म कर दिया फिर अनायास ही एक वार महादेव का वीर्यपात हुआ और वह अग्नि में गिरा उस से ही जङ्गल में कार्त्तिकेय का जन्म हुआ, उस

अत्यन्त रूपवाले कुमार को देख के एक राजा की कन्या (जो जंगल में अपनी ५ सखियों के सहित घूमने आई थी) ने इच्छा की कि यह बालक मेरा पुत्र हो और उस की प्रत्येक सखी ने यही चाहा कि यह बालक मेरा पुत्र हो, कार्त्तिकेय ने उन की इच्छा को पूर्ण करने के निमित्त अपने ६ मुख बना के कहा कि मैं तुम ६ हों का पुत्र हूं तुम सब मुझे स्तनपान कराओ तब से ही कार्त्तिकेय का नाम षडानन हुआ ॥

कहिये तो क्या ही लालबुझक्कड़ीपन है कि प्रथम काम को भस्म करना और फिर अग्नि में वीर्य को गिराना उस पर भी तुर्रा यह कि वीर्य भस्म न हुआ उलटा पुत्र उत्पन्न होगया, क्या किसी प्रत्यक्षादि प्रमाण से और वेद से लालबुझक्कड़ों के उपदेशक इस कथा को सच्ची सिद्ध कर सकते हैं ?

इन से बढ़ कर एक कथा शिवपुराण में लिखी है यद्यपि वह कथा परम अश्लील है तो भी पुराणों में बराबर छपती है और कोई उस को नहीं रोकता है ।

शिवपुराण में लिखा है कि एक वार ब्रह्मा और विष्णु में अपने २ महत्व पर झगड़ा हुआ अर्थात् ब्रह्मा कहते थे कि हम सब से बड़े तथा पूज्य हैं और विष्णु कहते थे कि हम सब से प्रधान और पूज्य हैं, इस झगड़े का न्याय कराने को दोनों देवता शिवमहाराज के पास गये, शिव महाराज ने अपने उपस्थ को इतना बढ़ाया

कि यह आकाश और पाताल में पूर्ण हो गया, इस के अनन्तर शिव ने उक्त दोनों देवतों से कहा कि तुम में से जो इस का अन्त देख आवेगा वही जगत् में सब देवतों से बड़ा तथा पूज्य समझा जायगा, महादेव जी की आज्ञानुसार ब्रह्मा ऊपर और विष्णु नीचे को गये जब सैकड़ों वर्ष तक जाते २ भी उन को उपस्थ का अन्त न मिला तब विष्णु ने आकर सत्य कह दिया कि मुझे इस का अन्त न मिला परन्तु ब्रह्मा ने आकर झूंठ बोला कि मैं अन्त तक पहुंचा था देखो यह केतकी का फूल लिङ्ग के ऊपर रखा था ब्रह्मा की इस मिथ्या बात को सुन कर महादेव जी ने कहा कि विष्णु सच्चे और ब्रह्मा झूंठे हैं इस कारण जगत् में विष्णु की पूजा होगी और ब्रह्मा की नहीं होगी। शिवपुराण की इस ही कथा का सारांश महिम्नस्तोत्र में पुष्पदन्ताचार्य्य ने लिखा है अब वैष्णवों को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये क्योंकि शिवपुराण के अनुसार उन के विष्णु महादेव के उपस्थ का भी अन्त नहीं जानते फिर सर्वज्ञ क्योंकर हो सकते हैं।

देवीभागवत में विष्णु को घोड़े का अवतार धारण करनेवाला लिखा है परन्तु प्रायः पुराणों को माननेवाले इस हयग्रीव अवतार की कथा को नहीं जानते हैं देवीभागवत में लिखा है कि मधुकैटभ से लड़ कर (मार कर) जब विष्णु थक गये तब लक्ष्मी के विहार और शेष की शय्या को त्याग कर एक गिरिगुहा में जा के सोरहे

तब फिर एक देवदमनकारी दैत्य उत्पन्न हुआ और उस के मारने की चिन्ता ने देवताओं के चित्त को आ घेरा तब सब मिल के ब्रह्मा के पास गये, ब्रह्मा ने योगदृष्टि से देखा कि विष्णु एक कन्दरा में अपने धनुष के कोने को ठोड़ी में लगाये सोते हैं ब्रह्मा की आज्ञानुसार सब देवता उस ही गिरिगुहा में गये, जहां विष्णु सोते थे किन्तु किसी देवता में इतना साहस नहीं था कि विष्णु को जगाता तब चिन्ताग्रसित ब्रह्मा की भृकुटि से भृङ्गी नामक जन्तु उत्पन्न हुआ और कहने लगा कि आप लोग यज्ञ में मेरा एक भाग नियत करदें तो मैं विष्णु की निद्रा को भङ्ग कर दूं, बहुत विचार के अनन्तर सब देवताओं ने भृङ्गी की बात को स्वीकार किया तब भृङ्गी ने विष्णु के धनुष के प्रत्यञ्चा (रोदे) को काट दिया रोदे के कटते ही धनुषकोने के आघात से विष्णु का सिर उड़ गया तब तो सब देवता रोने और हाहाकार करने लगे देवताओं को व्याकुल देख के श्रीभगवती ने आकाशवाणी से कहा हे देववृन्द ! तुम शोक मत करो यह सब जगत् माया के आधीन है, विष्णु ने मेरी शक्ति लक्ष्मी जी का इन्द्रभवन में इस कारण उपहास किया था कि "देखो तुम्हारा भाई उच्चश्रवा घोड़ा है," बस लक्ष्मी के शाप से विष्णु का सिर उड़ गया है, तुम इन के कमन्ध पर किसी घोड़े का सिर काट कर रख दो तब यह जी-

वेंगे, देवताओं ने वैसा ही किया और उस घुड़मुहें विष्णु का नाम हयग्रीव रक्खा गया।

ऐसेही भविष्य पुराण में सूर्य्य के घोड़ाबन जाने की कथालिखी है, सूर्य्य कीअसल स्त्रीजब सूर्य्य के तेज को न सह सकी तब अपनी छाया को स्त्री बना के सूर्य्य के घर में रख दिया और आप घोड़ी बन के वन को चली गई, उस छाया से सूर्य्य के जब दो सन्तान हो चुकीं तब पूर्वसन्तानों में छाया के प्रेम को कम देख के सूर्य्य को सन्देह हुआ और वह अपनी असल स्त्री की खोज में प्रवृत्त हुए, अनुसन्धान से विदित हुआ कि सूर्य्य की असल स्त्री घोड़ीबन के वनमें रहती है, तब सूर्य्य भीघोड़ा बन के वन में पहुंचे और अपनी घोड़ी से अश्विनीकुमार नामक दो पुत्र उत्पन्न किये। भला इन पौराणिकों से कोई पूंछे कि जब सूर्य्य घोड़े के रूप में थे तब जगत् में किस का प्रकाश था? क्या कोई पौराणिक जी दांत वाये सूर्य्यमंडल में खड़े थे?

जगत् में यह ईश्वरीय नियम प्रचलित है कि स्त्री पुरुष नहीं बन सकती और पुरुष स्त्री नहीं बन सकता है परन्तु पुराणवालों ने इस ईश्वरीय नियम को भी उलट दिया है। श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध अध्याय १ में लिखा है कि सूर्य्यवंश के आदिपुरुष महाराज वैवस्वत मनु के जो इक्ष्वाकु आदि १० पुत्र प्रसिद्ध हैं। वैवस्वत मनु के यह दश पुत्र थे इक्ष्वाकु, नृग, शर्य्याति,

दिष्ट, धृष्ट, करूषक, नरिष्यन्त, पृषध्र, नभग, और कवि) उन की उत्पत्ति से पूर्व वैवस्वत मनु ने महर्षि वशिष्ठ से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया परन्तु उस यज्ञ के प्रताप से मनु की स्त्री के गर्भ से इला नाम की कन्या उत्पन्न हुई, कन्या को देख के मनु को बड़ा असन्तोष उत्पन्न हुआ और उन्हों ने वशिष्ठ से कहा ।

भगवन्! किमिदंजातं कर्म्मवोब्रह्मवादिनाम्
विपर्य्ययमहोकष्टम् मैवं स्याद्ब्रह्मविक्रिया १७
यूयंमंत्रविदोयुक्तास्तपसादग्धकिल्बिषाः
कुतःसङ्कल्पवैषम्यमनृतंविबुधेष्विव ॥ १८ ॥
तच्छ्रुत्यवचस्तस्य भगवान्प्रपितामहः ॥
होतुर्व्यतिक्रमंज्ञात्वा बभाषेनृपनन्दनम् १९
एतत्सङ्कल्पवैषम्यं होतुस्तेव्यभिचारतः ॥
तथापिसाधयिष्येते सुप्रजत्वंस्वतेजसा २०
एवंव्यवसितोराजन् भगवान्क्षमहायशाः ॥
अस्तौषीदादिपुरुषमिलायाःपुंस्त्वकाम्यया२१
तस्मैकामवरंतुष्टो भगवान्हरिरीश्वरः ॥
ददाविलाभवत्तेन सुद्युम्नःपुरुषर्षभः ॥२२॥

इन श्लोकों का अभिप्राय यह है कि वैवस्वत मनु के जब इला नाम की कन्या उत्पन्न हुई तब मनु ने महर्षि

वशिष्ठ से कहा कि यह उलटा कार्य क्यों हुआ ? अर्थात् मैंने जो पुत्र की प्राप्ति के वास्ते यज्ञ किया था उस से पुत्री उत्पन्न क्यों हुई ? आप सब लोग वेद (मन्त्र) वैदिक कर्म्म और ब्रह्म के जानने वाले हैं आप के यज्ञ से ऐसा उलटा फल होना उचित नहीं है क्योंकि ऐसा उलटा फल न होना चाहिये। वशिष्ठ महाराज ने उत्तर दिया कि होता (आहुति देने वाले) के उलटे संकल्प से यह उलटा फल हुआ है परन्तु मैं अपने तेज से तुम को सपुत्र बनाऊंगा ऐसा कहके वशिष्ठ ने विष्णु की स्तुति की उस से प्रसन्न हो के जो विष्णु ने वशिष्ठ को वर दिया उस ही वर के प्रताप से मनु की पुत्री इला पुरुष हो गई और उस का नाम सुद्युम्न रक्खा गया।

(इन महाराज सुद्युम्न की वही गति हुई जैसी एक चूहे की कथा हितोपदेश में लिखी है) यह बनावटी कथा है किसी नगर के समीप एक ऋषि रहा करते थे उन के आश्रम पर एक चुही का बच्चा फिरा करता था एक दिन चुही के बच्चे को खाने के निमित्त एक बिल्ली झपटी ऋषि ने दया करके चुही के बच्चे से कहा कि "त्वमपिमार्जारोभव" इतना कहते ही चुही का बच्चा बिलार बन गया किसी दिन उस बिलार पर कुत्ते ने हमला किया, ऋषि ने उसे बिलार से कुत्ता बना दिया, इस ही प्रकार से चुही के बच्चेको बढ़ाते बढ़ाते सिंहरूप में परिणत कर दिया चही का बच्चा जब सिंह

बन के निर्भय विचरने लगा तब वन के अन्य सिंह उस का यह कह के निरादर करने लगे कि रे तू तो वही चुही का बच्चा है जिसे ऋषि ने बिलार से बचाया था परन्तु हम लोग असली सिंहवंश के सिंह हैं तू हमारी बराबरी क्या करेगा" इस अपमान को कृत्रिमसिंह न सहसका और समझा कि जब तक यह ऋषि जियेगा तब तक मेरा ऐसे ही अनादर होता रहैगा इस से प्रथम ऋषि को मार डालना चाहिये यह विचार कर ज्योंहीं वह ऋषि की ओर चला त्योंहीं ऋषि ने उस के बुरे अभिप्राय को समझ के कह दिया "पुनर्मूषिकोभव" बस इतना कहते ही वह चूहा हो गया) एवं सुद्युम्नफिर भी स्त्री होगया।

स एकदा महाराज विचरन् मृगया वने
वृतः कतिपयामात्यैरश्वमारुह्य सैंधवम् २३
प्रगृह्य रुचिरं चापं शरांश्चपरमाद्भुतान्।
दंशितोनुमृगंवीरोजगाम दिशमुत्तराम् २४
स कुमारो वनं मेरोरधस्तात् प्रविवेश ह
यत्रास्तेभगवान् शर्वो रममाणःसहोमया २५
तस्मिन् प्रविष्ट एवासौ सुद्युम्नः परवीरहा
अपश्यत् स्त्रियमात्मानं अश्वंचवडवांनृप २६
तथा तदनुगाः सर्वे आत्मलिङ्गविपर्ययम्
दृष्ट्वाविमनसो भुवन् वीक्ष्यमाणाःपरस्परम् २७

एक समय सुद्युम्न अपने मंत्री वर्ग को साथ लेके और धनुर्बाण लेके उत्तर दिशा में शिकार खेलने को गया, राजकुमार सुद्युम्न एक मृग के पीछे जाते जाते सुमेरु पर्वत की तरहटी के वन में पहुंच गया, इस ही वन में महादेव जी पार्वती के सहित विहार किया करते हैं। उस वन में घुसते ही राजकुमार सुद्युम्न स्त्री और उस का घोड़ा घोड़ी होगया, उसके सम्पूर्ण साथी भी स्त्री होगये और आश्चर्य से युक्त होके एक दूसरे को देखने लगे। इस पर भी आश्चर्य यह है कि वह राजकुमार एक महीना स्त्री रहता था और एक महीना पुरुष रहके राज्य के कार्य्य करता था, इस राजा के स्त्री शरीर से सन्तान हुई और पुरुष शरीर से भी वंश चला, इस ही कथा में लिखा है कि महादेव के शाप से वह वन ऐसा होगया था कि जो पुरुष उस वन में जाय वही स्त्री हो जाय, श्रीमद्भागवत नवमस्कन्ध के प्रथम अध्याय ही में लिखा है।

एकदा गिरिशं द्रष्टुमृषयस्तत्र सुव्रताः
दिशो वितिमिराभासाः कुर्वन्तस्समुपागमन् २९
तान्विलोक्याम्बिकादेवी विवस्त्रा व्रीडिताभृशम्
भर्त्तुरङ्कात्समुत्थाय नीवीमाश्वथपर्य्यधात् ३०
ऋषयोपि तयोर्वीक्ष्य प्रसंगं रममाणयोः
निवृत्ताः प्रययुस्तस्मात् नरनारायणाश्रमम् ३१

तदिदं भगवानाह प्रियायाः प्रियकाम्यया
स्थानं यः प्रविशेदेतत् स वै योषिद्भवेदिति ३२

इन श्लोकों का अभिप्राय यह है कि एक समय ऋषि लोग महादेव के दर्शनार्थ उक्त वन में गये उस समय महादेव पार्वती के साथ विहार कर रहे थे ऋषियों को आता देख कर पार्वती अत्यन्त लज्जित हुई क्योंकि वह वस्त्र हीन थीं, पार्वती ने महादेव की गोद से उठ कर वस्त्र पहिरा, ऋषि लोग भी महादेव पार्वती के विहार समय को जान कर वहां से लौट आये और नरनारायण के आश्रम को चले गये, तब महादेव ने पार्वती को प्रसन्न करने के निमित्त कहा कि जो कोई इस स्थान में आवेगा वह स्त्री हो जायगा। इस भागवत के बनाने वाले लाल बुझक्कड़ से कोई पूछे कि उस स्थान में महादेव जी पुरुष क्योंकर रहे ? यदि महादेव जी ऐसा कहते कि "मांविनायेाविशेदेतत्" तब कुछ ठीक भी होता, इसके अतिरिक्त जिन महादेव जी को पुराण वाले सर्वज्ञ मानते हैं उन को यह भी मालूम न हुआ कि ऋषि लोग हमारे दर्शन को आते हैं हम उनके आनेसे पूर्वही सावधान होजायं।

राजा सुद्युम्न की असम्भव कथा की समाप्ति इतने ही में नहीं हुई वरन चन्द्रमा के पुत्र बुध से उसका गान्धर्व विवाह कराया गया और उस के उदर से पुरुरवा की उत्पत्ति भी हुई और एक पुत्र उत्पन्न होजाने केबाद

स्त्रीरूपी सुद्युम्न ने अपने हर्त्ता कर्त्ता और विधातारूपी गुरु वशिष्ठ को फिर याद किया, याद करते ही वशिष्ठ जी आ मौजूद हुए और सुद्युम्न की दशा को देख कर अत्यन्त दुःखी हुए फिर वशिष्ठ ने महादेव को प्रसन्न करने के निमित्त घोर तप किया, उन के तप से प्रसन्न होके महादेव ने दर्शन देके यह वर दिया।

मासं पुमान्स भविता मासं स्त्री तव गोत्रजः
इत्थं व्यवस्थया कामं सुद्युम्नावतु मेदिनीम्

कि सुद्युम्न एक महीना पुरुष और एक महीना स्त्री रहा करेगा और इच्छा पूर्वक पृथ्वी की रक्षा करे।

आचार्यानुग्रहात्कामं लब्धा पुंस्त्वं व्यवस्थया
पालयामास जगतीं नाभ्यनन्दत् स्मतं प्रजाः

इस प्रकार से आचार्य्य की कृपा से सुद्युम्न को पुरुषत्व प्राप्त हुआ और उसने पृथ्वी का पालन किया परन्तु प्रजा उस से प्रसन्न न रही, सुद्युम्न के पुरुष रूप से तीन और स्त्री रूप से एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

तस्योत्कलो गयो राजन् विमलश्च सुतास्त्रयः।
दक्षिणापथराजानो बभूवुर्धर्म्मतत्पराः॥

उस सुद्युम्न के उत्कल, गय और विमल यह तीन पुत्र उत्पन्न हुए यह तीनों दक्षिण देश के धर्म्मपरायण राजा हुए

अब पाठक स्वयं विचार सक्ते हैं कि इस किस्से से

अलिफ लैला के किस्से अच्छे हैं वा नहीं, चिकित्सा शास्त्र के प्रमाणों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि स्त्री के शरीर के धातु तथा शिरा और अस्थि आदि पुरुष के शरीर के धातु और शिरा आदि से अत्यन्त भिन्न हैं प्रत्येक महीने में उन का बदल जाना सर्वथा असम्भव है अतएव यह कथा नितान्त अनभिज्ञ और गपोड़ानन्दियों की बनाई है आजकल जैसे गपोड़िया ईसाई कहा करते हैं कि " खुदा ने आदम की पसली निकाल कर स्त्री को रचा" उस से भी अधिक गपोड़े से भरी यह सुद्युम्न की कथा है

इस के अतिरिक्त देवी भागवत में ब्रह्मा विष्णु और शिव इन तीनों देवतों को स्त्री बना दिया है, जब यह तीनों देवता सृष्टि रचने में असमर्थ हुए तो भगवती की आज्ञा से तीन विमान इनके पास आये और इन तीनों को लेके आकाश को उड़ गये रास्ते में इन तीनों ने सहस्रों ब्रह्मा विष्णु और शिव देखे पश्चात् मणिद्वीप (जैसे विष्णुभागवत में गोलोक लिखा है वैसे ही देवीभागवत में मणिद्वीप लिखा हुआ है, गोलोक में कृष्ण ही एक पुरुष रहते हैं और सब स्त्रियां हैं ऐसे ही मणिद्वीप में भगवती की सम्पूर्ण दासियां रहती हैं पुरुष एक भी नहीं है) में पहुंचते ही तीनों देवता स्त्री बन गये और सैकड़ों वर्ष तक भगवती की सेवा करते रहे, अनन्तर एक दिन यही तीनों देवता भगवती के समीप सेवा में उपस्थित थे उन्होंने देखा कि भगवती के बायें पैर के अंगूठे

में सारा संसार बसा हुआ है अनेक ब्रह्मा, अनेक विष्णु और अनेक महादेव अपनी सृष्टि की पालना कर रहे हैं इस अनोखी सैरबीन को देखते ही ब्रह्मादि तीनों देवतों के छक्के छूट गये और इन को अपनी पहिली अवस्था की याद आई तब देवी की स्तुति करने लगे देवी ने इन की स्तुति से प्रसन्न होके अपनी तीन दासी, अर्थात् महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली उक्त २ देवतों को प्रदान कीं। इस कथा ने सम्पूर्ण पुराणों को ही रद्दी बना दिया क्योंकि इस कथा को सच्ची मानने से समुद्र मथन और उस से लक्ष्मी का उत्पन्न होना बिलकुल मिथ्या होगया फिर दक्ष प्रजापति की कन्या सती से महादेव का विवाह अथवा मार्कण्डेय पुराण में जो पार्वती की भृकुटी से काली की उत्पत्ति लिखी है वह भी मिथ्या होगई इस के अतिरिक्त सब पुराण वाले मानते हैं कि सरस्वती ब्रह्मा की पुत्री है और इस ही कारण ब्रह्मा को पुत्रीगमन का दोष लगाया जाता है परन्तु देवी भागवत ने सब पुराणों की कथाओं को रद्दी कर दिया। जिस गङ्गा नदी को कोई मनुष्य भी किसी प्रमाण से जलप्रवाह के अतिरिक्त अन्य वस्तु सिद्ध नहीं कर सक्ता है उसको भी पुराण वालों ने प्राकृत स्त्री बना के पाण्डवों के पूर्व पुरुष महाराज शन्तनु से उस का विवाह कराया और उस के पुत्र भी उत्पन्न करा दिये। जिस गंगा की उत्पत्ति गंगोत्री पहाड़ से प्रत्यक्ष दीख रही है उस को

ब्रह्मकमण्डली तथा शिव के सिर में घूमने वाली लिख मारा। फिर महाराज भागीरथ जब उसको लाते थे तब राजा जन्हू उसे पीगये फिर अपनी जंघा चीर के राजा जन्हू ने उसे निकाल दिया क्या किसी चिकित्सा ग्रन्थ के शारीरिक स्थान से यह सिद्ध कर सक्ता है कि जो जल पिया जाता है वह विना रक्त रूप में परिणत हुए जंघा की नसों में चला आता है ? कदापि नहीं।

कुन्ती के जारज पुत्र कर्ण की उत्पत्ति की अद्भुत कहानी को सुन के किसे हंसी नहीं आती है। लिखा है कि एक वार कुन्ती के पिता राजा शूरसेन के महर्षि दुर्वासा आये राजा ने उन की सुश्रूषा करके कई मास तक ठहराया, कुन्ती ने दुर्वासा ऋषि की बड़ी सेवा की इस कारण दुर्वासा ऋषि ने प्रसन्न होके कुन्ती को एक मन्त्र उपदेश किया और कहा कि इस मन्त्र से तू जिस देवता को बुलावेगी वही तेरे पास आजायगा, दुर्वासा के चले जाने के वाद कुन्ती ने मन्त्र की परीक्षा लेने के निमित्त श्री सूर्य्य देवता का आह्वान किया, मन्त्र बल से सूर्य्य देवता कुन्ती के घर में चले आये और कुन्ती के रूप लावण्य को देख के मोहित हो गये अनन्तर कुन्ती से बोले कि बोलो मैं तुम्हारा कौनसा कार्य्य सिद्ध करूं ? कुन्ती ने दीन और नम्र होके कहा कि मैंने केवल मन्त्र की परीक्षा लेने के निमित्त आप को बुलाया था अब आप को

प्रणाम करती हूं आप निज स्थान को जाइये। सूर्यदेव ने कहा कि हम देवता हैं हमारा आना व्यर्थ नहीं हो सक्ता है इस कारण तुम हमारे साथ रमण करो, कुन्तीने लज्जित होके महाराज ! मैं कन्या हूं और आप अमोघ वीर्य्य हैं आप मुझ पर दया करके मेरे अपराध को क्षमा कीजिये परन्तु सूर्य काहे को मानने वाले थे उन्होंने कामी मनुष्य के समान कुन्ती को फुसला के कहा कि तुम्हारा कन्यापन नष्ट न होगा और तुम्हारे गर्भ को कोई न जानेगा और नव मास के अनन्तर मेरे समान तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा ऐसा कहके और अपनी इच्छा को पूर्ण करके सूर्यदेव तो अपने स्थान को चले गये और कुन्ती के उस ही दिन गर्भ रह गया ९ मास के पश्चात् भारत प्रसिद्ध कर्णवीर का जन्म हुआ इन की उत्पत्ति कान से हुई और लोहे के जिरह बख्तर तथा सोने के कुण्डल पहिरे इन का जन्म हुआ कुन्ती ने कर्ण को एक पींजरे में रख के नदी में बहा दिया एक सूत की राधा नाम्नी स्त्री ने उसे निकाला और निज पुत्रवत् पाला। यह ऐसी असम्भव कथा है कि जिस पर किसी को भी विश्वास नहीं होसक्ता है प्रथम तो सूर्य्य का पृथ्वी पर आना असम्भव और विद्याविरुद्ध है फिर कवच और कुण्डल के सहित बालक का गर्भसे उत्पन्न होना असम्भव और सब से अत्यन्त असम्भव कान से बालक का उत्पन्न होना है

न मालूम हिये के अन्धों को ऐसी असम्भव कहानियों पर योंकर अविश्वास होजाता है।

पुराणों के प्राचीन होने में स्वयं पौराणिकों को भी विश्वास नहीं है क्योंकि एक बङ्गाली पण्डित ने अपने पुस्तक में लिखा है कि श्रीमद्भागवत वोपदेव की बनाईहै

श्रीमद्भागवतस्यानुक्रमणी रचयीकृता।
विदुषा वोपदेवेन भिषक्केशवसूनुना॥

हरि लीला नामक पुस्तक में भी लिखा है।

श्रीमद्भागवतस्कन्धाध्यायार्थादि निरूप्यते
विदुषा वोपदेवेन मन्त्रिहेमाद्रितुष्टये।

ज्ञानेश्वर मिश्र ने जो गीता की टीका बनाई है उस में उन्होंने १२२७ शकाब्द में हेमाद्रि का होना सिद्ध किया है और वोपदेव हेमाद्रि के ही समय में हुये थे इस से भागवत की अत्यन्त नवीनता सिद्ध होती है, भागवत के चूर्णिका टीका में इन श्लोकों को उद्धृत किया है जिससे भागवत की अर्वाचीनता स्वयं सिद्ध हो जाती है॥

पुराणों की सम्पूर्ण असम्भव और असत्य कहानी लिखी जाय तो एक बड़ा भारी पुस्तक बन जाय इस के अतिरिक्त इन के परस्पर विरोध दिखाने को भी एक स्वतन्त्र पुस्तक रचने की आवश्यकता है॥

महाराज प्रियव्रत की कथा जो श्रीमद्भागवत के

पञ्चमस्कन्ध प्रथम अध्याय में लिखी है वह सर्वथा वेद विरुद्ध और हास्यास्पद है वेदों में स्पष्ट लिखा है कि सृष्टिकर्त्ता परमात्मा ने आदि सृष्टि में समुद्र और सूर्यादि को बनाया और सूर्य के उदयास्त से रात्रि और दिन का तथा मास और वर्ष का विभाग जगत् में होता है परन्तु भागवत में लिखा है कि॥

यावदवभासयति सुरगिरिमनुक्रमन्
भगवानादित्यो वसुधातलमर्द्धेनैव
प्रतपत्यर्द्धेनावच्छादयति तदाहि भगवदु-
पासनोचितातिपुरुषप्रभावस्तदनभिनन्द-
न्समजवेन रथेन ज्योतिर्मयेन रजनीमपि-
दिनंकरिष्यामीति सप्तकृत्वस्तरणिमनुप-
र्य्यक्रामद्द्वितीयइव पतंगः॥

महाराज प्रियव्रत ने यह विचार किया कि सूर्य सुमेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करता है इस कारण आधे जगत् में रात्रि रहती है बस इस रात्रि को मैं दिन करूंगा ऐसा विचार कर अपने प्रकाशमय रथ पर बैठ के वह सूर्य के समान घूमने लगा॥

येवा उह रथचरणनेमिकृतपरिखातास्ते स-

एतसिन्धव आसन्यत एव कृताः सप्तभुवो द्वीपाः॥

महाराज प्रियव्रत के रथके पहिये से जो खाईबनीं वही सात समुद्र होगये और जो भूमि उन के बीच में रह गई वह जम्बू प्लक्ष और शाल्मली आदि सात द्वीप के नाम से प्रसिद्ध हो गई। भागवत वाले ने जो क्षारोद (खारी जल का) इक्षुरसोद (ऊख के रस का) मदोद (शराब का) घृतोद (घीव का) क्षीरोद (दूध का) दधिमण्डोद (दही के पानी वा ढाढ का) शुद्धोद (शुद्ध जल का) यह सात समुद्र लिखे हैं परन्तु यह नहीं लिखा है कि राजा प्रियव्रत के रथके पहिये से जो सात खाई बनीं उन में मद्य (शराव) आदि को किस ने भरा यदि ईश्वर की कृपा से स्वयं भर गये तो जिस ईश्वर ने ऊख का असंख्य मन रस निकाला और असंख्य गेलन शराब बना के समुद्र में भरा तो उस परमेश्वर को खाई खोदते ही क्या आलस्य आता था जो प्रियव्रत को उनके खोदने की आवश्यकता हुई, वास्तव में यह सब कथा वेद विरुद्ध और मिथ्या है।

देवीभागवतादि कई एक पुराणों में शुक्र की कन्या देवयानी और बृहस्पति के पुत्र कच की कथा अत्यन्त हास्यास्पद लिखी है शायद अलिफ़ लैला में ऐसी कोई कहानी न होगी।

लिखा है कि दैत्यों के पुरोहित शुक्राचार्य्य को संजीवनी विद्या आती थी उस के बल से समर में मरे दैत्यों को वह जिला देते थे परन्तु देवतों के गुरु बृहस्पति इस विद्या को न जानते थे इस कारण बृहस्पति ने अपने पुत्र कच को शुक्र के पास संजीवनी विद्या सीखने के वास्ते भेजा शुक्र आचार्य्य थे इस कारण कच को विद्या पढ़ाना स्वीकार किया और अपने घर में रख के कच को पढ़ाने लगे शुक्र की कन्या देवयानी कच से ऐसी प्रीति करने लगी कि विना कच को भोजन कराये आप कभी न खाती थी, कच को क्रमशः संजीवनी विद्या आने लगी, जब दैत्यों को यह समाचार मिला वह बहुत घबड़ाये और कच को मारने का उपाय सोचने लगे,एक दिन कच अपने आश्रमानुसार प्रातः सन्ध्या करने नगर से बाहर गये थे वहीं दैत्यों ने कच को मार डाला और भिड़हों को खिला दिया जब भोजन के समय तक कच शुक्र के स्थान पर लौट कर न गये तो देवयानी को बड़ी चिन्ता हुई, देवयानी ने अपने पिता से कहा कि दैत्य गुरो ! अभीतक कच ने भोजन नहीं किया और उस को विना देखे मैंभी भोजन नहीं कर सक्ती हूं कृपा करके शीघ्र कच को बुलाइये।शुक्र ने कहा कि पुत्रि! कच को दैत्यों ने मारकर भिड़हों को खिला दिया अब उस का जीना कठिन है शुक्र के मुख से इस अनिष्ट बात को सुन के देवयानी ने

उत्तर दिया कि यदि आप कच को न जिलावेंगे तो मैं भी मर जाऊंगी, लाचार होके दैत्यगुरु वन में गये और विद्याबल से उन्हीं भिड़ों को एकत्रित किया जिन्होंने कच को खाया था फिर संजीवनी विद्या से भिड़ों के पेट से कच के अङ्ग और प्रत्यंगों को निकाला और उसे जीवित करके अपने घरलाये तब देवयानी ने भोजन किया, इसके अनन्तर फिर एक दिन दैत्यों ने कच को मार के भस्म कर दिया और फिर देवयानी के कहने से शुक्र ने उसे जिलाया जब दैत्यों ने देखा कि देवयानी कच को नहीं मारने देती है और कच भी संजीवनी विद्या में निपुण होगया है परन्तु यह सीख कर यदि चला जायगा तो देवता हमसे प्रबल होजायंगे ऐसा विचार कर दैत्यों ने फिर कच को मारा और उस के मांस की शराब बनाके शुक्र को पिला दी, इस वार भी देवयानी ने कच को बुलाने के निमित्त शुक्र से हठ किया तब शुक्र ने देवयानी से कहा कि इस वार कच मेरे पेट में है, यदि कच जीवेगा तो मैं मर जाऊंगा और मैं जीवित रहूंगा तो कच नहीं जीवेगा देवयानी ने कच के जिलाने के वास्ते अत्यन्त हठ किया तब शुक्र ने संजीवनी विद्या के मंत्र पढ़ने आरम्भ किये उन मंत्रों के प्रताप से कच शुक्र का पेट चीर के निकल आये और अपने गुरु को मरा हुआ देख के पश्चात्ताप करने लगे परन्तु कच को संजीवनी विद्या आगई थी इस से कच ने शुक्र भी जिला दिया पश्चात् शुक्र ने कच से

कहा कि सम्पूर्ण दैत्य तुम्हारे शत्रु होगये हैं इस कारण घर चले जाओ, जब कच अपने घर को जाने लगा तब देवयानी ने कच से कहा कि मैं तुम्हारे विरह में मर जाऊंगी इस कारण तुम मुझ से विवाह करलो, कच ने उत्तर दिया कि मैंने तुम्हारे पिता से विद्याध्ययन किया है इस सम्बन्ध से गुरु पुत्री हो मैं तुम्हारे साथ विवाह न करूंगा तब देवयानी ने कच को शाप दिया कि तुम्हारी विद्यासफल न होगी कच ने भी देवयानी को शाप दिया कि तुम को ब्राह्मण वर की प्राप्ति न होगी इस ही शाप से देवयानी का विवाह राजा ययाति के साथ हुआ था।

क्या आश्चर्य की बात है कि मांस की शराब बनाई गई और उसे शुक्र पी भी गये और फिर कच जी उठा कहिये कि कच का जीव भी क्या शराब में घुल गया था ? ऐसे जटल काफ़ियों पर कौन मनुष्य विश्वास कर सक्ता है ?।

भागवत के अष्टमस्कन्ध १२ अध्याय में एक ऐसी अद्भुत कथा लिखी है जिस से रामपुर की-बाज़ी भी शर्म्माती है जिस समय देवता और दैत्यों ने समुद्र को मथ के मदिरा और अमृत को निकाला उस समय अमृत के वास्ते देव और दानवों में घोर संग्राम होने लगा, इस ही अवसर में दानवों को मोहित करने के निमित्त विष्णु ने मोहनी (स्त्री) रूप धारण किया और दानवों को मदिरा तथा देवतों को अमृतपान क-

राया (इस के अनन्तर)

वृषध्वजो निशम्येदं योषिद्रूपेण दानवान्
मोहयित्वा सुरगणान् हरिः सोममपाययत् १
वृषमारुह्य गिरिशः सर्वभूतगणैर्वृतः ।
सोमया च ययौ द्रष्टुं यत्रास्ते मधुसूदनः २

महादेव ने यह सुना कि भगवान् विष्णु ने मोहनी रूप धारण कर के देवतों को अमृत पिलाया, महादेव उमा के सहित बैल पर चढ़ के और अपने गणों को साथ ले के वहां गये जहां विष्णुभगवान् थे, महादेव ने विष्णु की बड़ी भारी स्तुति कर के कहा ।

अवतारा मया दृष्टा रममाणस्य ते गुणैः
सोहन्तद्रष्टुमिच्छामि यत्ते योषिद्वपुर्धृतम्

तुम्हारे अनेक अवतार मैंने देखे अब मैं उस नारी-रूप को देखना चाहता हूं जिस से तुम ने दैत्यों को मोहित किया और देवतों को अमृत पिलाया । महादेव की बात को सुन कर विष्णु ने हंस कर कहा ।

कौतूहलाय दैत्यानाम् योषिद्वेषो मयाकृतः
पश्यता देवकार्य्याणि गते पीयूषभाजने
तत्तेहं दर्शयिष्यामि दिदृक्षोः सुरसत्तम !

इस प्रकार से महादेव की स्तुति को सुन के भगवान् विष्णु

बोले कि जब अमृत का पात्र देवतों से दैत्यों के पास चला गया तब मैंने दैत्यों को मोहित करने के निमित्त जो स्त्री का रूप धारण किया था वह तुम को दिखलाऊंगा, वह मेरा रूप कामियों को अत्यन्त प्यारा है परन्तु वह केवल सङ्कल्पमात्र ही है । ऐसा कह के भगवान् विष्णु वहीं अन्तर्द्धान हो गये जहां उमा के सहित महादेव विराजमान थे और चारों ओर को देख रहे थे ।

भगवान् विष्णु के अन्तर्द्धान हो जाने के पश्चात् जो महादेव की दशा हुई वह वर्णनातीत है (बयान से बाहर है) न मालूम भागवत के बनाने वाले को इस कथा के लिखनेमें कैसी निर्लज्जताने घेर लिया था, लिखा है ।

ततो ददर्शोपवने वरस्त्रियं
विचित्रपुष्पारुणपल्लवद्रुमे ।
विक्रीडतीं कन्दुकलीलया लस
द्दुकूलपर्य्यस्तनितम्बमेखलाम् ॥
तां वीक्ष्य देव इतिकन्दुक लीलयेषद्
व्रीडास्फुटस्मितविसृष्टकटाक्षमुष्ट
स्त्रीप्रेक्षणप्रतिसमीक्षणविह्वलात्मा
नात्मानमन्तिक उमां स्वगणांश्च वेद ।
तस्याः कराग्रात्सतु कन्दुको यदा
गतो विदूरं तमनुव्रजस्त्रियाः

वासः ससूत्रं लघुमारुतो हरत्
भवस्य देवस्य किलानुपश्यतः ।
एवं तां रुचिरापांगीं दर्शनीयां मनोरमां
दृष्ट्वा तस्यां मनश्चक्रे विषजंत्यां भवः किल ।
तयापहृतविज्ञानः तत्कृतस्मरविह्वलः
भवान्या अपि पश्यन्त्या गतह्रीस्तत्पदं ययौ।
सा तमायान्तमालोक्य विवस्त्रा व्रीडिताभृशम्
निलीयमाना वृक्षेषु हसन्ती नान्वतिष्ठत ।
तामन्वगच्छद्भगवान् भवः प्रमुषतेन्द्रियः
कामस्य च वशंनीतः करेणुमिव यूथपः ।
सोनुव्रज्यतु वेगेन गृहीत्वाऽनिच्छतीं स्त्रियं
केशबन्ध उपानीय बाहुभ्यां परिषस्वजे ।
सोपशूढा भगवता करिणा करिणी यथा
इत स्ततः प्रसर्पन्ती विप्रकीर्णशिरोरुहा ।
आत्मानं मोचयित्वांग सुरर्षभभुजान्तरात्
प्राद्रवत्सा पृथुश्रोणी मायादेवविनिर्मिता ।
तस्यानुधावतो रेतः च स्कन्दामोघरेतसः
शुष्मिणो यूथपस्येव वारिता मनुधावतः ।

यत्र यत्रापतन्मह्यां रेतः रतस्य महात्मनः
तानि रुद्रस्य हेत्नश्च क्षेत्राण्यासन्महीपते।

इन श्लोकों का भावार्थ यह है कि इस के अनन्तर समीपवर्त्ती बाग़ में (जिस में लाल २ और कोमल पत्ते तथा पुष्प भरे हुये थे) गेंद को उछालती हुई एक अत्यन्त सुन्दरी को देखा। उस मन्द मुस्कान वाली स्त्री को गेंद उछालते देख कर महादेव ऐसे काम से व्याकुल हुये कि उन को पास बैठी पार्वती और अपने गणों की भी लज्जा जाती रही। जब उस स्त्री के हाथ से गेन्द बहुत दूर चली गई और वह उस को पकड़ने के निमित्त झपटी तब वायु ने उस के बारीक वस्त्र को उड़ाया, महादेव उस स्त्री पर ऐसे मोहित हुए कि पार्वती के सामने ही उस के पीछे भागे वह वस्त्र हीना स्त्री महादेव को अपने पीछे आता देखकर बहुत लज्जित हुई और वृक्षों में छिप गई। महादेव भी वृक्षों में उसके साथ चले गये और उस का जूड़ा पकड़ के अङ्क (गोद) भर के आलिङ्गन किया वह स्त्री इधर को तड़फ कर महादेव की भजाओं से छूटी और भागी। इस आलिङ्गन से जहां जहां महादेव का वीर्य्य पतन हुआ वहीं वहीं सोने की खान हो गई।

भला कहिये इस लाल बुझक्कड़ी कथा से क्या आशय निकलता है? एक तो यह कि महादेव ऐसे अबोध

हैं कि उन को इतना भी ध्यान न रहा कि मैंने अभी विष्णु से स्त्री का स्वांग भरने को कहा था। दूसरा यह कि महादेव सरीखे महानुभाव देवता भी पर स्त्री गामी और निर्लज्ज हैं, भला विचारिये तो सही कि यदि सब पुराण एक व्यास के ही बनाये होते तो जिन महादेव को एक स्थान में कामदेव का भस्म करने वाला लिख आये हैं उन को ही दूसरे स्थान में अत्यन्त कामी और पर स्त्रीगामी क्यों लिखते?

पुराणों में जो भविष्यद्वाणी के छल से राजों का वर्णन लिखा है उस के देखने से जान पड़ता है कि यह समस्त पुराण मुसलमानों के समय में बनाये गये हैं क्योंकि श्रीमद्भागवत के स्कं० १२ अ० १ में लिखा है।

सिन्धोस्तटे चन्द्रभागाम् काचीं काश्मीरम-ण्डलम् भोक्ष्यन्ति शूद्रा व्रत्या म्लेच्छाश्चो ब्रह्मवर्चस

अर्थात् सिन्धु नद के किनारे, चन्द्रभागा नदी के किनारे दक्षिण में कांचीपुरी को और काश्मीर देश को शूद्र और म्लेच्छ भोगेंगे (राज्य करेंगे) इस लेख से स्पष्ट जान पड़ता है कि जब मुसलमानों का राज्य सिन्ध देश में हो गया था तब भागवत बनाई गई है यदि यह भविष्यत् वाणी होती तो वहां यह भी अवश्य लिखा रहता कि सिन्धु से ब्रह्मपुत्र पर्य्यन्त म्लेच्छों का

राज्य हो जायगा। इस के अतिरिक्त भविष्यत् वाणी में जैसे चन्द्रगुप्त और नन्दादि के नाम लिखे हैं वैसे ही महाराज विलियम और महाराणी विक्टोरिया के भी नाम लिखे होते परन्तु भागवतादि पुराणों में कहीं पर यह भी नहीं लिखा कि किसी द्वीपान्तरवासिनी राज राजेश्वरी स्त्री का भारत में राज्य होगा तब हम क्यों कर विश्वास करें कि पुराणों में भविष्यत् बात लिखी हैं। श्रीमद्भागवत में जो भविष्यत् वाणी लिखी है कि

ततोऽष्टौयवनाभाव्या चतुर्दश तु रुष्करा
भूयोदशगुरुंडाश्च मौना एकादशैवतु।

अर्थात् कंक जाति के जब १६ राजा राज्य कर चुकेंगे इन के अनन्तर आठ यवन राजा होंगे फिर १४ रुष्कर जाति के राजा राज्य करेंगे इन के अनन्तर गुरुण्ड जाति के १० राजा राज्य करेंगे फिर ११ मौन वंश के राजा होंगे।

यदि इस श्लोक को भविष्यत् वाणी ही समझा जाय तो कंक शब्द से पूने के पेशवाओं का ग्रहण हो सक्ता है क्योंकि कृत्रिम ब्राह्मण को कंक कहते, हैं परन्तु यवनों के और गुरुण्ड अर्थात् अंग्रेजों के मध्य में रुष्कर जाति के कोई राजा नहीं हुए तब इस को भविष्यत् वाणी क्यों कर मानी जाय ? इस के अतिरिक्त भागवत में यह भी लिखा है कि

आरभ्यभवतोजन्म यावन्नन्दाभिषेचनम् ।
एतद्वर्षसहस्रन्तु शतं पञ्चदशोत्तरम् ॥

शुकदेव परीक्षित से कहते हैं कि आप के जन्म से राजा नन्द के अभिषेक (तख्तनशीनी) पर्य्यन्त १११५ वर्ष होते हैं किन्तु मगध देश के राजा नन्द के समय को महाराज परीक्षित के समय से अन्यून २५०० वर्ष होते हैं अब कहिये कि इतिहास ग्रन्थों की रीति से भागवत का लेख मिथ्या ठहरता है वा नहीं ? ।

वास्तव में पुराण उन मनुष्यों के द्वारा रचे गये हैं जो न इतिहास विद्या को जानते थे और न शास्त्रों से अभिज्ञ थे केवल मुसलमानों के जटल काफियों को सुन के उन की नकल किया करते थे ।

यह सब पुराण मुसलमानों के समय में बनाये गये हैं जो लोग इन नवीन ग्रन्थों को वेद मूलक वा वेदानुसार कहते हैं उन के नेत्रों पर पक्षपात का चश्मा लगा हुआ है क्योंकि स्वामी शङ्कराचार्य्य ने भी पुराण शब्द वाच्य ब्राह्मण ग्रन्थों को ही माना है ।

॥ ओ३म् शम् ॥

ओ३म्

देवलोकमें भोज।

३५५६ ८.५.२१ ८.२३.२१ २३८५

बरसातकी दिन २ दूर हुई शरदऋतुका अधिकार आया किसानोंकी अठपहरू मिहनतका चमत्कार-खेतोंमें दिखाई देने लगा। नृप, तापस, वणिक् और भिखारियोंको अपने २ काममें सुभीता हुआ। खञ्जनादि पक्षी इतस्ततः यथेच्छ विचरने लगे। नदी तालाबोंका जल आलसी धनीके धनकी भांति घटने लगा। मीन, कच्छपादि, जल जीव, पातकी राज्यमें अकाल-दलित प्रजाकी नाईं पीड़ित होने लगे। सुराज्यसे जैसे दुष्टजन वहिष्कृत होते हैं एवम् मक्खी, मच्छर आदि दुखदायी जन्तु पलायित होगये। शीतल, मन्द सुगन्ध समीर वहने लगा आकाश सरोवरसे मेघमालाकी काई दूर हुई, निर्मल नीलजल शोभा देने लगा। जिस प्रकार मतवालोंका नशा उतरने वा सज्जनोंके चित्तसे मदमोह दूर होने पर उनकी शोभा होती है वही दशा आकाश सरोवरकी अवगत होने लगी। शरचन्द्र परिशोभित गगनमण्डल प्रकाशित हो गया कमलसे खिले तारे सकुच गये। नारि कमोदनि प्रिय प्रीतमका मुखचन्द्र निहार विकसित हुई। वन उपवन सुमन वाटिका नद नदी और वृक्षावलीमें चन्द्र किरणें छिटक रहीं। शस्यपूर्णा वसुन्धरा गर्भिणी स्त्री की भांति गरुआ गई दिशोपदिशा हास्य नृत्य करने लगीं दिवाकरकी उष्ण रश्मि दिन पर दिन सुखदायी और प्यारी लगने लगीं। संसारचक्रका ऐसा ही नियम है कि सदा एक वस्तु सुख वा दुःख नहीं देता, यही स-

मझकर धीर जन विपत्तिमें धैर्य धारण करते हैं। अस्तु यों कालकी धुरी पर धरणिचक्रका चक्कर होते हुवाते देवोत्थापिनी एकादशी भी आपहुंची। यह क्या त्यौहार है? चार महीना पड़े २ खर्राटा भरते हुए देवतों के जागनेका दिन है। हमारे आधुनिक पुराणोंकी इस में साक्षी है। इस समय मर्त्तलोकमें जो कुछ आनन्दोल्लास होता है आप लोग जानते ही हैं, इसी दिन आक टूटता है। इससे पहिले सफेद गन्ना खाना हमारे भोले भाई अच्छा नहीं जानते। पहिले जो ऊख खाते हैं वे कच्चे होनेके हेतु मीठे नहीं होते। लाल भुभक्कड़ प्रेमीजन ऐसा समझते हैं कि एकादशीको ऊखरस चार मारके प्यासे देवगण पीजाते हैं इसी कारण इनमें मिठास नहीं होता। यदि देवताओंका रस पान करना ही सत्य है तो केवल देवठानको ही यह कमी होनी चाहिये परन्तु न इसी दिन वरन इसके १५ वा २० दिन बाद तक गन्नेमें मिठास नहीं आता, जो हो इस लोककी व्यवस्था तो आप जानते ही हैं। कुछ देवलोककी कैफियत भी हमारी कलम की घिस में देख लीजिये। पोथियोंमें अथवा पोथाधारी पण्डितों के मुंह तो आप बहुत दिनोंसे इन्द्रलोक, शिवलोक और विष्णुलोककी कथा देखते सुनते आये हैं। आज हम भी संक्षेपतः देवलोककी गाथा कहते हैं। पुराणवेत्ता कह गये है कि शास्त्रोंमें तर्कबुद्धि अच्छी नहीं। हमने भी इसमें कोई बात झूठ नहीं लिखी है। हरे! हरे!! हरे अनर्गल लिखनेसे क्या प्रयोजन है। हम सम्पादक हैं जैसा जिसने लिख भेजा वैसाही कम्पोज करनेको देदिया

यह लेख हमारे एक आर्यबन्धुने भेजा है जो अभी दि॰ सम्बरमें देवलोक होते हुए परमपदको प्राप्त हुए हैं। उन्होंने किस रीतिसे, किसके हाथ भेजा है। यह हम तब बतावेंगे जब आप हमें गात्रदानसे गात्र बनते दि॰ खादें और तेरहवींको दिये हुए शय्यादानकी रसीद मगादें नहीं तो हजार बातोंकी एक बात तो हम ऊपर ही लिखचुके है कि शास्त्रोंमें तर्कबुद्धि अच्छी नहीं। तब आप बहस क्या करते हैं? यदि आप पुराणोंको जानते मानते हैं तो हम पर आक्षेप न कीजिये—देवताका दिव्यस्वरूप तदनुसार ही वर्णन करेंगे ध्यान दे सुनिये।

स्वर्गमें इन्द्रादि देवता जाग पड़े चतुर्दिक आनन्द वाद्य होने लगा। अप्सरा विविध गीतनादसे नृत्यगा॰ न करने लगीं। आनन्दोल्लाससे सुरपुर भर गया।

इसी अवसरमें सुरपति इन्द्रने विचार किया कि आज सब देवताओंको दावत करनी चाहिये इन्द्राणी भी पूछी जाने पर इनसे सहमत हुईं, पुत्र और अमा॰ त्यवर्गकी सम्मतिसे भोजन देना निश्चित होगया। तदनुसार सबदेवताओंके पास श्री नारद द्वारा सूच॰ नापत्र भेजे गये कि आप लोग पुत्र, कलत्र और इष्ट मित्रों सहित दीनगृहको पवित्र करें। हमारे कितने भाई जो स्त्रीको पैरकी जूती समझते हैं—इन्द्र महा॰ राज पर हसेंगे कि उन्होंने पहिले इन्द्राणीकी सम्मति ली और देवताओंको सस्त्रीक निमन्त्रण दिया उन को अपना ग़लत ख़याल भुला देना चाहिये स्वर्गलोक में परम धार्मिकी विदुषी और वीर जाया वीराङ्गना हैं—

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, मधुकैटभसंहारकारिणी दुर्गाभगवतीकी कथा क्या आप लोगोंने नहीं पढ़ी और सुनी है ? तब स्त्री जातिको इतनी घृणित मानना आपकी बड़ी भारी भूल है। विशेषतः भगवतीके उपासकोंको—अस्तु नियत समय पर आमन्त्रित देवगण सज धज कर आने लगे जैसे कि अंगरेज़ लोग अपनी प्यारी लेडियोंको साथ लेकर जाते हैं सबसे पहिले गणपति गणेश ऊंची थोंद किये ऋद्धि सिद्धिके सहित चूहे पर चढ़े सूंड़ फटकारते हुए आये तदनन्तर हंसयुक्त विमान पर आरूढ़ हाथमें कमण्डलु लिये सावित्री सहित ब्रह्मा आय विद्यमान हुए।

महेश्वर मुण्डमाल पहिने बैल पर सवार चन्द्ररेखा विभूषित हाथमें त्रिशूल लिये पारवतीके साथ आये। भगवान् विष्णु गरुड़ पर चढ़े शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग धारण किये लक्ष्मीके सहित आय विभूषित हुये भैरवजी एफ्रिकाके हवशीका सा काला मुंह किये रक्त नेत्र अंगरेजोंकी तरह कुत्ते साथमें लिये त्रिशूल धरे झूमते झामते बैठ गये। श्री कृष्णचन्द्र सोलह सहस्र रानी पटरानी और गोपियों सहित वायुवत शीघ्रगामी घोड़ोंके रथपर चढ़े बड़े गाजे बाजेके साथ सुशोभित हुए सहस्रफणीश शेष जी भी हज़ारा फनफनाते परसुतियाके पत्ते की तालर जीभें लपलपाते हुए आय पहुंचे स्वामि कार्त्तिक भी पक्षीराज मोर पर चढ़े हाथमें सांग लिये आन विराजे। एवं यम, कुवेर, वरुण, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, आठ वसु, लोक-

पाल, दिक्पाल, और शेषशायी भगवान्के मत्स्य, कूर्म, बाराह, नृसिंह, बामन, भार्गवादि चौबीसों अवतार भी आकर विद्यमान हुए तदनन्तर वीणा पुस्तक धारिणी हंसवाहिनी विदुषी सरस्वती (हंस पर चढ़ीं) आय विराजीं। भगवती दुर्गा सिंह पर सवार खड्ग चर्म परि सुशोभित विभूषित हुईं, काला कराल बदन रक्त नेत्र किये मुंह बाये एक ओंठ धरती पर दूसरा आकाशसे बातें करता हुआ हाथीकी ताजी निकली खून चिचुआती हुई खाल ओढ़े शरीरमें जिनके निकोटने तक को मांस नहीं मुण्डमाल पहिने स्याह बानातसे काले मुंहमें तुलसी दल कीसी लाल जीभ निकाले मद में चूर हाथमें नर पांजर लिये अट्टहास करती हुई बिजली सी टूट पड़ीं, एवं अन्य देवी देवता सब अपने अपने बस्त्राभूषण और वाहनायुधपूर्ण आय सुशोभित हुए। उस समय इन्द्रभवनमें देव तेजके मारे चकाचौंध होता था जिस समय काली कहीं अपना शिर हिला देती थीं तो उनके भीमनादसे धरणी गगनान्तर व्याप जाता था, ध्वनिको प्रतिध्वनित होनेके लिये जगह नहीं मिलती थी सूर्यके घोड़े इधर उधर राह छोड़कर भाग जाते थे, सचराचर त्रैलोक्यमें क्षोभ हो जाताथा उस समय सकल अमरगण परिवेष्टित महाराज इन्द्र ऐसी शोभा देते थे जैसी सन् ७७ ई० में महाराणी भारतेश्वरीकी शाहंशाही हुई थी दिल्ली दर्बारसे बढ़कर यह त्रिदशदरबार परिशोभित हुआ था। कौन वर्णन कर सकता है शेष तक तो वहां शरमाये हुये ही खड़े थे। शारदा भी बगलें झांकती थीं महाराज सुरपतिने

प्रत्येक देवताको बड़े चाव और नम्रभावसे अभिवा-दन कर आसन और अर्घपाद्य दिया अतीव मृदु और शीतल वचनोंसे उनको सन्तुष्ट किया। आज कलके क्षुद्र अमीरोंकी भांति बड़प्पनके जोशमें आकर किसी पर त्योरी नहीं चढ़ाई सब बन्धुवर्ग हैं। इनकी ही दी हुई राजश्री और प्रतिष्ठा हम भोग रहे हैं इनमें कौन बड़ा और कौन छोटा है! इन्द्र सदा जैसे अपने बरा-बर वालोंके साथ पेश आते थे। उससे अधिक नमूना और शान्तभाव अपने मन्त्रीवर्ग और भृत्यजनोंपर रख ते थे। निरन्तर प्रेमभावसे समझाकर बात कहते थे एक सामान्य सिपाहीको भी भाई कहकर पुकारते थे। इसके सिवाय उनमें एक परम गुण यह भी था कि अन्य पुरुषके आगे अपने आदमीकी प्रतिष्ठा करते थे।

आपके भृत्यगण भी ऐसे ही सन्तुष्ट रहते थे कि काम पड़े पर जान देनेको मुस्तैद हो जाते थे। यही कारण है कि अनुशासन होते ही सब लोगोंने हाथों हाथ बातकी बातमें ३३ करोड़ देवी देवताओंके खान पानादिका एक वृहत् प्रबन्ध कर दिया। नोन, तेल और लकड़ी पर इनको किसीसे वहस करनेका भी अव सर नहीं आया निस्सन्देह ऐसा ही निरभिमान शील वान् सज्जन पुरुष बड़प्पन और मान करने योग्य होते हैं सच्चे महानुभावोंके ऐसे ही वर्ताव हुआ करते हैं महाराज इन्द्रका सबने समुचित मान किया। यों पर स्पर यथाविधि अभिवादन और कुशलप्रश्नके अनन्तर देवताओंके लिये सोमलताका शरवत बना पञ्चामृत भी बना। शिवजीके लिये न्यारी ठंडाई घोंटीगई।

भैरव दुर्गादि देव देवियोंको सुरापान कराया गया भोजनका घण्टा बजते ही गणेशादि देवगण अपने २ आसनों पर भोजनार्थ आसीन हुए। षट् रस षट्पन व्यञ्जनके परोसेपरसे गये। लेह्य, पेय, चव्य, चोष्य, भक्ष्य, भोज्य, आदि पदार्थोंकी कमी न थी। भोजन थाल खाद्य द्रव्यसे खचाखच भर गया। पाकशालामें कितनी भांति के भोजन थे? यह गिनना कठिन था। पहिला पारस हो जाने पर देवताओंने शचीपतिके आदेशानुसार भोजन करना आरम्भ किया। लम्बोदर सूंड़ उठाय २ अपनी उदरदरीमें लड्डू भरने लगे, हनूमानजी दोनों मुट्ठी मालपुआ और गुड़धानी भसकने लगे। महात्मा कृष्णचन्द्रने पहिले माखन मिसरी पर हाथ लगाया फिर मोहन मठरी तोड़ी। ब्रह्माजी चारों मुंह मोहनभोग उड़ाने लगे भगवान् विष्णुभी यथारुचि खीरके सड़पोंके भरने लगे। शिवजीके भोजनका कुछ ठीक ही न था जिस वस्तु पर हाथ पड़ा हंसते२ उठाकर मुंहमें रखली काली भैरव आदि मांस पर हाथ मारने लगे। सब देव देवियां यथा रुचि अपनी २ प्रसन्नताका खाना खाने लगीं। देव गणोंमें हंसी ठट्ठा भी होता जाता था देवादि देव महादेवने हंसते २ कहा कि सुरेन्द्रजी श्रीकृष्णचन्द्रको बहुत मत परोसना इनका तो निरे मीरफोहा और सुकुमार बनियोंका तरमाल तोड़ते २ मेदा बिगड़ गया है। सुधरे कहांसे एकादशी तककोतो घृतना घी देकर कूटूका हलुआ उड़ाते हैं कि अंगुलियोंका घी धोये नहीं छूटता। बिना परिश्रम किये

अधिक पचता नहीं । ब्रह्माने कहा हां ये बड़े महात्मा हैं । गोपियोंके संग इन्होंने बहुत रहस विलास किया है । सखीभावमें पुजते २ इनमेंभी कुछ सखीभाव आगया है स्त्रियोंको भूख तो बहुत होती है आपमें न जाने क्यों कम है ? हो जहांसे गद्दी परसे उतरे बग्घी पर जा पहुंचे बग्घी परसे फिर गद्दी पर आबैठे

बड़े आदमी, सेठ साहूकारोंके निरे खिलौना हैं । आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्रने भी हंसते २ दो एक छूटें कीं । ब्रह्माकी ओर मुसकरा कर कहा भाई इनकी खबर अच्छी तरह लेना चौमुखे बाबा हैं—फिर शिवजी को सम्बोधन कर कहा कहो भगवन् ? किसी वस्तुका स्वाद भी आया (उंगली उठाकर) येकै हैं ? विष्णुने भी ब्रह्माकी हंसीकी कहने लगे देखो तो कैसे अकाल कैसे मारे चारों गाल भर रहे हो भगीके लिये भी कुछ रहने देना । ब्रह्माने कहा मैं ऐसे बहुरूपियेके कहने पर ध्यान नहीं देता जो मृत्युलोकमें नित्य नयी कला करता है । चिढ़ते क्यों हो तुमतो अनेक रूपसे अपना पेट भर लोगे । फलतः प्रेमभावसे योंही हंसतेबोलते देवता लोग जीमते थे । सबसे ज्यादा खिल्ली महाराज कृष्णचन्द्रकी होतीथी । इतनेमें सहस्र ाक्षने अपनी हजारों आंखे उठाकर चारों ओर दृष्टिकी तो जान पड़ा कि सबके पत्तलोंका खाद्य द्रव्य घट गया है । अमात्य और भृत्यजनोंको खाना लानेका आदेश दिया और आप परोसने लगे चलते २ वाराहजीके पास आये तो देखा कि जो कुछ उनको परोसा था सब ज्योंका त्योंही धरा है । और वाराहजी दीर्घ निःश्वास छोड़

रहे हैं। क्रोधके मारे दोनों नेत्र रक्तवर्ण हो रहे हैं। उस समय उसकी भयावह आकृति देख बोध होता था कि ये अपने तुरंड प्रहारसे त्रैलोक्यको ध्वस्त कर डालेंगे।

एकबार दोबार महात्मा इन्द्रने अतीव नम्रता वा कोमलतासे हाथ जोड़ और गिड़गिड़ा कर विनय प्रार्थना की कि दाससे क्या अपराध बना जिससे आपने अद्यावधि भोजन नहीं किया। किङ्कर जान क्षमा कीजिये। वाराह जी जरा भी नहीं मसके। पत्थरकी मूर्त्तिकी भांति मौनावलम्ब रहे सब देवी देवता इनकी ओर देखने लगे। ऐं!!! यह रङ्गमें भङ्ग क्या होगया खिला हुआ कमल एकाएक क्यों बन्द हो गया पूर्णचन्द्र पर एकबारगी सर्वग्रासी ग्रहण लग गया! सब चकित और विस्मित हो गये। तीसरी बार फिर इन्द्रने निवेदन किया तबतो बाराह जी की क्रोधाग्नि पर कुछ छींटा पड़ा। बोले कि आप इतना कष्ट क्यों करते हैं। औरोंसे पूछिये प्रत्येकको यथारुचि भोजनदीजिये। हम ऐसे अयोग्य जीवों से क्या प्रयोजन है- रुचेगा सो खालेंगे। इस देहके धरनेका यही दण्ड है डूबती धरती निकालनेका यही तो फल है। प्रत्युपकारका यही तो बदला है? धरतीके कृतघ्नर जिनके लिये हमने अतिकष्ट उठाया वे भी तो भली भांति हमारी पूजा अर्चा नहीं करते तो आपका दोषही क्या है? आप तो हमारे राजा हैं। किसीके लिये भांगछनी, किसीको शराब पिलाई गई, किसीने मांस खाया किसीने मोहनभोग उड़ाया, सबको यथारुचि भोजन दिया गया। यहां पूछना भी नहीं कि तुम क्या पसन्द

करते हो। महात्मा एल्ड्र ताड़ गये। मनही मन कहने लगे कि इनको उपयुक्त भोजन नहीं मिला, लाल तो अनुचित ही हुई परन्तु एक व्यक्तिकी आखिर समझा मन मैला करनाभी बुद्धिमानीके बाहर है। लाचारी है क्या किया जाय सोचने लगे " नादानकी दोस्ती जी का जंजाल " उधर भगवान् विष्णुभी अपने अंशावतारका मन मैला जानकर मनहीं मन खिन्न हुये और हास्यभाव वदन मण्डलपर झलकने लगा। शङ्कर भोलानाथने भोले भावसे भगवान् विष्णुको सान्त्वना देने की दृष्टिसे हंसते २ कहा फिर झख मारके वाराहावतार ही क्यों लिया था? किस बेअक्लने तुम्हें यह राय दी थी ब्रह्माजीने भी मुसकराकर ताईद (पुष्टि) की कहने लगे कि इन्हें तो ऐसेही स्वांग भरना बहुत आता है मछली कछुआ और सुअर बनना खेल नहीं तो क्या है एक तो वाहियात स्वांग भरते और पीछे खफा होते हैं। क्या नररूपसे धरतीका उद्धार नहीं हो सकता था? तुण्ड पर ही पृथिवी उठाते अच्छा लगता है इस अवतारकी जरूरत ही क्या थी? शुअर कोई जलका जीव नहीं कि पातालमें आरामसे जा सकता हो कच्छ अवतारसे भी वही काम निकल सकता था कछुआ जल जीव होनेसे पातालमें जिस सुभीतेके साथ जा सकता है शूकर कदापि नहीं ऐसाही जो नया स्वांग भरना था तो नाका घड़ियाल क्यों न बने शिवजी ने फिर हंसकर कहा आप बड़े हैं प्रजाको भोजन देते हैं बड़ीसे बड़ी भूल होने पर भी कोई नहीं कह सकता–

जनहां मन समझ जाइये शान्ति कीजिये क्रोधमें म-
नुष्यका साधारण ज्ञान भी नष्ट हो जाता है। भृगुके
लात मारने पर भी तो आप असन्तुष्ट नहीं हुए थे।
बड़ोंका बड़प्पन तो क्षमा शान्ति ही है "क्षमासारो
हि साधवः„ "क्षमा बड़िनको चाहिये छोटिनको उ-
त्पात०„ और आगेसे बराह जीकी दावतका समुचित
प्रबन्ध किया जायगा कि जिससे उनका मन मैला न
होने पावे, इन्द्रने कहा कि आज ही चित्रगुप्तसे लिखा
कर मर्त्यलोकके सनातनधर्म महासभाके नाम नोटिस
जारी किया जाय कि सब लोग महाराजकी भलीभांति
पूजा अर्चादि सत्कार करें नहीं तो नरकगामी होंगे।
जो इस आज्ञाके विपरीत चलेगा उस पर हमाराकोप
होगा हम सब भाई हैं देवतोंका पद समान है। तुम
सब लोग बड़ी मूर्खता करते हो कि अपने २ उपास्यदेवको
बड़ा औरोंको छोटा बताते हो यह भूलहीं नहीं बल्कि
गुस्ताख़ी है। आयन्दा माफ न होगी, भैरव जीने सेकंड
(समर्थन) किया कहा कि वजह क्या है जो यथावत् बा-
राह जीका पूजन नहीं होता? हमारी सभाने उनको
देवलिस्ट (देवसंख्या) से खारिज नहीं किया है तब
आप लोग क्यों जी छिपा कर कृतघ्न बनते हैं? ये प्र-
त्यक्ष सिद्धि देनेवाले हैं। विष्णुने कहा जो कुछ आप
लोग कहते हैं सच है। परन्तु कोई बात अनियम नहीं
होना चाहिये इस वक्त कोई रिजोल्यूशन (प्रस्ताव)
पास नहीं हो सकता जबतक उस पर पहिलेसे विचार
न करलिया जाय, हम यहां दावत खाने आये हैं न

कि नियम बनाने सूचनापत्रमें यह कोई बात दर्ज नहीं थी कि पंचायतभी होगी ऐसी तो अभी कितनीही बातें तै होनेको हैं क्या आप नहीं जानते कि देवी देवताओं पर व्यभिचारादि कितने ही दोष इन दिनों लगाये गये हैं, अज़ाले हैसियत उर्फीका दावा उन पर आयद हो सकता है। और चूंकि व्यास जीकी उन पर मुहर (छाप) लगाई गई है इसलिये दूसरा जुर्म जाली मुहर करना भी है हम आशा करते हैं कि व्यास जीने कभी देवगणको अपनी कलमसे बुरा नहीं लिखा होगा इनके दस्तखत मिलाना चाहिये बल्कि उनको बुलाकर पूंछा जाय कि यह क्या बात है? क्या आपने रिश्वतलेकर मुहर छाप करदी है या ऐयारोंका फरेब है। ऐसी कई एक बातें पेश होनी ज़रूरी हैं। इस लिये साधारण सभा करना चाहिये और 'सब्जेक्टकमेटी" पहिले उन बातों को जो पेश करने लायक हैं चुनले उनहीं पर साधारण सभामें विचार किया जाय इत्यादि॥

इस कथनके अनन्तर प्रेम पूर्वक सब लोग जीभ जूंठ कर उठे। महात्मा चन्द्रने प्रत्येक बन्धुसे ऐसे प्रेमसे हाथ धलाये जैसी बन्धुभक्ति अभी "कायस्थ कानफ्रेंस" के पीछे कायस्थ कुलभूषण श्री रोशनलालजीने अपने यहां जाति बान्धवोंको दावतकर दिखाई थी। प्रिय पाठकगण! पत्र प्रेरक महाशय लिखते हैं कि अभीतक साधारण बैठक नहीं हुई है। अधिवेशन होकर जो कुछ निश्चित होगा उससे आपको सूचना दीजायगी अभी कुछ दिन आप सन्तोष किये बैठे रहिये॥

* स्वर्गमें सबजेक्टकमेटी *

लीजिये मिस्टर एडिटर आजकी होली (पवित्र) डाकमें मैं आपको उस सभाका वृत्तान्त भेजता हूं जिसका (देवलोकके भोजमें) होना स्थिर हुआ था चूंकि यह कमेटी केवल मृत्युलोकके निवासियोंको शिक्षा देनेके ही वास्ते हुई थी इस लिये आपके समाचार पत्रमें इसका छपवाना बहुत ही आवश्यक है ॥

शरदका अन्त होते ही वसन्तराजका साज चारों ओर छागया भगवान् भुवनभास्करकी किरणोंसे कोमलता ऐसे दूर होने लगी जैसे यौवनप्रवेशमें शिशुताशरमा कर-भाग जाती है, कोकिलोंकी कलरव कानोंको ऐसी प्यारी मालम होने लगी जैसे सत्यके खोजियोंको शास्त्रीय प्रमाणोंसे भरे हुए व्याख्यान सुखदान करते हैं, माधवी लतापर मधप झूम २ कर धूम मचाने और अपनी सुहावनी गुञ्जारोंसे कुञ्जोंको वृन्दावन बनारसकी कुञ्जगली के समान शोभायमान करने लगे। आमोंने और अपना निराला ही तौर दिखाने लगे, मदन महीपके जगत्को जीतने वाले बाण दशों दिशाओंमें छागये जिनकी सनसनाहटको सुनके ललनागण अपने २ प्राणेश्वरोंकी शरण लेने लगीं। कहां तक कहें अनार, कचनार और नरनार होमें नहीं वरन संसार भरके दरोदीवारमें वसन्त की बहार छाई हुई थी ऐसे सुअवसरको देखकर देवराज इन्द्रके प्राइवेट सैक्रेटरीने हाथ जोड़कर प्रार्थनाकी कि हे सहस्राक्ष! आप सब देवताओंके राजा हैं अतएव उन्नति और अवनति आपके ही आधीन है आजकल देवताओंकी बड़ी दुर्दशा होरही है। देखिये जिन २०

करोड़ मनुष्योंपर देवताओंका खान पान वस्त्र आभूषण और स्नान कराना आदि निर्भर है उनमें लाख वा दोलाख ही अब ऐसे आदमी बचे हैं जो देवताओंकी पूजा करते हों नहीं तो सब नमकहराम होकर गूंगापीर, शेखसद्दो, जुम्मापीर, वालेमियां, गाजीमियां, सय्यद मियां मदार, आदि अनगिनत मुर्दोंकी पूजा करते हैं और देवता भूखों मरते हैं। प्रथम तो पूजक लोगोंसे पूज्य देवताओंकी संख्या ही ड्योढ़ी है उसपर भी मुसलमानोंके तथा अंड बंड करोड़ाही मुर्दा पुजवाने लगे हैं इससे देवतोंके घरमें बड़ा भारी दारिद्र आगया है। जब शचीपतिके प्राइवेट सेक्रेटरी प्रार्थना करके बैठगये तब नारदऋषिने खड़े होकर कहना आरम्भ किया। नारद उवाच—बेशक आजकल देवताओंकी बड़ी दुर्दशा है। देखिये! काशीमें अन्नपूर्णा और लक्ष्मी जी एक२ पैसा मांगती हैं विष्णुको ऐसा रोग हो गया है कि वह एक दिनमें ५ वक्त खाते हैं तो भी भूख नहीं जाती है भोलानाथ महादेवजी ऐसे नशेबाज होगये हैं कि धतूरा, गांजा और भांग उनके मुखसे कभी छूटती ही नहीं अब उनको यह दशा होगई है कि उन्हें यह भी ख्याल नहीं रहता है कि मैं नङ्गा हूं व वस्त्र पहने हूं देवगणके विघ्नहर्त्ता श्रीगणेशजी चूहेपर बैठते शर्माते हैं इससे उन्हेंभी स्थूलोदरका रोग होगया है, अतएव आप देवताओंकी उन्नतिका कोई शीघ्र ही उपाय कीजिये॥

इन्द्रने उनके वचनोंको सुनके स्मरण किया कि भोज के समय सबजेक्टकमेटीका प्रस्ताव हुआ था उसहीको क़ब करना चाहिये॥

श्रीमती इन्द्राणीकी सम्मति लेकर नोटिस लिखनेको श्रीविघ्न विनाशक लम्बोदरजी बुलाये गये चूंकि नोटिस सब दिशाओंके दिक्पालोंके पास भेजनेका विचार था इस लिये प्रथम दिशाशूल और योगिनियोंके नाम पर सम्मन जारी किये गये कि तुम लोग सब दिशाओं को छोड़कर फौरन दर्बारमें हाजिर रहो वरना रेल चलाके तुम्हारे सब स्थान तोड़ दिये जायंगे ॥

सम्मनका नाम सुनते ही सम्पूर्ण ग्रह, योग, वार और नक्षत्रोंके सहित दिशाशूल और योगिनियोंने हाजिर होके प्रार्थना की कि आजसे हम लोग मुहूर्त चिन्तामणिके अनुसार देवताओंको तो छोड़ देंगे पर इन्द्र महाराजने एक न मानी और कहा कि तुम लोग नाहक ही लोगोंकी सड़कोंको रोकते हो सो इससे तुमको फांसी देदेना ही बिहतर है। इसपर सबने गिड़गिड़ाकर हाथ जोड़के कहा कि क्षमा कीजिये आज हम लोग दशों दिशाओंको छोड़कर भारत भूमिमें रहेंगे उसमें भी हम ज्योतिषी भड़ुरियोंको अपना दलाल मुक़र्रर करेंगे इन को तो हम दलाली देदेंगे इसके अतिरिक्त यह भी नियत करते हैं कि जो लोग इनका कहना मानेंगे हम उन्हींके मार्गको रोकेंगे औरोंको हरगिज न रोकेंगे खैर महाराज इन्द्रने बृहस्पतिकी जमानतसे सबको छोड़ दिया पश्चात् श्रीगणेशजीसे नोटिस लिखाकर वायुदेवताके सुपुर्द किया और कहा कि ऐसी जल्दीसे सब लोकपालोंके पास जाओ कि कोई हमारा दुश्मन कमेटी के विरुद्ध किसी तरहका तार न भेज सके वायु भी

छ ंचामरूपसे चारों ओरको भागा और पलक मारते ही लौटआया देवतालोग सब्जेक्ट कमेटीका नोटिस पाते ही ऐसे चले जैसे कलकत्तेकी नुमाइशको दर्शक दौड़े थे। ब्रह्मा और ब्रह्माणी हंसपर, शिव पार्वती बैलपर, यमराज भैंसेपर, लक्ष्मीनारायण गरुड़ पर चढ़े हुए आविराजे। श्रीअष्टभुजी सिंह पर सवार हुईं, सब देवदेवी। नद शोण भद्रादिक, नदी, गङ्गा और टेम्स आदिक पर्वत मेरु और हिमांचल आदिक तीर्थ प्रयाग और काशी आदिक राजधानी कलकत्ता और लन्दन आदिक ताल भूपाल और नैनीतालादि और रेल तार आदि कहांतक कहैं चेयर टेबल प्रेस आदि जितने पदार्थ आदि हैं सबके अधिष्ठाता देवता सभामें आकर सुशोभित होगये इस सभामें नब्बे करोड़ देवता उपस्थित थे [अबकी सेंसस (देव गणना) में देवसंख्या बहुत बढ़गई है] जो जिस प्रकृतिका देवता था उसके स्थान और खानपानादिका वैसा ही प्रबन्ध किया गया। प्रथम देवीके वास्ते जर्दे पुलावके सहित शराब भेजी गयी परन्तु उन्होंने कहा कि मैंने इस कारणसे जुलाब लिया है कि अभी नव-रात्रोंमें मुझे सहस्रों बकरे और भैंसोंका मांस खाना है, विष्णुने कहा कि मुझे भी वृन्दावनके ब्रह्मोत्सवमें जाके बहुतसे काम काज करने हैं इस लिये मैं भी नहीं खाऊंगा खैर यों जलपानकी खातिर होनेके पश्चात् रा-त्रिको ठहरनेकी जगह सबको दीगई, ब्रह्माजीको एक ऐसा मकान दिया गया कि जिसकी खिड़की ऐसीं थीं जिनमें ब्रह्माजी कमर लगाये रहैं और मुंह बाहरको—

निकल जाय क्योंकि सोनेसे तो एक मुंहके छिपजानेका भय था शिवजीको श्मशानभवन प्यारा हुआ, विष्णुके वास्ते सजा सजाया कमरा दिया गया विष्णुके अवतार मत्स्य और कच्छपको एक तालाब बतलाया गया परन्तु विचारे बाराहजीको इधर उधर सूंघते ही रात व्यतीत हुई। खैर किसी प्रकारसे सवेरा हुआ और सब लोग नित्यविधिसे छुट्टी पाकर अपने २ डेरोंमें बैठ। इतनेमें महाराज इन्द्रके दूतने आकर सबको सभाका छपा हुआ प्रोग्राम (विज्ञापन) दिया एवं नियत समय में सब लोग अमरपुरीके टौनहालमें पहुंचे।

प्रथम श्रीगणेशजी खड़े हुए परन्तु थोंद बड़ी होने के कारणसे पैर डगमगाये और धोती खुलने लगी बस यह तो मङ्गल पाठ करके बैठगये। तब श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्दने खड़े होकर कहा कि आजकी सभामें देवराज सभापति, एवं चारों लोकपाल उपसभापति बनाये जावें। इसका अनुमोदन श्रीवामन महाराजने इस प्रकारसे किया कि मैंने ब्राह्मणकुलमें जन्म लेकर भिक्षा मांगी और राजा बलिको छला सो केवल देवताओंके उपकारके वास्ते पर देवताओंका दरिद्र तौ भी न गया। अतएव आजकी सभाका उद्देश्य यही है कि किसी भांति छल बल कलसे देवताओंकी उन्नति करनी चाहिये चूंकि इन्द्र सब देवताओंके राजा हैं इस लिये उनको ही सभापति बनाना चाहिये। मीरमजलिसके मुक़र्रर हो जानेके बाद इस रीतिसे कार्य आरम्भ हुआ प्रथम प्रस्ताव देवताओंके मेमार (मकान बनाने वाले राज व घराम) विश्वकर्माने प्रस्ताव किया और वास्तु पति

देवोंने अनुमोदन किया कि हम लोगोंको जो छत्र भ- ङ्गुर और छोट २ मन्दिरोंके बनाने पर दोष लगाया जाता है उसके रोकनेका कोई उपाय किया जाय क्यों- कि जब वे मकान शिकस्त हो जाते हैं तब हमारी का- रीगरीमें बट्टा लगता है । इस पर कमेटीकी राय हुई कि एक सर्क्यूलर ऐसा प्रकाशित किया जाय जिसमें यह लिखा रहे कि पृथ्वीमें जितने मन्दिर हैं उनमेंसे कोई भी विश्वकर्माका बनाया हुआ नहीं बरन वह सब मनुष्योंके बनाये और अन्य स्थानोंके समान अनित्य हैं।

भगवान् ब्रह्माने प्रस्ताव किया कि मर्त्यलोकमें म- हर्षि कृष्णद्वैपायन व्यासके नामसे जो पुराण बने हैं उन में देवताओंकी बहुत निन्दा लिखी है अतएव व्यासको महर्षि मण्डलीसे निकाल दिया जाय इसपर श्रीकृष्ण चन्द्र बोल उठे कि बेशक ऐसा ही करना चाहिये क्यों- कि मुझ भी पुराणोंके सबबसे बहुत शर्मिन्दा होना पड़ता है भला आप ही लोग कहिये कि मुझे क्या द- रकार थी कि जो मक्खन चुराता फिरता ॥

इस पर बाराह महाराज बोल उठ कि भाई श्री- कृष्णचन्द्र जी ठीक कहते हैं पुराणवालोंने हमारी भी बड़ी खराबी की है लिख दिया है कि ब्रह्माकी नाक से बाराह उत्पन्न हुए भला नाकमें क्या बाराह भरे हुए थे इस पर विष्णु भगवान् बोले कि विनाशक पु- राण बनाने वालोंको महर्षि मण्डलसे जरूर ही निका- ल देना चाहिये क्योंकि उन्होंने मुझे बड़े दोष लगाये हैं सोचिये तो सही कि मैं अपनी परमप्यारी लक्ष्मी को त्याग कर जलन्धर राक्षसकी राक्षसी भार्या वृन्दासे-

छलसे व्यभिचार करने क्यों जाता ? क्या हम लोग अधर्मी और वीरता हीन हैं जो जलन्धरको छलसे मारते ? क्या हम राक्षस और मनुष्योंके समान व्यभिचारी हैं जो पराई स्त्रीके सतीत्वको नष्ट करते फिरते हैं यह सब लोगोंने हमें तथा परम पवित्र देवताओंको दोष लगानेके वास्ते पुस्तक रचे हैं ॥

इस पर श्री भोलानाथ जी हंसते २ बोल उठे कि हे देवराज ! पुराणोंका हाल न पूंछिये मुझे तो पुराण वालोंने पानीका दमकलाही बना दिया है जहां जाऊं वहीं गंगाकी धारा जटासे निकला करे भला देखिये तो अगर मेरे पास पम्प होता तो क्या आप लोग ऐसे ही सुखसे बैठे रहते अब तक सबकी लासें वहीं २ फिरतीं और दिल्लगी तो सुनिये हमको तो पुराण वालोंने अजर अमर लिख दिया और हमारी सती स्त्रीको मरने और जन्मने वाली लिखा भला हम क्या ऐसे बेबकूफ थे कि अपने समान स्त्रीसे विवाह न करते? खैर यह तो एक छोटी सी बात है पर यह तो देखिये कि मैं मृत्युलोकमें कब तन्त्र बनानेको गया था मैं शपथ खाके कहता हूं कि मैंने तन्त्रका एक भी पुस्तक नहीं बनाया हां जिन लोगोंने बनाया और तन्त्रका मत चलाया उन्होंने हिकमत अमलीसे बौद्ध और जैनियों की फैलाई हुई कायरताको हिन्दुस्तानसे उठानेके वास्ते ही यह कार्यवाही की थी यह धर्म सिविल वालों के वास्ते नहीं था वरन मिलिटरी लोगोंको उन्मत्त करके शत्रुओंसे लड़ानेके वास्ते ही था जब इस प्रकार उक्त देवताओंने प्रस्तावकी पुष्टि की तब सभापति

महाराजने सबकी सम्मति लेनेको कहा कि जिन लोगों को पुराण वालोंने दोष लगाये हैं वे लोग हाथ उठावें सभापतिके बचन सुनते ही सूर्य, चन्द्रमा, गंगा, सरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली, आदि सब देवदेवियोंने हाथ उठा २ कर अपनी २ सम्मति प्रकाशितकी सबकी सम्मति होने पर सभापतिने खड़े होकर कहा चूंकि पुराण बनाने वालने देवताओंको अजायब घरकी सामग्री मुकर्रर करके बेहूदा तौर पर और बेअदबीके साथ कलङ्क लगाये हैं लिहाज़ा व्यासको बुलाकर सभामें दर्याफ़्त कियाजाय कि उन्होंने ऐसी नाजायज़ कार्यवाही क्यों की ? क्या व्यासने हमारे दुश्मन राक्षसोंसे रिश्वत लेकर यह काम किया है ? व्यासजीके बुलानेको अभी देवर्षिनारद जायं। महाराजा इन्द्रकी आज्ञा पाते ही देवर्षिनारद अपना कमण्डलु लेकर बुलानेको दौड़े मगर रास्तेमें हनुमानजी मिलगये उन्होंने नारदसे पूछा कि देवताओंकी सभामें हमको जाने और बोलनेका अधिकार है वा नहीं ? यानी मुझे जो लोगोंने केशरीपुत्र समझके भी पवनसुत प्रसिद्धकर रक्खा है इस पर तौहीन का मुकद्दमा हो सकता है वा नहीं ? नारदजी ने कहा कि देवता लोग लिबरल (उदार) दलके हैं आप जाके अपनी प्रार्थना सुना सकते हैं खैर थोड़ी देरमें देवर्षिव्यासजीको लेकर सभामें फिर आये तब सभापतिने पूछा कि आपने जो देवताओंको कलङ्क लगाये हैं वह कौनसी वेदकी ऋचाके अनुसार लगाये हैं और जो इसका जवाब ठीक २ न दोगे तो आपसे महर्षि पदवी छीन-

की जायगी भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यास जीने उत्तर दिया कि मैंने एक भी पुराण नहीं बनाया है अगर मैं पुराण बनाता तो अपनी ही उत्पत्ति बुरी क्यों लिखता? असल बात तो यह है कि चारवाक लोगोंमें जो वृहस्पति नामक नास्तिक शिरोमणि हुआ है उसने ये ग्रन्थ अपने शिष्योंसे रचवाये और अपने आप भी रचनाकी हैं मैंने तो अपने शिष्योंको वेदका ही अभ्यास कराया है ब्रह्मनिर्णय के वास्ते केवल वेदान्त शास्त्र बनाया है परन्तु हां एक छोटासा इतिहास २४ हज़ार श्लोकका महाभारत भी बनाया है यदि इनमें कहीं पर भी आप लोगोंकी निन्दा हो तो मैं वेशक कसूरवार हूं और मेरे ऊपर जैसा कसूर आयद हुआ ऐसा ही चार श्लोकी भागवत बनानेका विष्णु पर आयद हो सकता है और मारकण्डेय जी तो अपने नामके पुस्तकके वास्ते पूरे दोषी हैं वृहन्नार-दीय पुराणके वास्ते नारद ऋषि और अनेक पुराणोंके वास्ते श्रीचन्द्रशेखर नीलकण्ठ जी दोषी हैं क्योंकि उन्होंने अपनी स्त्रीको अधिक कथा सुनाई है।

जिस समय व्यासदेव अपनी सफाईकी कोशिश कर रहे थे उस ही समयमें यमराज अपना डंडा लेकर खड़े हो गये और सभापतिसे प्रार्थनाकी कि मैं अपना इ-स्तीफा दाखिल करता हूं क्योंकि मैं जिस इन्तिज़ामके वास्ते यमराज बनाया गया हूं उसे ज़रा भी नहीं क-रने पाता मैं अपने लाखों दूतोंको तनख़ाह देता हूं मगर उनसे कुछ भी काम नहीं करा सकता असंख्य-

रुपये खर्च करके जो नरक बनाये गये हैं वे सब फि-
जूल खाली पड़े हैं और मैं यह भी अर्ज करदेना जरूरी
समझता हूं कि मेरा महकमा निहायत ही फिजूल है।
मैं अपने हेडक्लर्क चित्रगुप्तके रोजनामचेके मुताबिक जब
किसी महापापीके लेने को अपने दूत भेजता हूं तब
विष्णु वा शिवके दूतोंसे फौजदारी हो जाती है आज
कलके बगुला भगत जो हजारों महापाप करकेभी स्वर्ग
अधिकारी हो रहे हैं इसमें तो कुछ सन्देह ही नहीं है
पर एक मुसलमानकी मुक्ति (मोक्ष) होती देखकर मेरे तो
छक्के छूट गये और मैंने निश्चय समझ लिया कि इस सृष्टि
में न्याय नहीं रहा निरी ठकुराई है!!! हाज़रीन
जलसा! एक दिन मैंने चित्रगुप्तके रोजनामचे के मुता-
बिक अपने चार दूतोंको एक मुसलमानको उसके नीच-
तर और भयानक कर्मानुसार लाकर महारौरव नरकमें
डालनेकी आज्ञा दी मेरे दूत उसकी हुलिया लेकर
चले और उसे एक शहरके पासपाखाना फिरते देखा मेरे
दूत वहां बैठकर मृत्युकी बाट देखने लगे इतने में एक
बड़ा भारी सुअर आया उसने मुसलमान के ऐसी ठो-
कर मारी कि उसका प्राणान्त हो गया मरतीवार
मुसलमानने घबड़ाकर कहा "हरामने मारडाला" इस
में रामका नाम भी आया इस लिये विष्णुके दूत दौड़े
हुए आये और मुसलमानको उठाकर बैकुण्ठको ले गये
मेरे दूतोंने विष्णुके दूतोंसे पूछा कि इसने कौनसा ऐसा
सुकर्म किया है कि जिससे इसकी सालोक्य मुक्ति हुई!

मेरे दूतके वचनोंको सुनके विष्णुके दूतोंने यह प्रमाण पढ़ दिया "यश्चित्पापपरायणः पथिसकृत्कर्म यादि„ हे देवगण ! जहां पर ऐसा अन्धेरखाता है वहां पर मैं अधिकारके कामको कदापि नहीं कर सकता हूं और सुनिये जो आदमी जन्मभर पाप करते हैं और भूलसे कभी गङ्गाजल पीलेते हैं बस वे हमारी आईनसे बाहर हो जाते हैं इसके अलावे जबसे गङ्गाजल गङ्गाकी नहर निकली है तबसे तो बिल्कुल नवाबी ही मच गई है क्योंकि गङ्गाजलसे जितनी खेती होती है उस के अनको रेलीब्रादर्स रूस, रूम, फ्रान्स और इंगलैंड, आदि देशोंमें भेज देता है अथवा उसको जो लोग खाते हैं उन पर मेरा कुछ भी अधिकार नहीं रहता है गङ्गा के अतिरिक्त नर्मदा, यमुना आदि और भी अनेक नदी ऐसी हैं जिनके जलको छूते ही पापियोंके पाप ऐसे उड़जाते हैं जैसे तीरके भयसे काक उड़जाते हैं। हे सभापते ! और सभ्यगण ! मैं कहां तक अपनी बेइज्जती कराऊं एक वर्षके ३६० दिन होते हैं उनमेंसे कोई दिन ऐसा नहीं जो व्रतसे खाली हो-भोग मोक्षको देने वाली महाराणी एकादशी तो हमारी पूरी शत्रु पन्द्रहवें दिन खड़ी ही रहती हैं अथवा सालभरमें २४ दिन तो हमको अपनी अदालत बन्द ही रखनी पड़ती है फिर साल भरमें अठारह दिन नवरात्रिके बरबाद ही जाते हैं, पितृपक्ष तो हमारे खास मुहकमेंको छुट्टीका मौसम है उनमें जो लोग मरते हैं उन्हें नरकमें भेजना

अपने मुहकमेंकी वेइज्जती कराना है। भैय्या दूजको हमारी पूजा है, अक्षयतीजको बद्रीनारायणकी पूजा, गणेशचौथको विघ्न विनाशक गणेश जीकी पूजा, पञ्चमी को नाग देवतोंकी पूजा, षष्ठीको स्वामिकार्तिककी पूजा, और सप्तमी और अष्टमीको देवराधा और कृष्ण-भगवान्की पूजा, नवमीको श्रीराघवेन्द्रकी पूजा, दश-मीको कुलदेवोंकी पूजा, ग्यारस जगत्में प्रसिद्ध ही है, द्वादशीको वामन अवतारकी पूजा, तेरसको सरस्वती और हरे शिवजीकी पूजा, चौदसको अनन्तदेवकी आराधना, पूर्णमासीको सत्यनारायणकी अर्चना होती है। रहे वार उनमें रविवारको सूर्य्यका व्रत होता है फिर सोमवारको महादेवका व्रत, मंगलवारको मंगल देवताकी उपासना, बुध बृहस्पति शुक्र और शनि नक्षत्र और ग्रहोंके व्रत रहते हैं अथवा उन दिनोंमें जो लोग मरते हैं उन्हें नरकमें ले जानेके वास्ते सब देवतोंसे हमें हरवक्त झगड़ा करने पड़ता है इस कारण से अब हम अपनी नौकरीसे इस्तीफ़ा देते हैं॥

भला! ऐसी लबड़ धौंधोंमें कौन नौकरी कर सकता है जब कि एक दिन महावारुणीमें स्नान करनेसे एक मनुष्यके तीन करोड़ कुल मुक्ति पाजाते हैं। मैं शपथ करके कहता हूं कि जिन लोगोंको कर्मानुसार मैंने नरक भोगाकर कीड़े मकोड़े और चूहे बिल्ली आदि बनादिया है उनको ढूंढ़ २ कर मुक्ति देने और स्वर्ग-

में पहुंचानेके कार्यमें मैं और मेरे दूत थबड़ा गये हैं। भला! यह भी कोई दिल्लगी है कि एक दो श्लोकोंमें सम्पूर्ण वेद पुराण और धर्मशास्त्रके लाखों पोथीके समेत हमारे कुल दफ़्तरोंके कागजोंको रद्दी बना दिया। अगर मैं अंगरेज़ी पुलिसको रिश्वत देकर हरिद्वारके मेले को न हटवा देता तो परमेश्वरको दूसरी सृष्टिके वास्ते एक भी जीव न मिलता। महाशय! कहां तक कहूं कोई सफेद मिट्टी, कोई रोली, कोई स्याहीकी बेंदी, कोई लाल सफ़ेद चन्दन और कोई हल्दी ही माथे पर लगानेसे, कोई तुलसी और कोईकोई अरहरकी लकड़ी, कोई स्फटिक और रुद्राक्ष व कमलगट्टोंकी माला, पहन व छूकर स्वर्गको चले ही जायंगे—फिर मेरा और मेरे दूतोंका और नरकोंका काम ही क्या रह गया। लिहाज़ा मेरा इस्तीफ़ा मंजूर किया जाय-जहांपर ऐसी अन्धी सरकार है कि जिसके जीमें जो कुछ आवे उसको उसहीसे मुक्ति दे दे तो क्या ताज्जुब है कि कहीं खाटके पाये और सुतरीकी मालासे भी मुक्ति न मिलने लगे जिस सरकारमें मद्य (शराब) पीना, मांस, मीन (मछरी) खाना और मुद्रा मैथुन करना भी मुक्ति दाता समझा जाता है बस उस अन्धी सरकारमें मैं हरगिज़ नौकरी करना नहीं चाहता हूं सोचिये तो सही कि आप लोगों ने और आपके भक्त लोगोंने मुझ और मेरे मुहकमेको कैसा रिशवतखोर और जुबाचोर बना रक्खा है चाहे मनुष्य कितने ही सुकर्म्म करके मरे पर आप लोगोंकी समझमें जबतक श्राद्धमें ब्राह्मणोंको न खिलाया जाय तब

तब उसका प्रेतत्व ही नहीं छूटता। मैं देखता हूं कि जिस पापीको उसके कर्मानुसार पैदल चलाया जाता है उसके वास्ते आप लोगोंके भक्त ब्राह्मणोंके मारफ़त जूता और छत्र भेजते हैं जिन कैदियोंको भयानक कर्म के फलानुसार अन्धतामिस्रादि नरकोंमें जलती हुई भूमि पर सुलानेकी परमेश्वरी कानूनमें आज्ञा है उन के वास्ते शय्यादानकी खटिया उढ़ौने बिछौने सहित अपने सिर पर लादे हुए लाखों महाब्राह्मण (कट्टहा) नरकके द्वार पर खड़े रहते हैं और मेरे दूतोंको रिशवत देकर नरकमें उन वस्तुओंके पहुंचानेका अनुचित यत्न किया करते हैं इसके अतिरिक्त जो लोग पुराण प्रणालीके अनुसार व्रत वा गङ्गा स्नान करके स्वर्गमें चले गये हैं वा सायुज्य मुक्तिको पागये हैं उनके श्राद्धका अन्न व अन्तक्रियाकी अन्य वस्तु भी मेरेही मुहकमेमें डिस्पेच होकर पहुंचती है जिनको यथास्थान पहुंचानेमें मैं असमर्थ हूं। हे सभापते! मुझे ऐसा क्रोध आता है कि इन व्यास जी से जी खोलकर युद्ध करूं क्योंकि ऐसा शख्स लेजिस्लेटिव डिपार्टमेंटमें रखने योग्य नहीं है-बस यातो गरुड़ पुराणको मनसूख किया जाय या मेरा इस्तीफा मंजूर हो। जब यमराज कहकर बैठ गये तब वरुण महाराज उठे और बोले कि पितृपति यमराजका कहना बहुत दुरुस्त है क्योंकि इन्ही व्यास जीने मुझे भी कलार लिख दिया है-भला इनसे पूंछिये तो सही कि शराब मेरी लड़की कैसे हो सकती है जैसे मनुष्य की लड़की मनुष्याकार होती है ऐसे ही मेरी लड़की भी मेरे ही आकारकी होती पर न मालूम इन महा-

स्वामीजीको क्या सूझी कि गुड़ और पानीसे बनी हुई शराबको मेरी बेटी लिख दिया इतने पर भी तुर्रा यह कि समुद्रसे उत्पन्न हुई भी उसहीको कहते हैं ॥

इनके पश्चात् सरस्वती देवी उठीं और कहने लगीं कि बेशक व्यासने मुझे और मेरे पिताको बड़ा भारी दोष लगाया है इस लिये व्यास जीके और उनके ग्रन्थोंके मान्य उठानेका अवश्य कोई प्रबन्ध होना चाहिये चन्द्रमाने भी अपनी मिथ्या कलङ्ककी कथा कहके सरस्वतीके वचनोंको पुष्ट किया ॥

फिर परमप्रतापी भुवनभास्कर (सूर्य) उठे और कहने लगे कि हमें तो व्यास जीने खूब ही बेइज्ज़त किया है भला इनसे कोई पूछे कि जब हम घोड़े बने थे या ब्राह्मण बनकर कुन्तीके घर गये थे तब जगत्में प्रकाश कौन कर रहा था इन्होंने इस कथासे मुझे ही गाली नहीं दी वरन देवतोंके महाविद्वान् वैद्यअश्विनीकुमारोंको भी घोड़ेका पुत्र कह कर गाली दी है मेरा बहुत दिनोंसे इरादा था कि व्यास पर हतक इज्जत(मान हानि) की नालिश करूं ॥

इनके चुप होते ही भगवान् ब्रह्मा डाढ़ा हिलाते हुए खड़े हो गये और कहने लगे कि हे सभ्य लोगो ! जितने दोष पुराणोंके कारण व्यास जी पर लगाये गये हैं मेरी समझमें वे इन दोषोंसे बिलकुल बरी हैं क्योंकि उनकी खासियत ऐसी नहीं है जो किसीकी तौहीन करते वरन वे बड़े भले आदमी हैं जान पड़ता है कि उनको बदनाम करनेके वास्ते चलते पुरजोंने पुराणोंकी षड़न्त की है देखिये तो सही मुझे कमलका कीड़ा ही

लिख दिया है। भला! जब महाप्रलय होगई थी तब जल कहांसे बच गया था और उसमें एक सर्प, कमल और अक्षयवटका वृक्ष तथा उसके आधारकी भूमि मौजूद थी तो महाप्रलय ही वह कैसे कही जा सकती है और दिल्लगी तो सुनिये जब हम कमल पर बैठे हुए थे तब ही विष्णुके कानके मैलसे दो राक्षस उत्पन्न हो गये सोचिये तो सही कि कानमें मल तो तभी जमेगा जब वायु पृथिवीके परमाणुओंको उड़ा कर कानमें इकट्ठा करेगा परन्तु प्रलय कालमें ऐसा होना असम्भव है फिर देखिये कि मुझे ऐसा कायर बनाया कि मैं उन राक्षसोंके डरसे कमलमें घुस गया इससे आश्चर्य यह है कि जो राक्षस विष्णुके सम्मुख मच्छरसे भी तुच्छ थे (क्योंकि कानका आकार शरीरसे तो अवश्य छोटा होगा) फिर विष्णु मारवाड़ियोंके समान मैले या अफीमची तो हैं ही नहीं जिनके कानमें टोकरों मैल भरा होता खैर जो थोड़ा बहुत मैल था उसहीके वे राक्षस बने हुए थे सो थोड़ा बहुत युद्ध करके भी नहीं मरे पांच हज़ार वर्ष तक लड़ते ही रहे इतने पर भी तुर्रा यह है कि विष्णुकी यह हिम्मत न हुई कि जूंके समान राक्षसोंको मार सकते खैर तब हम दोनोंको देवीकी शरण लेनी पड़ी यदि यहीं तक बेइज्ज़ती होती तो भी हम भुगत लेते। पर देवीभागवतमें हम तीनों देवतोंकी ऐसी भद्द उड़ाई है कि जिसको पढ़नेसे हमारी सारी कलई खुलजाती है। देखिये हमारी उत्पत्तिकी कैसी खराबी की है लिखा है कि देवीने तीन ताली बजाईं उनसे हाथमें तीन छाले पड़े उन छालोंके फोड़नेसे

हम तीनों अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव उत्पन्न हुए फिर तीनों ही सृष्टि करनेमें असमर्थ हुए तब मणिद्वीप में ले जानेके वास्ते तीन विमान आये—उन पर बैठ कर हम तीनों मणिद्वीपको चले रास्ते में हजारों ब्रह्मा, हजारों विष्णु और हजारों महादेव देखे इस पर भी दिल्लगी यह है कि मणिद्वीपमें जाते ही हम तीनों स्त्री होगये सोचिये तो सही कि इससे अधिक और हमारी बेइज्जती क्या हो सकती है ? फिर जब मेरे ही लड़के सनकादिकोंने मुझसे ही जीव और ब्रह्म विषयका प्रश्न किया तो मुझमें इतनी भी बुद्धि न रही कि मैं उन्हें कुछ भी जवाब देता तब मुझे चिड़ियाका चेला होना पड़ा मुझमें चिड़ियाके बराबर भी बुद्धि न रही ! फिर महाराजकी जय रहे मुझे पुत्री-गमनका भी दोष लगाया और यह भी लिखते लज्जा न आई कि ब्रह्मा, ब्रह्माकी पुत्री और महादेवका बाण तारे बन गये यानी आज तक भी मृगशिरा नक्षत्र वेही निकलते हैं ॥

हमारे परम प्यारे भोलानाथको तो ऐसा बनाया कि एक स्त्रीके शापसे शिवलिङ्ग ही गिर पड़ा फिर समुद्र मथनेके समय विष्णु स्त्री बन गये और महादेव उनके पीछे दौड़े जरा भी खबर न रही कि ये हमारे भाई विष्णु भगवान् हैं । क्या व्यास जी कभी ऐसी बात लिख सकते थे ? हरगिज़ नहीं विष्णुकी तो पुराण बनाने वालेने बड़ी दिल्लगी उड़ाई है कि जिसको सुन के मारे हंसीके रहा नहीं जाता है देवी भागवतमें

लिखा है कि एक राक्षसको मारनेके पश्चात् विष्णु को निद्रा आगई तब विष्णु अपने धनुषके एक कोने पर ठोड़ी रख कर औंघगये उनको औंघते कई करोड़ वर्ष बीत गये इतनेमें एक और राक्षस पैदा हो गया तब देवतोंको उसके मारनेकी बड़ी चिन्ता हुई मुझ और भोलानाथको संग लेकर सब देवता विष्णु को ढूढ़ने चले पर विष्णुका कहीं भी पता न चला आखिर मालूम हुआ कि हज़रत एक पहाड़की गुफामें छिपे बैठे हैं तब सब देवता वहीं पहुंचे और विष्णुके जगानेका उपाय सोचने लगे आख़िरश मेरी भौहोंसे उड़ने वाला एक कीड़ा निकला और कहने लगा कि मैं विष्णुको जगा सकताहूं मगर किसीको नाहक़ ही जगाना एजुकेटेड (शिक्षित) और सिविलाइज़्ड (सभ्य) लोगोंकी खासियतसे बाहर है इस लिये मैं विष्णुको नहीं जगा सकता हूं इस बातको सुनके सब देवता घबड़ाये और बोले कि हम आजसे यज्ञमें तुमको भाग दिया करेंगे बस ऐसा लोभ देकर उस कीड़ेको राजी किया और उसने यह सोचकर कि कमानके रोदेको काटनेसे कमान का कोना स्प्रिङ्गकी माफिक उठगा और विष्णुको जगा देगा प्रत्यञ्चाको काटा मगर उससे विष्णुका सिर ही कटकर उड़गया तब तो देवता लोग ऐसे घबड़ाये जैसे नैपोलियन बोनापार्टके पकड़ जानेसे फ्रेंच लोग घबड़ाये थे। परन्तु उस ही वक्त आकाशबाणी हुई कि यह सब देवीकी माया है घबड़ाओ मत विष्णुने मेरी शक्ति (लक्ष्मीकी) इस कारणसे हंसी करी थी कि उनका भाई उच्चश्रवा घोड़ा है बस विष्णुके शरीरपर घोड़ेका

शिर रख दो तो अभी जाग जायंगे—भला ! सोचिये तो अटल्ल काफियोंकी बातें। क्या व्यासजी ऐसा लिख-सकते हैं ? उम्र दराजी वा दीर्घायुके विषयमें जो पुराण वालोंने बातें लिखी हैं उनको यहांपर बयान करना सभासदोंके वक्तको नाहक ही ख़राब करना है बस इ-तने हीसे समझ जाइये कि विष्णु ही क्या सब देवतों से बड़ा कौवा और एक कछुआ है ॥

जिस गङ्गाको सृष्टिके वे सब लोग जिनको ईश्वरने आंख दी है जल ही मानते हैं मगर हज़रतोंने उसे स्त्री सुतरंर कर दिया है। उससे लड़के पैदा होने लगे और फिर उस ही गङ्गामाईको पुत्रघातका दोष लगाया हा-स्टिल कलाम यह है कि ऐसी असम्भव घड़न्त व्यासजी हरगिज़ नहीं कर सकते हैं अब व्यासजीसे पूछना चा-हिये कि पुराणोंकी असलियत क्या है ? हां एक बात कहना तो मैं भूल ही गया जब हम तीनों देवता मणि द्वीपमें जाकर स्त्री बनगये थे उस समय हमको यह भी खबर नहीं रही कि हम कभी पुरुषभाषे खैर उस अज्ञान को दूर करनेके वास्ते देवीने हम लोगोंको अपने पैरके अंगूठेमें सारी खिलकत दिखलादी। क्योंजी वह पैर का अंगूठा था वा सैरबीन थी। क्या यह मुसलमानोंकी हाज़रातकी नकल नहीं है ? फिर जिस भागवतको मनुष्य पुराणशिरोमणि मानते हैं उसमें तो मुझे प्रत्यक्ष ही अज्ञानी और चोर लिखा है जब कि हम सब देवतों ने ही विष्णुसे कृष्णावतार लेनेकी प्रार्थनाकी थी और उन्होंने हमारे कहने हीसे अवतार लिया था तो क्या हमको यह भी याद न रहता। हे सभापते ! यहआपके

दफ़्तरोंमें भी जरूर ही लिखी पड़ी होगी कि पृथ्वी जब गौ बनके वहां आई थी तब सब देवतोंके कहनेसे विष्णु ने कृष्णका अवतार लिया था पर मुझे और आपको कुछ भी याद न रहा मैंने कृष्णकी गायें चुराईं और आपने ऐसी बेअदबीकी कि पानी ही बरसाते रहे खैर हम भूले सो भूले पर कृष्ण भी भूलगये और चोरी रूप कुकर्म करनेसे पहिले हमें यह न बतला दिया कि हम विष्णु हैं व्रजके लोगोंको आपसे नाहक तकलीफ दिलवाई अगर यह पहिले ही कह देते कि हम विष्णु के अवतार हैं तो काहेको इतने झमेले होते मालूम होता है कि कृष्ण भी भूलगये थे। भला यह तो सोचिये कि कृष्णके जन्मके पश्चात् हजार फण वाले शेषनाग जी कीड़ाका रूप धरके सूपमें तो आबैठे परन्तु इतना न हुआ कि अपने भाई कालीको समझा देते कि यह हमारे स्वामी विष्णुके अवतार हैं इनसे खबरदार रहना॥

मैं बहुत ही मुनासिब समझता हूं कि पुराणोंको तवारीखकी फिहरिस्तसे खारिज करदिया जाय क्योंकि इनमें बड़ मुबालगे भरे हैं—देखिये महाभारतके युद्धमें जब १८ अक्षौहिणी सेना एकत्रित हुई थी तब जगत्में केवल बालक और वृद्ध ही बाकी रहगये थे परन्तु भागवतमें लिखा है कि जरासन्ध १८ वार तेईस २ अक्षौहिणी सेना लेकर चढ़ २आया किन्तु जगत्में कुछ भी कोलाहल न मचा फिर मुचकुन्द और राजानृगकी कथा गरुड़जीके अमृत लानेकी कथा सरासर मुबालिगा है इस लिये पुराणोंको तवारीखकी फिहरिस्तसे काटदेना

चाहिये गरुड़के विषयमें लिख दिया है कि जब वह अमृत लेनेको चले तब उनको स्वयं भूख लगी तब वह अपने पिताके पास गये और कहा कि मुझे बड़ी भूख लगी है उनके पिताने एक देश बताया कि तुम वहांके सब निवासियोंको खाओ पर ब्राह्मणको मत खाना गरुड़ने अपने पितासे फिर पूंछा कि मैं ब्राह्मणको कैसे पहचानूंगा। गरुड़के पिताने उत्तर दिया कि जो तेरे पेटमें न पचे और हरिणके मुवाफिक कूदता फिरे उसे तुम ब्राह्मण समझना। गरुड़ अपने पिताके वचन सुन के निर्दिष्ट देशमें गये और देखा कि वहां कहार ही रहते हैं गरुड़जीने ऐसी चोंच फैलाई कि उक्त देश-के सम्पूर्ण निवासी सांसके संग उनके पेटमें चले गये और जठराग्निसे पचने लगे परन्तु एक मनुष्य गरुड़के पेटमें घोड़ासा कूदता रहा। तब गरुड़जीने कहा कि जान पड़ता है कि तू ब्राह्मण है अतएव मेरे पेटमेंसे नि-कल आ। उस ब्राह्मणने कहा कि हां हूं तो मैं ब्राह्म-ण ही पर एक कहारिनको घरमें रखनेसे मैं भी कहार होगया हूं अगर आप मुझे निकालना ही चाहते हैं तो मेरी कहारिनको भी निकालिये। क्योंजी अगर गरुड़ को जरासा चूरन देदिया जाता तो कहिये गरुड़को ब्राह्मण हत्या और ब्राह्मणीहत्या जरूर ही लगती?

इत्यादि अनेक बातें कहकर चौमुखे बाबा जब बैठ गये तभी एक स्त्रीने आकर इन्द्रके सम्मुख एक अर्जी रखदी उसको बैठनेकी आज्ञा दी और आप अर्जीको उठाकर सब देवतोंको सुनाने लगे अर्जीमें यह मजमून था। कि हे धर्मप्रवर्त्तक देवगण! और देवराज! मैंने जिबनी

श्रुति स्मृति पढ़ीं वा सुनी हैं उन सबसे यही निश्चय हुआ है कि जगत्में सतीत्व धर्मके समान और कोई भी धर्म नहीं है। अतएव मैंने उसका पालन बड़े परिश्रम और उत्साहसे किया था परन्तु विष्णुने मेरा व्रत भंग करदिया और मेरे पतिको मार मेरा सब राजपाट नष्ट भ्रष्ट कर दिया अब मैं तुलसीके वृक्षकी खोखरमें घुसी बैठी र-हती हूं पर वहां भी मेरे शत्रु विष्णुके भक्त मुझे सदा कष्ट देते रहते हैं। तुलसीदल तोड़कर चबा जाते हैं तुल-सीके वृक्षको काटकर माला बना लेते हैं हासिल कलाम यह है कि मुझे अबतक भी विष्णुके भक्तोंने भूत बनारक्खा है। विष्णुका हाल यह है कि इन्होंने गर्गसंहिता और एकादशी माहात्म्यके मुताबिक एक वेश्याको अपनी पत्नी बनाया और मुझ पतिव्रताकी यह दुर्दशा की!!!

महाशय गण! इस कलङ्कसे ही मेरी स्वजातीय देवी मेरा अपमान करती हैं देखिये लिखा है "तुलसी ग-न्धमात्रेण रुष्टा भवति सुन्दरी,, खैर मैं किसी न किसी प्रकारसे उस वृक्षमें दिन काटती थी परन्तु इन वि-ष्णुके मुज़ावर मुझे वहां भी चैन नहीं लेने देते हैं एक ही वर्षमें मेरा अनेकवार विवाह कराते हैं। भला क-हिये तो क्या करते हैं? विवाह भी यदि कुछ समझके करते तो भी कुछ मेरा सन्तोष होता पर नहीं वह वि-वाह शालिग्राम शिलासे बिलकुल विजातीयपन है-यदि इन भक्तोंका विवाह चक्कीके सङ्ग कर दिया जाय तो उन्हें ज्ञात होजाय कि अनमेल विवाहका क्या फल है? हे सभापते! मेरी प्रार्थना पर विचार अवश्यमेव होना चाहिये। वृन्दाकी अर्जी क़बूल हुई और हुक्म हुआ—

कि इसके ऊपर विचार किया जायगा ।

इसके बाद नरसिंह भगवान् खड़े हुए और कहने लगे कि महादेवके भक्तोंने मेरी बड़ी ही भद्द उड़ाई है जब व्यासको दोष लगाने वाले पुराणप्रणेताओंने ऐसी श्लाघासे असम्भव समूहके तांते लगा दिये तब शिवके भक्तोंने लिखा कि नृसिंहजीका क्रोध शान्त न हुआ तब शिवने शरभशालभ पक्षिराजका रूप धारण किया और मुझे (नृसिंहको) पञ्जोंमें दबाकर उड़ गये तथा कई हज़ार वर्ष तक लिये ही फिरते रहे जब मैं बहुत दुर्बल और निःशक्ति होगया तब मैंने शरभ पक्षिराज की स्तुति करी यह स्तुति दारुण समय के नामसे आकाश भैरव तन्त्रमें अबतक लिखी पड़ी है कहिये तो सही क्या यह सब कथा चोरोंके घर लाचारेके समान नहीं है?

नृसिंह भगवान्के वचनोंकी ताईद श्रीराघवेन्द्र रामचन्द्रने भी की और कहा कि बेशक मृत्युलोकके मनुष्य ऐसेही कृतघ्न हैं वे क्षणमात्रमें किये कराये को मेंट देते हैं देखिये मैंने कैसी मिहनत और बुद्धिमानीसे रावणको मारा मगर मृत्युलोक वालोंने अद्भुत रामायण गढ़के मेरे सब यशको धूलिमें मिला दिया ।

इन सब व्याख्यानोंको सुनके देवराज इन्द्र खड़े हुए और कहने लगे कि बेशक पुराणोंमें बहुत कुछ गड़बड़ज्ञान पड़ता है देखिये एक कथा सृष्टिक्रमके विरुद्ध और असम्भव लिखी है । राजा मान्धाताकी उत्पत्ति सुनके किसको हंसी नहीं आवेगी लिखा है कि राजा वृहदश्व शापके वशीभूत होके जंगलोंमें ठोकरें खाते फिरते थे एक दिन वह अचानक ऋषियोंके आश्रममें पहुंच गये

वहां ऋषियोंने एक दूसरे राजाके वास्ते पुत्रेष्टियज्ञ किया था और यज्ञमें वेदमन्त्रोंसे संस्कृत हुआ जल इस अभिप्रायसे भरा हुआ रक्खा था कि जो स्त्री इसको पीवेगी उसके गर्भ रह जायगा। परन्तु जिस समय सब ऋषिलोग सोगये उसी समय राजा वृहदश्वने आकर उस जलको पीलिया जब ऋषिलोग जगे तब देखा कि जल नदारद तबतो वे बड़े घबड़ाये और जलके पीने वालेको ढूढ़ने लगे। तहकीकात करनेसे ज्ञात हुआ कि राजा वृहदश्वने जल पिया है तब ऋषियोंने कहा कि हमारा वचन कभी झूंठ नहीं हो सकता है इन राजाके पेटसे जरूर बिल जरूर लड़का पैदा होगा बस ऐसा कहतेही राजा वृहदश्वके गर्भ रहगया और ९ महीनेके बाद लड़का पैदा हुआ। लड़का पैदा होनेसे राजा वृहदश्व मर गये तब ऋषियोंने आबेहयात (अमृत) पिलाके उन्हें जिला लिया पर लड़केको दूध कौन पिलावे तब मुझे बुलवाया मैंने उसे दूध पिलाया। ऐ! हाज़रीन जलसा यह किस्सा क्या इस पहेलीके मुताबिक सही नहीं है।

सास कुआंरी बहू पेटसे, ननद पंजीरी खाय।
देखन वाली लड़का जन्मे बांझिन दूध पिलाय॥

खैर और तो सब कुछ ऋषियोंके बचनसे होगया परन्तु गर्भाशय (बच्चेदानी) जो पुरुषोंके शरीरमें ईश्वरने रचा ही नहीं है क्योंकर बन गया क्या वह पानी ईश्वरका भी चचा था कि झटसे बच्चेदानी बनादी खैर हुई सो बीती पर आगेको समझना चाहिये कि ऐसे अटल्ल काफियोंका कुछ काम नहीं है सिर्फ व्यासजी के इज़हार और उनके पुत्र शुकदेवकी साक्षी लेकर रिजो-

ल्यूशन (प्रस्ताव) पास किया जाय और साधारण सभा करके सबको सुना दिया जाय।

श्री व्यास जी सभामें खड़े होकर कहने लगे कि मेरी सफाईके इज़हारसे पहिले मेरे पुत्र शुकदेवके इ-ज़हार होने चाहिये। इसपर सभापतिने आज्ञा दी कि मुक्तिसे लौटाकर लानेकी हमें शक्ति नहीं है क्योंकि मुक्त जीव हमारी आईनसे बाहर हैं परन्तु हम सन-कादिकोंसे प्रार्थना करते हैं कि वे मुक्त शुकदेवजीको किसी प्रकारसे सभामें लेआवें।

सभापतिकी आज्ञा सुनते ही सनकादिक ऋषि शु-कदेवके लिवा लानेको चले और ज्योंहीं सभाके मण्डप के फाटक पर पहुंचे त्योंहीं देखा कि श्री शुकदेवजी देवतोंके बालकोंके साथ गेंद बल्ला खेल रहे हैं– उन्हें देख सनकादिकोंने प्रणाम किया और कहा कि इन्द्र महाराजने आपको सबजेक्ट कमेटीमें याद किया है।

श्रीशुकदेवजीने उत्तर दिया कि हम मुक्त जीव हैं हम पर इन्द्रकी आज्ञा नहीं चलसकती है जा मौज होगी तो चले आयेंगे।

इस कठोर जवाबको सुनकर सनकादिक अपना सा मुंह लिये रह गये और मन मलिन करके चल दिये।

इधर शुकदेवजी गेंदखिलैया क्रिकेटरोंके सहित धौल धप्पड़ खेलते हुए देवतोंकी सभामें पहुंचे इनको देखते ही सब देवता खड़े हो गये और इनके सङ्गी लड़कों को बड़ी मुशकिलसे निकलवाया, जब शुकदेव ऋषि स्वस्थ होकर बैठ गये तब सभापतिने बड़े नम्रभावसे पूछा कि हे भगवन्! आपने अपने पितासे श्रीमद्भाग-

वत पढ़के क्या सब परीक्षितको सुनाई थी ? श्री शुक-देव महाराज हंसकर बोले कि हे देवराज ! क्या आप सरीखे बुद्धिमान् भी पुराणों पर विश्वास करते हैं ? यदि विश्वास ही था तो मेरे बुलानेकी क्या ज़रूरत थी ? क्योंकि भागवत सच्ची होती तो सभाकी चेयर टेबि-ल (कुर्सी मेज) सब आपको जवाब देतीं। देखिये भागवतमें लिखा है ॥

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं द्वैपायनो विरह कातर आजुहाव। पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु:० इत्यादि ॥

अर्थात् उन शुकदेव मुनिको मैं नमस्कार करता हूं जो सब भूतोंके हृदयमें निवास करते हैं जो शुकदेव मुनि जन्म लेते ही भगे और व्यास उनके पीछे २ पुत्र ! पुकारते भगे तब व्यासजीको वृक्षोंने उत्तर दिया। बस इस श्लोकके मुताबिक आप लोगोंको चाहिये था कि जो कुछ मुझसे पूछने लायक बात थी उसीको किसी मेज वा कुर्सीसे पूछ लेते ! क्या आप लोग यह भी नहीं जा-नते कि परीक्षितके बापकी नहीं बरन उनकी ४ पीढ़ी पहले ही मेरी मृत्यु हो चुकी थी तब मैं परीक्षितको भागवत् कैसे सुनाता ? गुस्ताख़ी माफ हो इस बारेमें तो आपकी अकल चकरा गई है। भला तुम वेदको छोड़के किस्से कहानी (जटल्लकाफ़िये) क्यों पढ़ते सुनाते? ऐसे पुस्तकोंके वास्ते मुझे यही कहना पड़ता है कि इनको बिलकुल बन्द कर दिया जाय देखिये तो मेरी उत्पत्तिमें कैसी दिल्लगी उड़ाई है। हे सभापते ! आप निश्चय कीजिये

कि मेरे पिताने कदापि ऐसी पुस्तक नहीं बनाई और न मैंने ही भागवतका सप्ताह बांचा।

श्रीमान् शुकदेव महाराजके इज़हार होते ही सभा पति महाराजने खड़े होकर और सब सभासदोंको स-म्बोधन करके कहा कि अब अधिक सबूत लेने और गवाहोंको अधिक कष्ट देनेकी आवश्कता नहीं है क्योंकि जितने लोगोंकी अब तक गवाही ली गई हैं उनसे साफ़ २ ज़ाहिर है कि महर्षि व्यासदेवने पुराणों को नहीं बनाया और इससे यह भी साबित हो गया है कि लोगोंने श्रीमहर्षि मारकण्डेय आदिके नामसे भी जाली पुस्तक रच कर चला लिये हैं, लिहाज़ा महर्षि व्यास देवको आज्ञा दीजाती है कि वे थोड़ेसे श्लोक पुराणोंके खण्डनार्थ बनाकर किसी समाचार पत्रमें छपवादें और सब लोगोंको ताकीदभी करदी जाय कि प्रातःकाल सब लोग उठके प्रातः सन्ध्याके समय उनका पाठ किया करें

सभापतिकी आज्ञाको सुनते ही महर्षि कृष्णद्वैपा-यन खड़े होकर श्लोक पढ़ने लगे। [हमारे स्वर्गीय समाचारदाताने व्यासप्रणीत श्लोकोंकी एक प्रति हमारे पास लास्टमेल (अखीरी डांक) में भेजी है हम पाठकों के अवलोकनार्थ उसे ज्योंकी त्यों प्रकाशित किये देते हैं।

व्यास उवाच।

वेदोऽस्त्यखिलविद्यानां निधिरेव प्रकीर्तितः।
तमधीत्य शुभज्ञानमाप्तव्यं विबुधैर्बुधि ॥ १ ॥
अजां प्रकृतिमादाय ससर्ज सकलं जगत्।

जीवकर्मानुसारेण योनिप्राधयतीश्वरः ॥ २ ॥
मंव्याप्यमीश्वरस्येदं विश्वंस्थावरजङ्गमम् ।
तस्माद्भीतेन जीवेन कर्म कार्य्यं सुरेश्वर ! ॥ ३ ॥
सर्वशक्तिमतो जन्मासम्भावीति विनिश्चयः ।
अवतारकथा तस्मान्न श्रद्धेया विचक्षणैः ॥ ४ ॥
रामकृष्णादयः सर्वे बभूवुर्वेदपारगाः ।
साक्षाद्धर्मस्य कर्त्तारस्तस्मान्मान्याहिते स्मृताः ५
न कृष्णेन कृतं चौर्य्यं परदाराभिमर्शनम् ।
लाञ्छनं ज्ञानहीनैस्तु नास्तिकैःसम्प्रदर्शितम् । ६ ।
क्रूरयोनावीश्वरस्य प्रादुर्भावो न वैदिकः ।
बौद्धैरेवहि दोषाणामद्रिरेष निपातितः ॥ ७ ॥
देवबुध्या शिलादीनामर्चनञ्चैवशाश्वतम् ।
बौद्धै र्बुद्धिविहीनैस्तु प्रपञ्चोऽयं प्रकाशितः ॥ ८ ॥
मदमोहरता ये च पाखण्डाः पापकारिणः ।
धर्म्मव्याजेन ते सर्वे संसारं वञ्चयन्ति वै ॥ ९ ॥
स्थापयित्वालये मूर्त्तिं तदग्रेपण्ययोषिताम् ।
नृत्यंपश्यन्ति निर्लज्जाः किं ब्रूमोगर्हितं बुधाः १०
अहो ! लोकस्य जाड्यं वै गुरवो विषयैषिणः ।
आत्मनामत्नारज्ञः शिष्यशासनतत्पराः ॥ ११ ॥
नाधीता वेदशास्त्राणामेका पङ्क्तिर्गुरोस्तु यैः ।
तैचापि गुरुभावेन पूजां प्राप्य सुखंगताः ॥ १२ ॥

अब्रवीच्चैतन् निश्चयेन शृण्वन्तु सुरसत्तमाः ।
विदुषामादरतः सद्यः स्वर्गं यातीह मानवः ॥१३॥
तथैवाज्ञास्तु शिष्यास्तु सर्वे निरयगामिनः ।
तस्मान् मूर्खमनादृत्य वेदज्ञं गुरुमर्चयेत् ॥ १४ ॥
पण्डिता यत्र पूज्यन्ते स देशः श्रीमतां खलु ।
तस्मिन्नेवहि निष्पन्नो न्यायवान् राजते नृपः ।१५।
ये यथा कर्म कुर्वन्ति तेषां संज्ञा तथाविधा ।
वेदाभ्यासरता विप्राः क्षत्रिया युद्धकाङ्क्षिणः ।१६।
एवमेव विशः शूद्रास्तथान्ये पुरुषर्षभाः ।
कर्मानुरूपांजात्याख्यां लभन्ते जगतीतले ॥ १७ ॥
न मार्जयति पापानि गंगाम्भोपि कथञ्चन ।
कामकारकृतं कर्म फलं साधयति ध्रुवम् ॥ १८ ॥
तस्माद्यत्नेन कार्याणि सुकर्माणि मुमुक्षुणा ।
मनोनिवेशयन् पापे नरः पापमतिं व्रजेत् ॥ १९ ॥
सत्यव्रतं नराणान्तु नारीणां पतिसेवनम् ।
मोक्षदं कीर्त्तितं वेदे नान्यं त्यक्त्वा व्रती भवेत् ।२०।
न चाप्येकादशी पुण्या न पापाद्वादशी मता ।
न दिक्शूलं न योगाश्च नराणां कार्यनाशनाः ।२१।
जाठराग्नेर्मन्दतायां भोजनं हितनाशकम् ।
तस्माद्बुद्धिमताकार्यमशनं विधिपूर्वकम् ॥२२॥

भाषार्थः—महर्षि व्यास जी बोले वेद ही सम्पूर्ण विद्याओंका खज़ाना है उस वेदको पढ़कर जगत्में

मनुष्योंको ईश्वरका ज्ञान प्राप्त करना चाहिये ॥१॥ ईश्वर ने अनादि प्रकृति अर्थात् परमाणुओंको लेकर सब जगत्को बनाया और जीवोंके कर्मानुसार अनेक प्रकार की योनि भी ईश्वरने रचीं तात्पर्य यह है कि जगत्का उपादान कारण प्रकृति, निमित्त कारण ईश्वर और साधारण कारण जीवोंके कर्म हैं ॥ २ ॥ यह जड़ और चैतन्यमय सम्पूर्ण जगत् ईश्वरका व्याप्य है अर्थात् जगत्में कोई भी ऐसा वस्तु नहीं जिसमें ईश्वर न हो अतएव जीवको चाहिये कि सर्वदा और सर्वत्र ईश्वर से डरकर कर्म करे अभिप्राय यह है कि मनुष्यको कभी यह न समझना चाहिये कि मुझ यहां कोई पाप करते न देखेगा क्योंकि ईश्वर सर्वत्र व्यापक है और वही कर्म फलको देता है अतएव छिपाकर भी पाप न करे ॥३॥ सर्वशक्तिमान् का जन्म होना असम्भव है क्योंकि जो अल्पशक्ति वाला और एक देशी है वा कर्मोंके बन्धन में बन्धा हुआ है उसको ही जन्म लेना पड़ता है परन्तु ईश्वर सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापी और कर्म बन्धन से रहित है अतएव उसका जन्म होना असम्भव है इस हेतुसे परमेश्वरके अवतार लेनेकी कथा पर किसी को विश्वास न करना चाहिये ॥ ४ ॥ राम और कृष्ण आदि सब महात्मा वेदको साङ्गोपाङ्ग पढ़े थे वे धर्म को प्रत्यक्ष दिखाने वाले थे इसी कारणसे वे मान्य माने जाते थे ॥५॥ श्रीकृष्ण महाराजने चोरी और पराई स्त्रियोंसे व्यभिचार नहीं किया था किन्तु नास्तिकोंने झूठे कलङ्क प्रकाशित करदिये हैं ॥ ६ ॥ क्रू

शूकरादि योनियोंमें ईश्वरका जन्म लेना वेदोंमें नहीं लिखा है परन्तु बुद्धिहीन बौद्धोंने यह दोषोंका पहाड़ ईश्वर पर डाल दिया है ॥७॥ पत्थर आदिकोंमें देवता बुद्धि करके पूजा करना उत्तम वा सनातन नहीं है किन्तु बौद्धोंने ही इस प्रपञ्चको जगत्में फैलायाहै ॥८॥ जो लोग मद अर्थात् द्रव्यादिके अभिमान और स्त्री आदिके मोहमें फंसे पाखण्डों और पापके करने वाले हैं वही धर्म के वहानेसे संसारको ठगते हैं ॥९॥ मन्दिरमें मूर्त्तिकोस्थापित करके उसके सन्मुख ही निर्लज्ज मुसल्मानी वेश्यायोंका नाच देखते हैं ऐसे कुकर्मों को हम क्या कहें ॥१०॥ अहः ! संसारकी मूर्खतापर शोच होता है कि अपनेको ईश्वरका अवतार मानते हैं आप कुछ भी नहीं पढ़े परन्तु शिष्योंको उपदेश करनेमें तत्पर रहते हैं ॥११॥ जिन लोगोंने गुरुसे वेद वा शास्त्र की १ पङ्क्तिभी नहीं पढ़ी वे ही गुरु वनके पुजते और चैन उड़ाते हैं ॥१२॥ हे देव लोगो ! मैं निश्चय पूर्वक कहता हूं कि विद्वान् अर्थात् यथार्थ ज्ञानियोंकी सेवा करनेसे ही मनुष्यको सुख प्राप्त होता है ॥१३॥ ऐसे ही मूर्खों को जो लोग गुरु बनाते हैं वे सब नरकमें जाते हैं इस लिये मूर्खों को न माने और वेद जानने वाले गुरुकी सेवा करें ॥१४॥ जिस देशमें विद्वान् अर्थात् ज्ञानियोंका मान होता है उसही देशमें लक्ष्मी रहती है और वहीं पर पक्षपात रहित न्यायकारी राजा आनन्दसे राज्य करता है ॥ १५ ॥ जो मनुष्य जैसा कर्म

करता है उसको वैसी ही संज्ञा होती है जैसे वेदहीना जो सदा अभ्यास करते हैं वे ब्राह्मण और जो वेद पढ़ कर युद्धकी अभिलाषा करते हैं वे क्षत्रिय कहाते हैं ॥१६॥ इसी प्रकारसे बनिये और शूद्रादि लोग भी अपने अपने कर्मानुसार जातिके नामको धारण करते हैं ॥१७॥ गङ्गाजल किसी प्रकारसे भी पापको नाश नहीं करता क्योंकि जो कर्म इच्छापूर्वक किये जाते हैं उनका फल अवश्य मिलता है ॥१८॥ इस कारणसे यत्नद्वारा सुकर्म करने चाहिये क्योंकि मनको पापमें लगानेसे मनुष्य पापी हो जाता है ॥ १९ ॥ मनुष्योंको सत्यव्रत और स्त्रियोंके वास्ते पतिव्रत मोक्षके देने वाले वेदमें लिखे हैं किन्तु अन्नके त्यागनेसे कोई भी व्रती नहीं होता ॥२०॥ न तो एकादशी पुण्य और न द्वादशी पापतिथि है और न ग्रह मनुष्यके कार्यको नाश करते हैं ॥२१॥ पेटकी अग्नि जब मन्द हो जाती है तब भोजन हितकारी नहीं होता है इस वास्ते बुद्धिमान् को भोजन विधिपूर्वक करना चाहिये ॥२॥

महर्षि व्यासदेवका अन्तिम व्याख्यान समाप्त होते ही श्री विघ्नविनाशक लम्बोदर जी मारवाड़ी सेठोंके समान बड़ा सा पेट लिये धोतीको संभालते हुए खड़े हो गये और कहने लगे कि मैं बहुत दिनोंसे पुराणोंके कारणोंसे महर्षि व्यासदेव पर क्रुद्ध हो रहा था क्योंकि पुराणोंमें मेरी उत्पत्ति मैलसे लिख दी है—खैर अब महर्षि व्यासदेवके इजहारोंसे मेरी शान्ति हुई अबमैं

ओ३म्

देवलोकमें भोज

बरसातकी कीच २ दूर हुई शरदऋतुका अधिकार आया किसानोंकी अठपहरू मिहनतका चमत्कार-खेतोंमें दिखाई देने लगा। नृप, तापस, वणिक् और भिखारियोंको अपने २ काममें सुभीता हुआ। खञ्जना-दि पक्षी इतस्ततः यथेच्छ विचरने लगे। नदी तालाबों-का जल आलसी धनीके धनकी भांति घटने लगा। मीन, कच्छपादि, जल जीव, पातकी राज्यमें अकाल-दलित प्रजाकी नाईं पीड़ित होने लगे। सुराज्यसे जैसे दुष्टजन बहिष्कृत होते हैं एवम् मक्खी, मच्छर आदि दुखदायी जन्तु पलायित होगये। शीतल, मन्द सुगन्ध, समीर बहने लगा आकाश सरोवरसे मेघमा-लाकी काई दूर हुई, निर्मल नील जल शोभा देने लगा। जिस प्रकार मतवालोंका नशा उतरने वा सज्जनोंके शिक्षासे मदमोह दूर होने पर उनकी शोभा होती है वही दशा आकाश सरोवरकी अवगत होने लगी। शर-द् चन्द्र परिशोभित गगनमण्डल प्रकाशित हो गया कमलसे खिले तारे सकुच गये। नारि कमोदनि प्रिय प्रीतमके मुखचन्द्र निहार विकसित हुई। वन उपवन सुमन वाटिका नद नदी और वृक्षावलीमें चन्द्र किर-णें छिटक रहीं। शस्यपूर्णा वसुन्धरा गर्भिणी स्त्री की भांति गदरा गई दिशोपदिशा हास्य नृत्य करने लगीं दिवाकरकी उष्ण रश्मि दिन पर दिन सुखदायी और प्यारी लगने लगीं। संसारचक्रका ऐसा ही नियम है कि सदा एक वस्तु सुख वा दुःख नहीं देता, यही

समझकर धीर जन विपत्तिमें धैर्य धारण करते हैं। अस्तु यों कालकी धुरी पर धरणिचक्रका चक्कर होते हुवाते देवोत्थापिनी एकादशी भी आपहुंची। यह क्या त्यौहार है? चार महीना पड़े २ खर्राटा भरते हुए देवतों के जागनेका दिन है। हमारे आधुनिक पुराणोंकी इस में साक्षी है। इस समय मर्त्तलोकमें जो कुछ आनन्दोल्लास होता है आप लोग जानते ही हैं, इसी दिन आक टूटता है। इससे पहिले सफेद गन्ना खाना हमारे भोले भाई अच्छा नहीं जानते। पहिले जो ऊख खाते हैं वे कच्चे होनेके हेतु मीठे नहीं होते। लाल बुझक्कड़ प्रेमीजन ऐसा समझते हैं कि एकादशीको ऊखरस चार मासके प्यासे देवगण पीजाते हैं इसी कारण इनमें मिठास नहीं होता। यदि देवताओंका रस पान करना ही सत्य है तो केवल देवठानको ही यह दशा होनी चाहिये परन्तु न इसी दिन वरन इसके १५ वा २० दिन बाद तक गन्नेमें मिठास नहीं आता जो हो इस लोककी व्यवस्था तो आप जानते ही हैं कुछ देवलोककी कैफियत भी हमारी कलम की जिस में देख लीजिये। पोथियोंमें अथवा पोपाधारी पण्डितों के मुंह तो आप बहुत दिनोंसे इन्द्रलोक, शिवलोक और विष्णुलोककी कथा देखते सुनते आये हैं। आज हम संक्षेपतः देवलोककी गाथा कहते हैं। पुराणवेत्ता कह गये हैं कि शास्त्रोंमें तर्कबुद्धि अच्छी नहीं। हमने भी इसमें कोई बात झूठ नहीं लिखी है। हरे! हरे!! हरे! अनर्गल लिखनेसे क्या प्रयोजन है। हम सम्पादक हैं जिसने लिख भेजा वैसाही कम्पोज करनेको देदिया

यह लेख हमारे एक आर्यबन्धुने भेजा है जो अभी दिसम्बरमें देवलोक होते हुए परमपदको प्राप्त हुए हैं। उन्होंने किस रीतिसे, किसके हाथ भेजा है। यह हम तब बतावेंगे जब आप हमें नामदानसे पात्र बनते दिखादें और तेरहवींको दिये हुए शय्यादानकी रसीद मगादें नहीं तो हजार बातोंकी एक बात तो हम ऊपर ही लिखचुके है कि शास्त्रोंमें तर्कबुद्धि अच्छी नहीं। तब आप बहस क्या करते हैं? यदि आप पुराणोंको मानते मानते हैं तो हम पर आक्षेप न कीजिये—देवताका दिव्यस्वरूप तदनुसार ही वर्णन करेंगे ध्यान दे सुनिये।

स्वर्गमें इन्द्रादि देवता जाग पड़े चतुर्दिक आनन्द वाद्य होने लगा। अप्सरा विविध गीतनादसे नृत्यगान करने लगीं। आनन्दोल्लाससे सुरपुर भर गया।

इसी अवसरमें सुरपति इन्द्रने विचार किया कि आज सब देवताओंकी दावत करनी चाहिये इन्द्राणी भी पूछी जाने पर उनसे सहमत हुई, पुत्र और अमात्यवर्गकी सम्मतिसे भोजन देना निश्चित होगया।

तदनुसार सबदेवताओंके पास श्री नारद द्वारा सूचनापत्र भेजे गये कि आप लोग पुत्र, कलत्र और इष्ट मित्रों सहित दीनगृहको पवित्र करें। हमारे कितने भाई जो स्त्रीको पैरकी जूती समझते हैं—इन्द्र महाराज पर हसेंगे कि उन्होंने पहिले इन्द्राणीकी सम्मति ली और देवताओंको सस्त्रीक निमन्त्रण दिया उनको अपना ग़लत ख़याल भुला देना चाहिये स्वर्गलोकमें परम धार्मिकी विदुषी और वीर आर्या वीराङ्गनाहैं—

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, मधुकैटभसंहारकारिणी दुर्गाभगवतीकी कथा क्या आप लोगोंने नहीं पढ़ी और सुनी है ? तब स्त्री जातिको इतनी घृणित मानना आपकी बड़ी भारी भूल है। विशेषतः भगवतीके उपासकोंको—अस्तु नियत समय पर आमन्त्रित देवगण सज धज कर आने लगे जैसे कि अंगरेज़ लोग अपनी प्यारी लेडियोंको साथ लेकर जाते हैं सबसे पहिले गणपति गणेश ऊंची बोंद किये ऋद्धि सिद्धिके सहित चूहे पर चढ़े सूंड़ फटकारते हुए आये तदनन्तर हंसयुक्त विमान पर आरूढ़ हाथमें कमण्डलु लिये सावित्री सहित ब्रह्मा आय विद्यमान हुए।

महेश्वर मुण्डमाल पहिने बैल पर सवार चन्द्ररेखा विभूषित हाथमें त्रिशूल लिये पारवतीके साथ आये। भगवान् विष्णु गरुड़ पर चढ़े शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग धारण किये लक्ष्मीके सहित आय विभूषित हुये भैरवजी एफ्रिकाके हबशीका सा काला मुंह किये रक्त नेत्र अंगरेजोंकी तरह कुत्ते साथमें लिये त्रिशूल धरे झूमते झामते बैठ गये। श्री कृष्णचन्द्र सोलह सहस्र रानी पटरानी और गोपियों सहित बायुसम शीघ्रगामी घोड़ोंके रथपर चढ़े बड़े गाजे बाजेके साथ सुशोभित हुए सहस्रफणीश शेष जी भी हज़ारा फनफनाते परजुतिया के पत्ते सी लाल२ जीभें लपलपाते हुए आय पहुंचे स्वामि कार्त्तिक भी सजीव मोर पर चढ़े हाथमें सांग लिये आन विराजे। एवं यम, कुवेर, वरुण, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, आठ वसु, लोक-

पाल, दिक्पाल, और शेषशायी भगवान्के मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, भार्गवादि चौबीसों अवतार भी आकर विद्यमान हुए तदनन्तर वीणा पुस्तक धारिणी हंसवाहिनी विदुषी सरस्वती (हंस पर चढ़ीं) आय विराजीं। भगवती दुर्गा सिंह पर सवार खड्ग चर्म परि सुशोभित विभूषित हुईं, काला कराल बदन रक्त नेत्र किये मुंह बाये एक ओंठ धरती पर दूसरा आकाशसे बातें करता हुआ हाथीकी ताजी निकली खून चिचुआती हुई खाल ओढ़े शरीरमें जिनके निकोटने लक को मांस नहीं मुण्डमाल पहिने स्याह बानातसे काले मुंहमें तुलसी दल कीसी लाल जीभ निकाले मद में चूर हाथमें नर पांजर लिये अट्टहास करती हुई बिजली सी टूट पड़ीं, एवं अन्य देवी देवता सब अपने अपने वस्त्राभूषण और वाहनायुधपूर्ण आय सुशोभित हुए। उस समय इन्द्रभवनमें देव तेजके मारे चकाचौंध होता था जिस समय काली कहीं अपना शिर हिला देती थीं तो उनके भीमनादसे धरणी गगनान्तर व्याप जाता था, ध्वनिको प्रतिध्वनित होनेके लिये जगह नहीं मिलती थी सूर्यके घोड़े इधर उधर राह छोड़कर भाग जाते थे. सचराचर त्रैलोक्यमें क्षोभ हो जाताथा उस समय सकल अमरगण परिवेष्टित महाराज इन्द्र ऐसी शोभा देते थे जैसी सन् ७७ ई० में महारानी भारतेश्वरीकी शाहंशाही हुई थी दिल्ली दर्बारसे बढ़कर यह त्रिदशदरबार परिशोभित हुआ था। कौन वर्णन कर सकता है शेष तक तो वहां शरमाये हुये ही खड़े थे। शारदा भी बगलें झांकती थीं महाराज सुरपतिके

प्रत्येक देवताको बड़े चाव और नम्रभावसे अभिवादन कर आसन और अर्घपाद्य दिया अतीव मृदु और शीतल बचनोंसे उनको सन्तुष्ट किया। आज कलके क्षुद्र अमीरोंकी भांति बड़प्पनके जोशमें आकर किसी पर त्योरी नहीं चढ़ाई सब बन्धुवर्ग हैं। इनकी ही दी हुई राजश्री और प्रतिष्ठा हम भोग रहे हैं इनमें कौन बड़ा और कौन छोटा है! इन्द्र सदा जैसे अपने बराबर वालोंके साथ पेश आते थे। उससे अधिक नमूना और शान्तभाव अपने मन्त्रीवर्ग और भृत्यजनोंपर रखते थे। निरन्तर प्रेमभावसे समझाकर बात कहते थे एक सामान्य सिपाहीको भी भाई कहकर पुकारते थे। इसके सिवाय उनमें एक परम गुण यह भी था कि अन्य पुरुषके आगे अपने आदमीकी प्रतिष्ठा करते थे।

आपके भृत्यगण भी ऐसे ही सन्तुष्ट रहते थे कि काम पड़े पर जान देनेको मुस्तैद हो जाते थे। यही कारण है कि अनुशासन होते ही सब लोगोंने हाथों हाथ बातकी बातमें ३३ करोड़ देवी देवताओंके खान पानादिका एक वृहत् प्रबन्ध कर दिया। नोन, तेल और लकड़ी पर इनको किसीसे वहस करनेका भी अवसर नहीं आया निस्सन्देह ऐसा ही निरभिमान शीलवान् सज्जन पुरुष बड़प्पन और मान करने योग्य होते हैं सच्चे महानुभावोंके ऐसे ही बर्ताव हुआ करते हैं महाराज इन्द्रका सबने समुचित मान किया। यों परस्पर यथाविधि अभिवादन और कुशलप्रश्नके अनन्तर देवताओंके लिये सोमलताका शरबत बना पञ्चामृत भी बना। शिवजीके लिये न्यारी ठंडाई घोंटीगई।

भैरव दुर्गादि देव देवियोंको सुरापान कराया गया भोजनका घण्टा बजते ही गणेशादि देवगण अपने २ आसनों पर भोजनार्थ आसीन हुए। छः रस छप्पन व्यञ्जनके परोसेपरसे गये। लेह्य, पेय, चर्व्य, चोष्य, भक्ष्य, भोज्य, आदि पदार्थोंकी कमी न थी। भोजन थाल खाद्य द्रव्यसे खचाखच भर गया। पाकशालामें कितनी भांति के भोजन थे? यह गिनना कठिन था। पहिला पारस हो जाने पर देवताओंने शचीपतिके आदेशानुसार भोजन करना आरम्भ किया। लम्बोदर सूंड उठाय २ अपनी उदरदरीमें लड्डू भरने लगे, हनूमानजी दोनों मुट्ठी मालपुआ और गुड़धानी भसकाने लगे। महात्मा कृष्णचन्द्रने पहिले माखन मिसरी पर हाथ लगाया फिर मोहन मठरी तोड़ी। ब्रह्माजी चारों मुंह मोहनभोग उड़ाने लगे भगवान् विष्णुभी यथारुचि खीरके चहुपोंके भरने लगे। शिवजीके भोजनका कुछ ठीक ही न था जिस वस्तु पर हाथ पड़ा हंसतेर उठाकर मुंहमें रखली काली भैरव आदि मांस पर हाथ मारने लगे। सब देव देवियां यथा रुचि अपनी २ प्रसन्नताका खाना खाने लगीं। देव गणोंमें हंसी ठट्ठा भी होता जाता था देवादि देव महादेवने हंसते २ कहा कि सुरेन्द्रजी श्रीकृष्णचन्द्रको बहुत मत परोसना इनका तो निरे नीरफोहा और सुकुमार बनियोंका तरमाल तोड़ते २ मेदा बिगड़ गया है। सुधरे कहांसे एकादशी तकको तो इतना घी देकर कूटूका हलुआ उड़ाते हैं कि अंगुलि-योंका घी धोये नहीं छूटता। बिना परिश्रम कि

अधिक पचता नहीं। इन्द्राने कहा हां ये बड़े महात्मा हैं। गोपियोंके संग इन्होंने बहुत रहस विलास किया है। सखीभावमें पुकारते २ इनमेंभी कुछ सखीभाव आगया है स्त्रियोंको भूंख तो बहुत होती है आपमें न जाने क्यों कम है? हो जहांसे गद्दी परसे उतरे बग्घी पर जा पहुंचे बग्घी परसे फिर गद्दी पर आबैठे

बड़े आदमी, सेठ साहूकारोंके निरे खिलौना हैं। आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्रने भी हंसते २ दो एक चूटें कीं। ब्रह्माकी ओर मुसकरा कर कहा भाई इनकी खबर अच्छी तरह लेना चौमुखे खाता हैं—फिर शिवजी को सम्बोधन कर कहा कहो भगवन्? किसी वस्तुका स्वाद भी आया (वंगली उठाकर) येकै हैं? विष्णुने भी ब्रह्माकी हंसीकी कहने लगे देखो तो कैसे अकाल कैसे मारे चारों गाल भर रहे हो भंगीके लिये भी कुछ रहने देना। ब्रह्माने कहा मैं ऐसे बहुरूपियेके कहने पर ध्यान नहीं देता जो मृत्युलोकमें नित्य नयी कला करता है। चिढ़ते क्यों हो तुमतो अनेक रूपसे अपना पेट भर लोगे। फलतः प्रेमभावसे योंही हंसतेबोलते देवता लोग जीमते थे। सबसे ज्यादा खिल्ली महाराज कृष्णचन्द्रकी होतीथी। इतनेमें सहस्राक्षने अपनी हजारों आंखे उठाकर चारों ओर दृष्टिकी तो जान पड़ा कि सबके पत्तलोंका खाद्य द्रव्य घट गया है। अमात्य और भृत्यजनोंको खाना लानेका आदेश दिया और आप परोसने लगे चलते २ बाराहजीके पास आये तो देखा कि जो कुछ उनको परोसा था सब ज्योंका त्योंही धरा है। और बाराहजी दीर्घ निःश्वास व छोड़

* स्वर्गमें सबजेक्टकमेटी *

लीजिये मिस्टर एडिटर आजकी होली (पत्रिका) इसमें मैं आपको उस सभाका वृत्तान्त भेजता हूं जिसका (देवलोकके भोजमें) होना स्थिर हुआ था चूंकि यह कमेटी केवल मृत्युलोकके निवासियोंको शिक्षादेनेके ही वास्ते हुई थी इस लिये आपके समाचार पत्रमें इसका छपवाना बहुत ही आवश्यक है ॥

शरदका अन्त होते ही वसन्तराजका साज चारों ओर छागया भगवान् भुवनभास्करकी किरणोंसे कोमलता ऐसे दूर होने लगी जैसे यौवनप्रवेशमें शिशुताशरमा कर-भाग जाती है, कोकिलोंकी कलरव कानोंको ऐसी प्यारी मालूम होने लगी जैसे सत्यके खोजियोंको शास्त्रीय प्रमाणोंसे भरे हुए व्याख्यान सुखदान करते हैं, माधवी लतापर मधप झूम २ कर धूम मचाने और अपनी सुहावनी गुञ्जारोंसे कुञ्जोंको वृन्दावन बनारसकी कुञ्जगली के समान शोभायमान करने लगे। आमोंके वौर अपना निराला ही तौर दिखाने लगे, मदन महीपके जगत्को जीतने वाले वाण दशों दिशाओंमें छागये जिनकी सनसनाहटको सुनके ललनागण अपने २ प्राणेश्वरोंकी [illegible] लेने लगीं। कहां तक कहें अनार, कचनार और [illegible]नार हीमें नहीं वरन संसार भरके दरोदीवारमें वसन्त [illegible] लहार छाई हुई थी ऐसे सुअवसरको देखकर देव-[illegible] इन्द्रके प्राइवेट सैक्रेटरीने हाथ जोड़कर प्रार्थनाकी [illegible] हे सहस्राक्ष! आप सब देवताओंके राजा हैं अतएव [illegible]ति और अवनति आपके ही आधीन है आजकल [illegible]ताओंकी बड़ी दुर्दशा होरही है। देखिये [illegible] २०

करोड़ मनुष्योंपर देवताओंका खान पान वस्त्र आभूषण और व्याह कराना आदि निर्भर है उनमें लाख वा दो लाख ही अब ऐसे आदमी बचे हैं जो देवताओंकी पूजा करते हों नहीं तो सब नमकहराम होकर गूंगापीर, शेखसद्दो, जुम्मापीर, बालेमियां, गाजीमियां, सय्यद मियां मदार, आदि अनगिनत मुर्दोंकी पूजा करते हैं और देवता भूखों मरते हैं। प्रथम तो पूजक लोगोंसे पूज्य देवताओंकी संख्या ही ड्योढ़ी है उसपर भी मुसलमानों के तथा अंड बंड करोड़ोंही मुर्दे पुजवाने लगे हैं इससे देवतोंके घरमें बड़ा भारी दारिद्र आगया है। जब शचीपतिके प्राइवेट सेक्रेटरी प्रार्थना करके बैठगये तब नारदऋषिने खड़े होकर कहना आरम्भ किया। नारद उवाच—बेशक आजकल देवताओंकी बड़ी दुर्दशा है। देखिये! काशीमें अन्नपूर्णा और लक्ष्मी जी एक२ पैसा मांगती हैं विष्णुको ऐसा रोग हो गया है कि वह एक दिनमें ५ वक्त खाते हैं तो भी भूख नहीं जाती है भोलानाथ महादेवजी ऐसे नशेबाज होगये हैं कि धतूरा, गांजा और भांग उनके मुखसे कभी छूटती ही नहीं अब उनकी यह दशा होगई है कि उन्हें यह भी ख्याल नहीं रहता है कि मैं नङ्गा हूं व वस्त्र पहने हूं देवगणके प्रहर्त्ता श्रीगणेशजी चूहेपर बैठते शर्माते हैं इससे उन्हें स्थूलोदरका रोग होगया है, अतएव आप देवताओं उन्नतिका कोई शीघ्र ही उपाय कीजिये॥

इन्द्रने उनके वचनोंको सुनके स्मरण किया कि भं के समय सबजेक्टकमेटीका प्रस्ताव हुआ था उसही अब करना चाहिये॥

श्रीमती इन्द्राणीकी सम्मति लेकर नोटिस लिखनेको श्रीविघ्नविनाशक लम्बोदरजी बुलाये गये चूंकि नोटिस सब दिशाओंके दिक्पालोंके पास भेजनेका विचार था इस लिये प्रथम दिशाशूल और योगिनियोंके नाम पर सम्मन जारी किये गये कि तुम लोग सब दिशाओं को छोड़कर फौरन दर्बारमें हाजिर रहो वरना रेल चलाके तुम्हारे सब स्थान तोड़ दिये जायंगे ॥

सम्मनका नाम सुनते ही सम्पूर्ण ग्रह, योग, वार और नक्षत्रोंके सहित दिशाशूल और योगिनियोंने हाजिर होके प्रार्थना की कि आजसे हम लोग मुहूर्त चिन्तामणिके अनुसार देवताओंको तो छोड़ देंगे पर इन्द्र महाराजने एक न मानी और कहा कि तुम लोग नाहक ही लोगोंकी सड़कोंको रोकते हो सो इससे तुमको फांसी देदेना ही बिहतर है । इसपर सबने गिड़गिड़ाकर हाथ जोड़के कहा कि क्षमा कीजिये अब हम लोग दशों दिशाओंको छोड़कर भारत भूमिमें रहेंगे उसमें भी हम ज्योतिषी भडुरियोंको अपना दलाल मुक़र्रर करेंगे इन को तो हम दलाली देहींगे इसके अतिरिक्त यह भी नियत करते हैं कि जो लोग इनका कहना मानेंगे हम उन्हीके मार्गको रोकेंगे औरोंको हरगिज न रोकेंगे खैर महाराज इन्द्रने वृहस्पतिकी जमानतसे सबको छोड़ दिया पश्चात् श्रीगणेशजीसे नोटिस लिखाकर वायुदेवताको सुपुर्द किया और कहा कि ऐसी जल्दीसे सब लोकपालोंके पास जाओ कि कोई हमारा दुश्मन कमेटी के विरुद्ध किसी तरहका तार न भेज सके वायु

उनधामरूपसे चारों ओरको भागा और पलक मारते ही लौटआया देवतालोग सब्जेक्ट प्रजेंटीका नोटिस पाते ही ऐसे चले जैसे कलकत्तेकी नुमाइशको दर्शक दौड़े थे। ब्रह्मा और ब्रह्माणी हंसपर, शिव पार्वती बैलपर, यमराज भैंसेपर, लक्ष्मीनारायण गरुड़ पर चढ़े हुए आविराजे। श्रीऋषभजी सिंह पर सवार हुईं, सब देवदेवी। नद शोण भद्रादिक, नदी, गङ्गा और टेम्स आदिक पर्वत मेरु और हिमांचल आदिक तीर्थ प्रयाग और काशी आदिक राजधानी कलकत्ता और लन्दन आदिक ताल भूपाल और नैनीतालादि और रेल तार आदि यहांतक कहैं चेयर टेबल प्रेस आदि जितने पदार्थ आदि हैं सबके अधिष्ठाता देवता सभामें आकर सुशोभित होगये इस सभामें नब्बे करोड़ देवता उपस्थित थे [अबकी सेंसस (देव गणना) में देवसंख्या बहुत बढ़गई है] जो जिस प्रकृतिका देवता था उसके स्थान और खानपानादिका वैसा ही प्रबन्ध किया गया। प्रथम देवीके वास्ते जरदे पुलावके सहित शराब भेजी गयी परन्तु उन्होंने कहा कि मैंने इस कारणसे जुलाब लिया है कि अभी नव-रात्रोंमें मुझे सहस्रों बकरे और भैंसोंका मांस खाना है, विष्णुने कहा कि मुझे भी वृन्दावनके ब्रह्मोत्सवमें जाके बहुतसे काम काज करने हैं इस लिये मैं भी नहीं खाऊंगा खैर यों जलपानकी खातिर होनेके पश्चात् रात्रिको ठहरनेकी जगह सबको दीगई, ब्रह्माजीको एक ऐसा मकान दिया गया कि जिसकी खिड़की ऐसी थी जिसमें ब्रह्माजी कमर लगाये रहैं और मुंह बाहरको—

निकल जाय क्योंकि खोनेसे तो एक मुंहके छिपजावेगा अब था शिवजीको श्मशानभवन प्यारा हुआ, विष्णुके वास्ते सजा सजाया कमरा दिया गया विष्णुके अवतार मत्स्य और कच्छपको एक तालाब बतलाया गया परन्तु विचारे बाराहजीको इधर उधर सूंघते ही रात व्यतीत हुई। खैर किसी प्रकारसे सवेरा हुआ और सब लोग नित्यविधिसे छुट्टी पाकर अपने २ डेरोंमें बैठ। इतनेमें महाराज इन्द्रके दूतने आकर सबको सभाका छपा हुआ प्रोग्राम (विज्ञापन) दिया एवं नियत समय में सब लोग अमरपुरीके टौनहालमें पहुंचे।

प्रथम श्री गणेशजी खड़े हुए परन्तु तोंद बड़ी होने के कारणसे पैर डगमगाये और धोती खुलने लगी बस यह तो मङ्गलचार करके बैठगये। तब श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्दने खड़े होकर कहा कि आजकी सभामें देवराज सभापति, एवं चारों लोकपाल उपसभापति बनाये जावें। इसका अनुमोदन श्रीवामन महाराजने इस प्रकारसे किया कि मैंने ब्राह्मणकुलमें जन्म लेकर भिक्षा मांगी और राजा बलिको छला सो केवल देवताओंके उपकारके वास्ते पर देवताओंका दरिद्र तौ भी न गया। अतएव आजकी सभाका उद्देश्य यही है कि किसी भांति छल बल कलसे देवताओंकी उन्नति करनी चाहिये चूंकि इन्द्र सब देवताओंके राजा हैं इस लिये उनको ही सभापति बनाना चाहिये। मीरमजलिसके मुक़र्रर हो जानेके बाद इस रीतिसे कार्य्य आरम्भ हुआ प्रथम प्रस्ताव देवताओंके मेमार (मकान बनाने वाले राज व मजदूर) विश्वकर्माने प्रस्ताव दिया और वास्तु पति

देवोंने अनुमोदन किया कि हम लोगोंको जो बड़े ब-ड़ेर और छोटे २ मन्दिरोंके बनाने पर दोष लगाया जाता है उसके रोकनेका कोई उपाय किया जाय क्यों कि जब वे मकान शिकस्त हो जाते हैं तब हमारी कारीगरीमें बट्टा लगता है। इस पर कमेटीकी राय हुई कि एक सर्क्यूलर ऐसा प्रकाशित किया जाय जिसमें यह लिखा रहे कि पृथ्वीमें जितने मन्दिर हैं उनमेंसे कोई भी विश्वकर्माका बनाया हुआ नहीं बरन वह सब मनुष्योंके बनाये और अन्य स्थानोंके समान अनित्य हैं।

भगवान् ब्रह्माने प्रस्ताव किया कि मर्त्यलोकमें महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यासके नामसे जो पुराण बने हैं उनमें देवताओंकी बहुत निन्दा लिखी है अतएव व्यासको महर्षि मण्डलीसे निकाल दिया जाय इसपर श्रीकृष्णचन्द्र बोल उठे कि बेशक ऐसा ही करना चाहिये क्योंकि मुझे भी पुराणोंके सबबसे बहुत शर्मिन्दा होना पड़ता है भला आप ही लोग कहिये कि मुझे क्या दरकार थी कि जो मक्खन चुराता फिरता॥

इस पर बाराह महाराज बोल उठे कि भाई श्रीकृष्णचन्द्र जी ठीक कहते हैं पुराणवालोंने हमारी भी बड़ी खराबी की है लिख दिया है कि ब्रह्माकी नाक से बाराह उत्पन्न हुए भला नाकमें क्या बाराह भरे हुए थे इस पर विष्णु भगवान् बोले कि विलाशक पुराण बनाने वालोंको महर्षि मण्डलसे जरूर ही निकाल देना चाहिये क्योंकि उन्होंने मुझे बड़े दोष लगाये हैं सोचिये तो सही कि मैं अपनी परमप्यारी लक्ष्मी को त्याग कर जलन्धर राक्षसकी राक्षसी भार्य्या वृन्दासे-

छलसे व्यभिचार करने क्यों जाता ? क्या हम लोग अधर्मी और वीरता हीन हैं जो जलन्धरको छलसे मारते ? क्या हम राक्षस और मनुष्योंके समान व्यभिचारी हैं जो पराई स्त्रीके सतीत्वको नष्ट करते फिरते हैं यह सब लोगोंने हमें तथा परम पवित्र देवताओंको दोष लगानेके वास्ते पुस्तक रचे हैं ॥

इस पर श्री भोलानाथ जी हंसते २ बोल उठे कि हे देवराज ! पुराणोंका हाल न पूंछिये मुझे तो पुराण वालोंने पानीका दमकलाही बना दिया है जहां जाऊं वहीं गंगाकी धारा जटासे निकला करे भला देखिये तो अगर मेरे पास पम्प होता तो क्या आप लोग ऐसे ही सुखसे बैठे रहते अब तक सबकी लासें वहीं २ फिरतीं और दिल्लगी तो सुनिये हमको तो पुराण वालोंने अजर अमर लिख दिया और हमारी सती स्त्रीको मरने और जन्मने वाली लिखा भला हम क्या ऐसे बेवकूफ थे कि अपने समान स्त्रीसे विवाह न करते? खैर यह तो एक छोटी सी बात है पर यह तो देखिये कि मैं मृत्युलोकमें कब तन्त्र बनानेको गया था मैं शपथ खाके कहता हूं कि मैंने तन्त्रका एक भी पुस्तक नहीं बनाया हां जिन लोगोंने बनाया और तन्त्रका मत चलाया उन्होंने हिकमत अमलीसे बौद्ध और जैनियों की फैलाई हुई कायरताको हिन्दुस्तानसे उठानेके वास्ते ही यह कार्यवाही की थी यह धर्म सिविल वालों के वास्ते नहीं था वरन मिलिटरी लोगोंको उत्पन्न करके शत्रुओंसे लड़ानेके वास्ते ही था जब इस प्रकार उक्त देवताओंने प्रस्तावकी पुष्टि की तब सभापति

महाराजने सबकी सम्मति लेनेको कहा कि जिन लोगों को पुराण वालोंने दोष लगाये हैं वे लोग हाथ उठावें सभापतिके बचन सुनते ही सूर्य, चन्द्रमा, गंगा, सरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली, आदि सब देवदेवियोंने हाथ उठा २ कर अपनी २ सम्मति प्रकाशितकी सबकी सम्मति होने पर सभापतिने खड़े होकर कहा पूंछि पुराण बनाने वालने देवताओंको अजायब घरकी सामग्री मुकर्रर करके वेहूदा तौर पर और बेअदबीके साथ कलङ्क लगाये हैं लिहाज़ा व्यासको बुलाकर सभामें दर्याफ़्त कियाजाय कि उन्होंने ऐसी नाजायज़ कार्यवाही क्यों-की ? क्या व्यासने हमारे दुश्मन राक्षसोंसे रिश्वत लेकर यह काम किया है ? व्यासजीके बुलानेको अभी देवर्षिनारद जायं। महाराजा इन्द्रकी आज्ञा पाते ही देवर्षिनारद अपना कमण्डलु लेकर बुलानेको दौड़े मगर रास्तेमें हनुमानजी मिलगये उन्होंने नारदसे पूछा कि देवताओंकी सभामें हमको जाने और बोलनेका अधिकार है वा नहीं ? यानी मुझे जो लोगोंने केशरीपुत्र समझके भी पवनसुत प्रसिद्धकर रक्खा है इस पर तौहीन का मुकद्दमा हो सकता है वा नहीं ? नारदजी ने कहा कि देवता लोग लिबरल (उदार) दलके हैं आप जाके अपनी प्रार्थना सुना सकते हैं खैर थोड़ी देरमें देवर्षि-व्यासजीको लेकर सभामें फिर आये तब सभापतिने पूछा कि आपने जो देवताओंको कलङ्क लगाये हैं वह कौनसी वेदकी ऋचाके अनुसार लगाये हैं और जो इसका जवाब ठीक २ न दोगे तो आपसे महर्षि पदवी छीन-

को आयगी भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यास जीने उत्तर दिया कि मैंने एक भी पुराण नहीं बनाया है अगर मैं पुराण बनाता तो अपनी ही उत्पत्ति बुरी क्यों लिखता? असल बात तो यह है कि चारवाक लोगोंमें जो वृहस्पति नामका नास्तिक शिरोमणि हुआ है उसने ये ग्रन्थ अपने शिष्योंसे रचवाये और अपने आप भी रचनाकी हैं मैंने तो अपने शिष्योंको वेदका ही अभ्यास कराया है ब्रह्मनिर्णय के वास्ते केवल वेदान्त शास्त्र बनाया है परन्तु हां एक छोटासा इतिहास २४ हजार श्लोकका महाभारत भी बनाया है यदि उनमें कहीं पर भी आप लोगोंकी निन्दा हो तो मैं बेशक कसूरवार हूं और मेरे ऊपर जैसा कसूर आयद हुआ ऐसा ही चार श्लोकी भागवत बनानेका विष्णु पर आयद हो सकता है और मारकण्डेय जी तो अपने नामके पुस्तकके वास्ते पूरे दोषी हैं वृहन्नारदीय पुराणके वास्ते नारद ऋषि और अनेक पुराणोंके वास्ते श्रीचन्द्रशेखर नीलकण्ठ जी दोषी हैं क्योंकि उन्होंने अपनी स्त्रीको अधिक कथा सुनाई है।

जिस समय व्यासदेव अपनी सफाईकी कोशिश कर रहे थे उस ही समयमें यमराज अपना डंडा लेकर वहां गये और सभापतिसे प्रार्थनाकी कि मैं अपना इस्तीफा दाखिल करता हूं क्योंकि मैं जिस इन्तिजामके वास्ते यमराज बनाया गया हूं उसे जरा भी नहीं करने पाता मैं अपने लाखों दूतोंको तनख्वाह देता हूं मगर उनसे कुछ भी काम नहीं करा सकता असंख्य-

रुपये खर्च करके जो नरक बनाये गये हैं वे सब फि-
जूल खाली पड़े हैं और मैं यह भी अर्ज करदेना जरूरी
समझता हूं कि मेरा महकमा निहायत ही फिजूल है।
मैं अपने हेडक्लर्क चित्रगुप्तके रोजनामचेके मुताबिक जब
किसी महापापीके लेने को अपने दूत भेजता हूं तब
विष्णु का शिवके दूतोंसे फौजदारी हो जाती है आज
कलके बगुला भगत जो हजारों महापाप करकेभी स्वर्ग
अधिकारी हो रहे हैं इसमें तो कुछ सन्देह ही नहीं है
पर एक मुसलमानकी मुक्ति (मोक्ष) होती देखकर मेरे तो
छक्के छूट गये और मैंने निश्चय समझ लिया कि इस सृष्टि
में न्याय नहीं रहा निरी ठकुराई है!!! हाज़रीन
जल्सा! एक दिन मैंने चित्रगुप्तके रोजनामचे के मुता-
बिक अपने चार दूतोंको एक मुसलमानको उसके नीच-
तर और भयानक कर्मानुसार लाकर महारौरव नरकमें
डालनेकी आज्ञा दी मेरे दूत उसको हुलिया लेकर
चले और उसे एक शहरके पासपाखाना फिरते देखा मेरे
दूत वहां बैठकर मृत्युकी बाट देखने लगे इतने में एक
बड़ा भारी बुअर आया उसने मुसलमान के ऐसी ठो-
कर मारी कि उसका प्राणान्त हो गया. मरतीवार
मुसलमानने घबड़ाकर कहा "हरामने मारडाला" इस
में रामका नाम भी आया इस लिये विष्णुके दूत दौड़े
हुए आये और मुसलमानको उठाकर बैकुण्ठको ले गये
मेरे दूतोंने विष्णुके दूतोंसे पूछा कि इसने कौनसा ऐसा
सुकर्म किया है कि जिससे इसकी सालोक्य मुक्ति हुई?

: इनके वचनोंको सुनके विष्णुके दूतोंने इस प्रकार
ह दिया "कश्चित्पापपरायणः पथिसकृत्स्नात्वा इत्यादि,"
देवगण! जहां पर ऐसा अन्धेरखाता है वहां पर मैं
धिकारके कामको कदापि नहीं कर सकता हूं और
लिये जो आदमी जन्मभर पाप करते हैं और भूलके
भी गङ्गाजल पीलेते हैं बस वे हमारी अदालतसे बा-
र हो जाते हैं इसके अलावे जबसे गङ्गाजल गङ्गाकी
नहर निकली है तबसे तो बिलकुल नवाबी ही सब
ई है क्योंकि गङ्गाजलसे जितनी खेती होती है उस
े अन्नको रेलीब्रादर्स रूस, रूम, फ्रान्स और इंगलैंड,
आदि देशोंमें भेज देता है अथवा उसको जो लोग खाते
हैं उन पर मेरा कुछ भी अधिकार नहीं रहता है गङ्गा
के अतिरिक्त नर्मदा, यमुना आदि और भी अनेक
नदी ऐसी हैं जिनके जलको छूते ही पापियोंके पाप ऐसे
उड़जाते हैं जैसे तीरके भयसे काक उड़जाते हैं। हे सभा-
पते! और उभ्यगण! मैं कहां तक अपनी वेदनाकी
कहाऊं एक वर्षके ३६० दिन होते हैं उनमेंसे कोई दिन
ऐसा नहीं जो व्रतसे खाली हो-भोग मोक्षकी देने
वाली महारानी एकादशी तो हमारी पूरी शत्रु पन्द्र-
हवें दिन खड़ी ही रहती हैं अथवा सालभरमें २४ दिन
तो हमको अपनी अदालत बन्द ही रखनी पड़ती है
फिर साल भरमें अठारह दिन नवरात्रिके बरबाद हो
जाते हैं, पितृपक्ष तो हमारे खास मुवक्किलोंकी छुट्टीका
मौसम है उनमें जो लोग मरते हैं उन्हें नरकमें भेजना

अपने गृहधर्मकी वेइज्जती कराना है। मैय्या दूजको हमारी पूजा है, अक्षयतीजको बद्रीनारायणकी पूजा, गणेशचौथको विघ्न विनाशक गणेश जीकी पूजा, पञ्चमी को नाग देवतोंकी पूजा, षष्ठीको स्वामिकार्तिककी पूजा, और सप्तमी और अष्टमीको देवराधा और कृष्ण भगवानकी पूजा, नवमीको श्रीराघवेन्द्रकी पूजा, दश- मीको कुलदेवोंकी पूजा, ग्यारस जगत्में प्रसिद्ध ही है, द्वादशीको वामन अवतारकी पूजा, तेरसको सरस्वती और हरे शिवजीकी पूजा, चौदसको अनन्तदेवकी आराधना, पूर्णमासीको सत्यनारायणकी अर्चना होती है। रहे वार उनमें रविवारको सूर्य्यका व्रत होता है फिर सोमवारको महादेवका व्रत, मंगलवारको मंग देवताकी उपासना, बुध वृहस्पति शुक्र और श नक्षत्र और ग्रहोंके व्रत रहते हैं अथवा उन दिनोंमें जो लोग मरते हैं उन्हें नरकमें ले जानेके वास्ते सब देवतोंसे हमें हरवक्त झगड़ा करने पड़ता है इस कारण से अब हम अपनी नौकरीसे इस्तीफ़ा देते हैं॥

भला! ऐसी लबड़ धौंधोंमें कौन नौकरी कर सकता है जब कि एक दिन महावारुणीमें स्नान करनेसे एक मनुष्यके तीन करोड़ कुल मुक्ति पाजाते हैं। मैं शपथ करके कहता हूं कि जिन लोगोंको कर्मानुसार मैंने नरक भोगाकर कीड़े मकोड़े और चूहे बिल्ली आदि बनादिया है उनको ढूंढ़ २ कर मुक्ति देने और स्वर्ग-

में पहुंचानेके कार्यमें मैं और मेरे दूत घबड़ा गये हैं। भला! यह भी कोई दिल्लगी है कि एक दो श्लोकोंमें सम्पूर्ण वेद पुराण और धर्मशास्त्रके लाखों पोथीके समेत हमारे कुल दफ्तरोंके कागजोंको रद्दी बना दिया। अगर मैं अंगरेज़ी पुलिसको रिश्वत देकर हरिद्वारके मेलेको न हटवा देता तो परमेश्वरको दूसरी सृष्टिके वास्ते एक भी जीव न मिलता। महाशय! कहां तक कहूं कोई सफेद मिट्टी, कोई रोली, कोई स्याहीकी बेंदी, कोई लाल सफ़ेद चन्दन और कोई हल्दी ही माथे पर लगानेसे, कोई तुलसी और कोईकोई अरहरकी लकड़ी, कोई स्फटिक और रुद्राक्ष व कमलगट्टोंकी माला, पहन के छूकर स्वर्गको चले ही जायंगे—फिर मेरा और मेरे दूतोंका और नरकोंका काम ही क्या रह गया। लिहाज़ा मेरा इस्तीफ़ा मंजूर किया जाय-जहांपर ऐसी अन्धी सरकार है कि जिसके जीमें जो कुछ आवे उसको उसहीसे मुक्ति दे दे तो क्या ताज्जुब है कि कहीं खाटके पाये और सुतरीकी मालासे भी मुक्ति न मिलने लगे जिस सरकारमें मद्य (शराब) पीना, मांस, मीन (मछली) खाना और मुद्रा मैथुन करना भी मुक्ति दाता समझा जाता है बस उस अन्धी सरकारमें मैं हरगिज़ नौकरी करना नहीं चाहता हूं सोचिये तो सही कि आप लोगोंने और आपके भक्त लोगोंने मुझ और मेरे मुहकमेको कैसा रिशवतखोर और जुवाचोर बना रक्खा है चाहे मनुष्य कितने ही कुकर्म करके मरे पर आप लोगोंकी समझमें जबतक श्राद्धमें ब्राह्मणोंको न खिलाया जाय तब

तब उसका प्रेतत्व ही नहीं छूटता। मैं देखता हूं कि जिस पापीको उसके कर्मानुसार पैदल चलाया जाता है उसके वास्ते आप लोगोंके भक्त ब्राह्मणोंके मारफत जूता और छत्र भेजते हैं जिन कैदियोंको भयानक कर्म के फलानुसार अन्धतामिस्रादि नरकोंमें जलती हुई भूमि पर सुलानेकी परमेश्वरी कानूनमें आज्ञा है उन के वास्ते शय्यादानकी खटिया उठौने बिछौने सहित अपने सिर पर लादे हुए लाखों महाब्राह्मण (कट्टहा) नरकके द्वार पर खड़े रहते हैं और मेरे दूतोंको रिशवत देकर नरकमें उन वस्तुओंके पहुंचानेका अनुचित यत्न किया करते हैं इसके अतिरिक्त जो लोग पुराण प्रणालीके अनुसार व्रत वा गङ्गा स्नान करके स्वर्गमें चले गये हैं वा सायुज्य मुक्तिको पागये हैं उनके श्राद्धका अन्न व अन्तक्रियाकी अन्य वस्तु भी मेरे ही मुहकमेमें डिस्पेच होकर पहुंचती है जिनको यथास्थान पहुंचानेमें मैं असमर्थ हूं। हे सभापते! मुझे ऐसा क्रोध आता है कि इन व्यास जी से जी खोलकर युद्ध करूं क्योंकि ऐसा शख्स लेजिस्लेटिव डिपार्टमेंटमें रखने योग्य नहीं है-बस याती गरुड़ पुराणको मनसूख किया जाय या मेरा इस्तीफा मंजूर हो। जब यमराज कहकर बैठ गये तब वरुण महाराज उठे और बोले कि पितृपति यमराजका कहना बहुत दुरुस्त है क्योंकि इन्ही व्यास जीने मुझे भी कलार लिख दिया है—भला इनसे पूछिये तो सही कि शराब मेरी लड़की कैसे हो सकती है जैसे मनुष्य की लड़की मनुष्याकार होती है ऐसे ही मेरी लड़की भी मेरे ही आकारकी होती पर न मालूम इन महा-

स्वामीजीको क्या सूझी कि गुड़ और पानीसे बनी हुई शराबको मेरी बेटी लिख दिया इतने पर भी तुर्रा यह कि समुद्रसे उत्पन्न हुई भी उसहीको कहते हैं ॥

इनके पश्चात् सरस्वती देवी उठीं और कहने लगीं कि बेशक व्यासने मुझे और मेरे पिताको बड़ा भारी दोष लगाया है इस लिये व्यास जीके और उनके ग्रन्थोंके मान्य उठानेका अवश्य कोई प्रबन्ध होना चाहिये चन्द्रमाने भी अपनी मिथ्या कलङ्की कथा कहके सरस्वतीके वचनोंको पुष्ट किया ॥

फिर परमप्रतापी भुवनभास्कर (सूर्य) उठे और कहने लगे कि हमें तो व्यास जीने खूब ही बेइज्जत किया है भला इनसे कोई पूछे कि जब हम घोड़े बने थे या ब्राह्मण बनकर कुन्तीके घर गये थे तब जगत्‌में प्रकाश कौन कर रहा था इन्होंने इस कथासे मुझे ही गाली नहीं दी बरन देवतोंके महाविद्वान् वैद्यअश्विनीकुमारोंको भी घोड़ेका पुत्र कह कर गाली दी है मेरा बहुत दिनोंसे इरादा था कि व्यास पर हतक इज्जत(मान हानि)की नालिश करूं ॥

इनके चुप होते ही भगवान् ब्रह्मा डाढ़ा हिलाते हुए खड़े हो गये और कहने लगे कि हे सभ्य लोगो ! जितने दोष पुराणोंके कारण व्यास जी पर लगाये गये हैं मेरी समझमें वे इन दोषोंसे बिलकुल बरी हैं क्योंकि उनकी ख़ासियत ऐसी नहीं है जो किसीकी तौहीन करते बरन वे बड़े भले आदमी हैं जान पड़ता है कि उनको बदनाम करनेके वास्ते चलते पुरजोंने पुराणोंकी रचना की है देखिये तो सही मुझे कमलका कीड़ा ही

लिख दिया है। भला! जब महाप्रलय होगई थी तब जल कहांसे बच गया था और उसमें एक सर्प, कमल और अक्षयबटका वृक्ष तथा उसके आधारकी भूमि मौजूद थी तो महाप्रलय ही वह कैसे कही जा सकती है और दिल्लगी तो सुनिये जब हम कमल पर बैठे हुए थे तब ही विष्णुके कानके मैलसे दो राक्षस उत्पन्न हो गये सोचिये तो सही कि कानमें मल तो तभी जमेगा जब वायु पृथिवीके परमाणुओंको उड़ा कर कानमें इकट्ठा करेगा परन्तु प्रलय कालमें ऐसा होना असम्भव है फिर देखिये कि मुझे ऐसा कायर बनाया कि मैं उन राक्षसोंके डरसे कमलमें घुस गया इससे आश्चर्य यह है कि जो राक्षस विष्णुके सम्मुख मच्छरसे भी तुच्छ थे (क्योंकि कानका आकार शरीरसे तो अवश्य छोटा होगा) फिर विष्णु मारवाड़ियोंके समान मैले या अफीमची तो हैं ही नहीं जिनके कानमें टोकरों मैल भरा होता खैर जो थोड़ा बहुत मैल था उसहीके वे राक्षस बने हुए थे सो थोड़ा बहुत युद्ध करके भी नहीं मरे पांच हज़ार वर्ष तक लड़ते ही रहे इतने पर भी तुर्रा यह है कि विष्णुकी यह हिम्मत न हुई कि जूंके समान राक्षसोंको मार सकते खैर तब हम दोनोंको देवीकी शरण लेनी पड़ी यदि यहीं तक बेइज्ज़ती होती तो भी हम भुगत लेते। पर देवीभागवतमें हम तीनों देवतोंकी ऐसी भट्ट उड़ाई है कि जिसको पढ़नेसे हमारी सारी कलई खुलजाती है। देखिये हमारी उत्पत्तिकी कैसी खराबी की है लिखा है कि देवीने तीन ताली बजाईं उनसे हाथमें तीन छाले पड़े उन छालोंके फोड़नेसे

हम तीनों अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव उत्पन्न हुए फिर तीनों ही सृष्टि करनेमें असमर्थ हुए तब मणिद्वीप में ले जानेके वास्ते तीन विमान आये—उन पर बैठ कर हम तीनों मणिद्वीपको चले रास्ते में हजारों ब्रह्मा, हजारों विष्णु और हजारों महादेव देखे इस पर भी दिल्लगी यह है कि मणिद्वीपमें जाते ही हम तीनों स्त्री होगये सोचिये तो सही कि इससे अधिक और हमारी बेइज्जती क्या हो सकती है ? फिर जब मेरे ही लड़के सनकादिकोंने मुझसे ही जीव और ब्रह्म विषयका प्रश्न किया तो मुझमें इतनी भी बुद्धि न रही कि मैं उन्हें कुछ भी जवाब देता तब मुझे चिड़ियाका चेला होना पड़ा मुझमें चिड़ियाके बराबर भी बुद्धि न रही ! फिर महाराजको जय रहे मुझे पुत्री-गमनका भी दोष लगाया और यह भी लिखते लज्जा न आई कि ब्रह्मा, ब्रह्माकी पुत्री और महादेवका बाण तारे बन गये यानी आज तक भी मृगशिरा नक्षत्र वैसे ही निकलते हैं ॥

हमारे परम प्यारे भोलानाथको तो ऐसा बनाया कि एक स्त्रीके शापसे शिवलिङ्ग ही गिर पड़ा फिर समुद्र मथनेके समय विष्णु स्त्री बन गये और महादेव उनके पीछे दौड़े जरा भी खबर न रही कि ये हमारे भाई विष्णु भगवान् हैं। क्या व्यास जी कभी ऐसी बात लिख सकते थे ? हरगिज़ नहीं विष्णुकी तो पुराण बनाने वालेने बड़ी दिल्लगी उड़ाई है कि जिसको सुन के सारे हंसीके रहा नहीं जाता है देवी भागवतमें

लिखा है कि एक राक्षसको मारनेके पश्चात् विष्णु को निद्रा आगई तब विष्णु अपने धनुषके एक कोने पर ठोड़ी रख कर औंघमये उनको औंघते कई क-रोड़ वर्ष बीत गये इतनेमें एक और राक्षस पैदा हो गया तब देवतोंको उसके मारनेकी बड़ी चिन्ता हुई मुझ और भोलानाथको संग लेकर सब देवता विष्णु को ढूढ़ने चले पर विष्णुका कहीं भी पता न चला आखिर मालूम हुआ कि हज़रत एक पहाड़की गुफामें छिपे बैठे हैं तब सब देवता वहीं पहुंचे और विष्णुके जगानेका उपाय सोचने लगे आखिरश मेरी भौहोंसे उड़ने वाला एक कीड़ा निकला और कहने लगा कि मैं विष्णुको जगा सकताहूं मगर किसीको नाहक ही जगाना एजुकेटेड (शिक्षित) और सिविलाइज़्ड (सभ्य) लोगोंकी खासियतसे बाहर है इस लिये मैं विष्णुको नहीं जगा स-कता हूं इस बातको सुनके सब देवता घबड़ाये और बो-ले कि हम आजसे यज्ञमें तुमको भाग दिया करेंगे बस ऐसा लोभ देकर उस कीड़ेको राजी किया और उसने यह सोचकर कि कमानके रोदेको काटनेसे कमान का कोना स्प्रिङ्गकी माफिक उठेगा और विष्णुको जगा देगा प्रत्यञ्चाको काटा मगर उससे विष्णुका सिर ही कटकर उड़गया तब तो देवता लोग ऐसे घबड़ाये जैसे नैपोलियन बोनापार्टके पकड़ जानेसे फ्रेंच लोग घ-बड़ाये थे। परन्तु उस ही वक्त आकाशवाणी हुई कि यह सब देवीकी माया है घबड़ाओ मत विष्णुने मेरी शक्ति (लक्ष्मीकी) इस कारणसे हंसी करी थी कि उनका घोड़ा उच्चश्रवा घोड़ा है बस विष्णुके शरीरपर घोड़ेका

अभी जाग जायंगे—भला ! सोचिये
...न क्राफियोंकी बातें। क्या व्यासजी ऐसा लिख-
सकते हैं ? उम्र दराजी वा दीर्घायुके विषयमें जो पुराण
वालोंने बातें लिखी हैं उनको यहांपर बयान करना
सभासदोंके वक्तको नाहक ही ख़राब करना है बस इ-
तने हीसे समझ जाइये कि विष्णु ही क्या सब देवसों
से बड़ा कौवा और एक कछुआ है ॥

जिस गङ्गाको सृष्टिके वे सब लोग जिनको ईश्वरने आंख दी है जल ही मानते हैं मगर हज़रतोंने उसे स्त्री मुकर्रर कर दिया है। उससे लड़के पैदा होने लगे और फिर उस ही गङ्गामाईको पुत्रघातका दोष लगाया हा-सिल कलाम यह है कि ऐसी असम्भव घड़न्त व्यासजी हरगिज़ नहीं कर सकते हैं अब व्यासजीसे पूछना चा-हिये कि पुराणोंकी असलियत क्या है ? हां एक बात कहना तो मैं भूल ही गया जब हम तीनों देवता मणि द्वीपमें जाकर स्त्री बनगये थे उस समय हमको यह भी खबर नहीं रही कि हम कभी पुरुषभी थे खैर उस अज्ञान को दूर करनेके वास्ते देवीने हम लोगोंको अपने पैरके अंगूठेमें सारी खिलकत दिखलादी। क्योंजी वह पैर का अंगूठा था वा सैरबीन थी। क्या यह मुसलमानोंकी हाज़रातकी नकल नहीं है ? फिर जिस भागवतको मनुष्य पुराणशिरोमणि मानते हैं उसमें तो मुझे प्रत्यक्ष ही अज्ञानी और चोर लिखा है जब कि हम सब देवतों ने ही विष्णुसे कृष्णावतार लेनेकी प्रार्थनाकी थी और उन्होंने हमारे कहने हीसे अवतार लिया था तो क्या हमको यह भी याद न रहता। हे सभापते ! यह आपके

दफ़्तरोंमें भी जरूर ही लिखा
जब गौ बनके वहां आई थी तब सब दे
विष्णु ने कृष्णका अवतार लिया था पर मुझे और आपको
कुछ भी याद न रहा मैंने कृष्णकी गायें चुरालीं और
आपने ऐसी बेअदबीकी कि पानी ही बरसाते रहे
खैर हम भूले सो भूले पर कृष्ण भी भूलगये और चोरी
रूप कुकर्म करनेसे पहिले हमें यह न बतला दिया कि
हम विष्णु हैं व्रजके लोगोंको आपसे माहक तक्लीफ़
दिलवाई अगर यह पहिले ही कह देते कि हम विष्णु
के अवतार हैं तो काहेको इतने झमेले होते मालूम
होता है कि कृष्ण भी भूलगये थे। भला यह तो शोचिये
कि कृष्णके जन्मके पश्चात् हजार फण वाले शेषनाग
जी कीड़ाका रूप धरके सूपमें तो आबैठे परन्तु इतना
न हुआ कि अपने भाई कालीको समझा देते कि यह
हमारे स्वामी विष्णुके अवतार हैं इनसे खबरदार रहना ॥

मैं बहुत ही मुनासिब समझता हूं कि पुराणोंको
तवारीखकी फिहरिस्तसे खारिज करदिया जाय क्योंकि
इनमें बड़े मुबालग़े भरे हैं—देखिये महाभारतके युद्धमें
जब १८ अक्षौहिणी सेना एकत्रित हुई थी तब जगत्में
केवल बालक और वृद्ध ही बाकी रहगये थे परन्तु भा-
गवतमें लिखा है कि जरासन्ध १८ बार तेईस २ अक्षौ-
हिणी सेना लेकर चढ़ २ आया किन्तु जगत्में कुछ भी
कोलाहल न मचा फिर मुचकुन्द और राजानृगकी कथा
गरुड़जीके अमृत लानेकी कथा सरासर मुबालिग़ा है
इस लिये पुराणोंको तवारीखकी फिहरिस्तसे काटदेना

सकल सभासद् द्विजवर सार ग्राहि सूशील।
एम सब अभिनय में चतुर फिर क्यों करनी ढील॥

अथवा

विविध विषय वासना को नाशना को हेतु सोई धर्म्म यामें मुख्य वर्णन पिछानिये। गुण के गहैया निरखैया छन्द बन्द हूं के ऐसे ज्ञानवान ये सभासद् बखानिये। रुद्र हूं अक्षुद्र कवि पवि पाप पुञ्जन को सोई जगदीश या को रक्षक सुमानिये। अभिनय निपुण सकल नट आजकेर शोभा को समाज एक ठौर जिय जानिये?

पर यह याद रखना कि कोई पोप हमारी बातों को न सुन ले नहीं तो बड़ा कोलाहल मचेगा।

(नेपथ्य में)

अरे! रे! निज जननी गर्भभारभूत नराधम! तू कौन है जो हम को पोप कहता है, देख सचेत हो नहीं ऐसा शाप दूंगा कि अपने परिवारवर्ग के सहित भस्म हो जायगा। हम पोप नहीं हैं बरन तुम्हारे वास्ते तोप हैं।

पा० पा०—(सूत्र धार का हाथ पकड़ कर) महाराज! भागिये, भागिये पोपराज ने हमारे वचन को सुन लिया वह देखिये त्रिफंका तिलक लगाये शिखर खोले शंख चक्र से दग्ध बाहुं वाले पोप महाराज चलेआते हैं।

(सब का प्रस्थान)

इति प्रस्तावना।

—:※:—

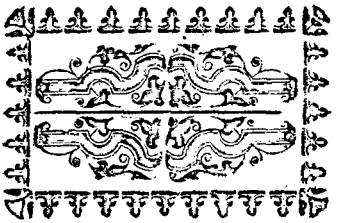

वि.-८२
२३,८२
३५५०
वि.पु.१५

॥ ओ३म् ॥

आर्य्यमत मार्त्तण्ड नाटक ।

प्रथम अङ्क ।

(स्थान काशी का दशाश्वमेध घाट एक मुमुक्षु का प्रवेश)

मुमुक्षु—यह जगत् क्या यथार्थ में दुःखरूप ही है? मुझे तो यही जान पड़ता है कि बुद्धिमानों ने इस का दुःखसार होने ही से संसार नाम रक्खा है जिस समय परिवार के लोग धन मांगते हैं उस समय मनुष्य कैसे संकट में पड़ता है फिर जब द्रव्य कमाने को बाहर जाता है तब उसे सहस्रों अपमान और संकट भोगने पड़ते हैं, शरीर के रोगादि तथा काम, क्रोध, लोभ मोह से उत्पन्न हुए मानसिक सन्तापों से चित्त हर समय उत्तापित रहता है एक आश्चर्य्य और भी देखने में आता है यदि स्त्री वा पुत्र को रोग होता है तो उस का दुःख मनुष्य को अपने शरीर में मानना पड़ता है कहां तक कहैं स्वप्न भी तो दुःख के ही दीखते हैं, अब तो मैं इन दुःखों से घबड़ा गया हूं इस से ऐसा आश्रय ढूंढना चाहता हूं जिस से इन दुःखों से कुछ त्राण मिले पर इन से छुटने का उपाय तो धर्म्म के सिवाय और कुछ है ही नहीं अच्छा तो चलूं किसी विवेकी धर्म्मात्मा से दुःख छुटने का उपाय बूझूं (इधर उधर देख के गाता है)

॥ भजन ॥

मूढ़ भये दुःख में लपटाने अब चलन का फिकर करो, टेक
बालपन में परवश हो के ज्ञान हीन खिलवाड़ करो,
तरुण भये तरुणी रंग राते भटकत जग में नित्य फिरो ॥१॥
धनलोलुप पर दास भिखारी कबहुं न सोचत पर उपकारी,
वाम धाम और दाम संवारत नाम करन को धर्म विचारत,
वृद्ध भये तन कम्पन लागा खान पान तज आप मरो ॥२॥

मैंने सुना है कि धर्म करने से मनुष्य को सुख मिलता है सब सन्ताप दूर होजाता है और मुक्ति का परम आनन्द प्राप्त होता है अतएव मुझे उस की प्राप्ति का ही उपाय करना चाहिये ।

(दो चक्रांकितों का सारे शरीर पर त्रिफंका तिलक लगाये कमलाक्ष और रेशमी वस्त्र पहिरे प्रवेश)

१.—चक्रांकित—रामानुजार्य्य चरणौ शरणं प्रपद्ये (दूसरे को देख के) अड़िएंग् स्वामी अड़िएंग् ।

दूसरा—दासोस्मि

पहिला—आप का नाम धेय क्या है ?

दूसरा—इस अज्ञ दास का नाम श्री प्रपन्नांग रामानुजदास है, श्री आचार्य्य देव का दिया आपका नाम क्या है ? और आप कहां पर समाश्रय हुए थे ?

पहिला—इस शरीर का समाश्रय संस्कार तो तोताद्रि के पवित्र धाम में श्री महेन्द्राचारी जी के उपदेश से हुआ था और श्री आचार्य्य का दिया नाम पुण्डरीक रामानुज दास है जब यह दास श्री निवासाचारी की सेवा में श्री भगवत् के पवित्र धाम वृन्दावन में था तब

श्रकल पुंगल में और गोष्टी में भी भाग पाता था परन्तु जब से इस काशी नगरी में यह दास आया है तब से तो श्रीरंगस्वामी को भोग मिलना भी कठिन हो रहा है यदि श्रीकृष्णाचारी जी यहां न होते तो अपने भगवान् को बैठने को भी स्थान न मिलता।

दूसरा—अच्छा यह तो कहिये कि इस नगरी में जो महादेव के अधिक मन्दिर हैं उन के दर्शन जो हम से वैष्णवों को होजातेहैं उसका प्रायश्चित्त क्या करना चाहिये?

(रुद्राक्ष की माला पहिरे भस्म का त्रिपुण्ड लगाये एक शैव का प्रवेश)

पंच चामर छन्द।

जटा कटाहसम्भ्रमद्भ्रमन्निलिम्प निर्झरी।
विलोलवीचिवल्लरी विराजमान मूर्द्धनी॥
धगद्धगद्धनिज्वलल्ललाटपट्टपावके।
किशोरचन्द्र शेखरे रतिप्रतिक्षणम्मम॥

भाषा।

जटा कड़ाह में फिरे सुगङ्ग की तरङ्ग है।
विशाल भाल नैन में हूं आग की उमङ्ग है॥
फणीश बीश सीसपै, न अंग में अनङ्ग है।
नगेन्द्र की किशोरी नाथ वोहिभक्त सङ्ग है॥

शैव—(चक्रांकितों की बात को सुन कर) तुम ने कौन से पशु कुल में जन्म लिया है जो साक्षात् कैलाश वासी सुख राशी अविनाशी शिव के दर्शन को पाप समझते हो, अरे! यहां तो ईसाई और मुसलमान भी श्री काशीपति विश्वनाथ के दर्शन करके अपने पापोंसे

मुक्ति पा जाते हैं, हां! हां! स्मरण आगया श्री स्वामी काशीगिरी जी तुम ही लोगों के चिह्न बताया करते थे–उन का ही यह वचन है:–

मातर्दक्षिणदेशे बहवो पशवो मया दृष्टाः।
मृन्मयशृंगाः पशुपति विमुखाश्चक्रत्रिशूलैर्दग्धांगाः॥१॥

चक्रांकित–(क्रोध से) अरे! तू कौन है जो श्री वैष्णवों को पशु बतलाता है, अरे! तू कुछ पढ़ा है या नहीं?

शैव–(हंस कर) मैं सिर्री बिसनौ उन्नीस नहीं समझता यह बताओ कि तुम हो कौन? आस्तिक हो वा नास्तिक? पर आस्तिक होते तो शिव के दर्शन को पाप क्यों समझते?

चक्रांकित– अरे! भारतभूमि भारभूत; भूत पिशाच सेविन्! अब भी तू हम से परम भागवतों का उपहास करता है निश्चय होता है कि तू कुछ पढ़ा नहीं है और न किसी विद्वान् गुरु से शिक्षा ली है, देख भक्तमाल में लिखा है—

छप्पै छन्द।

"चौबीस प्रथम हरि वपुधर्यो तो चतुर व्यूह कलियुग प्रकट।
श्री रामानुज उद्दार सुधानिधि अवनि कल्पतरु,
विष्णु स्वामी रोहित संसार पार करु,
मध्वाचारज मेघ भक्ति शरन सर भरिया,
निम्बादित्य आदित्य कुहर अज्ञान जू हरिया,
जन्म कर्म्म भागौत सम्प्रदाय थापी अघट॥

शैव–बस! बस! समझ लिया,

"समाचार सब भोज के पाये, मट्ठा (छाछ) परोसन पहिले आये" जिस सम्प्रदाय के तुम हो उस की जड़ बुन्याद सब मालुम होगई, छीपा पीपा के वचन प्रमाण जिस में माने जाते हैं उस के दास तुम लोग शिव की महिमा को क्या जानो ? किसी कविने सत्य कहा है—

सवैया।

गीतागिरी गिर कन्दर में वन अन्दर में सब वेद लुकाये,
धर्म के ग्रन्थन को नहि पन्थ विना पढ़ि लोकन पन्थ बढ़ाये।
रविदासकीबातकीआशसबै कलिकालअज्ञाननेआनदबाये,
अज हूं जो विवेक विराग भरे उनके डर में गुरशत्रु सुहाये॥

अच्छा तो यह मालुम भया कि तुम वैष्णवों की कलियुगी ४ सम्प्रदायों में से किसी के अनुगामी हो पर यह न जाना कि उन में से किस में तुम हो ?

चक्रांकित—(महा क्रोध से) अरे ! तू बड़ा ढीठ जान पड़ता है, तैने जो मुख्य भागवतों की श्री सम्प्रदाय को कलियुगी बनाया इस में किसी शास्त्र का प्रमाण दे नहीं अभी तेरा खून पीलूंगा।

शैव—(हंस कर) अरे ! हम क्या तेरे समान मूर्ख हैं जो भाषा के प्रमाण देंगे देख पद्मपुराण में लिखा है।

सम्प्रदायविहीनायेमन्त्रास्ते निष्फलामताः।
अतः कलौ भविष्यन्ति चत्वारः सम्प्रदायिनः॥
श्री माध्वीरुद्रसनका वैष्णवाः क्षितिपावनाः।
चत्वारस्तेकलौ देविसम्प्रदाय प्रवर्त्तकाः॥

चक्रांकित—अरे ! यह वचन किसी विद्वेषी का है श्री सम्प्रदाय सनातन है, देख पद्मपुराण ही में लिखा है

"ये कण्ठलग्नतुलसीनलिनाक्षमालाः।
ये द्वादशांगहरिनामरतोर्द्धपुण्ड्राः॥

ये कृष्णभक्तिसुदृढाः धृतशंखचक्राः ।
ते वैष्णवा भुवनमाशु पवित्रयन्ति ॥

और भी ।

यो मृत्तिकां द्वारवती समुद्भवाम् ।
करे समादाय ललाट पट्टे ॥
करोति नित्यं त्वथ चार्द्धपुण्ड्रम् ।
क्रिया फलं कोटि गुणं सदा भवेत् ॥

और सुन ।

आदाय परमाभक्त्या वेंकटाद्रेर्हरेर्मृदम् ।
धारयेदूर्द्धपुण्ड्राणि हरिसालोक्य सिद्धय ॥
यदूर्द्ध पुण्ड्रं तिलकं शोभनन्तन्मनोहरम् ।
तन्मध्यपीतरखं च श्रीमद्रामानुजं विदुः ॥

शैव–ठीक है बस मालूम होगया तुम्हारे मत के आचार्य्य षट्कोण भी तो होम थे–तब उनके दासानुदासों को तुम्हें शिव की भक्ति कहां से होती देखो तुम्हारे ही मत के ग्रन्थों में लिखा है–

विचक्षणो विश्वविमोह हेतोः ।
कुलो चिताचार कलानुषक्तः ॥
पुण्यम्महीशूर मथो विधाय ।
विक्रीय सूपं विचचारयोगी ॥

चक्रांकित–अरे वह तो साक्षात् अवतार थे उन को होम क्या बताता है वैष्णवों का यह सिद्धान्त है ।

ब्राह्मण' क्षत्रियो वैश्यः शूद्रोवाय दिवेतरः ।
विष्णु भक्तिसमायुक्तो ज्ञेयस्सर्वोत्तमश्चसः ॥१॥
शंखचक्रांकिततनुश्शिरसा मंजरीधरः ।
गोपीचन्दन लिप्ताङ्गो दृष्टश्चेत्तदयं कुलः ॥

शैव–(कुछ क्रोध से) अरे ! बस बस ज्यादा बक-बाद मत करे तुमलोग आचार हीन होकर भी अपने को परम शुद्धाचारी और पवित्र जानते हो, तुम लोग जब किसी को दागते हो तब उस के जले मांस रुधिर से भरी हुई लोहे की मुद्रा को दूध में बुझा कर अपनी गोष्ठी में पीते हो इस लिये शास्त्रों में तुम को पतित लिखा है देखो बृहन्नारदीय पुराण में तुम से बोलने का भी पाप लिखा है।

तद्विजंतप्तशंखादिलिंगांकिततनुंहर !
सम्भाष्यरौरवं यांति यावदिन्द्राश्चतुर्दश ?
तथा हि तप्तशङ्खादि लिङ्गचिन्हितनुर्नरः।
स सर्वपातकाभोगी चाण्डालो जन्मकोटिभिः॥

चक्राङ्कित–अरे ! यह वचन किसी तमोगुणी पुराण के हैं इस लिये मानने योग्य नहीं हैं हमारे श्री वेंकटाचार्य्य ने केवल ६ पुराणों का प्रमाण माना है और पुराणों को तमोगुणी और रजोगुणी कहा है, मानने योग्य यही ६ पुराण हैं विष्णुपुराण, नारदीयपुराण, गरुड़पुराण, पद्मपुराण, वाराहपुराण, और भागवत बस इनको छोड़ के और पुराण तमोगुणी हैं यह बात चण्ड भारुत और पञ्चरात्र आदि पुस्तक में लिखीहुईहै।

शैव–खैर ! यह तो सब बात हुई पर यह तो बताओ कि दग्ध होने से क्या धर्मकी वृद्धि होती है।

च०–अरे ! फिर धर्मनिन्दा करता है–देख तप्त संस्कार होने से ही मुक्ति होती है। जब यमदूत जीव को लेने आते हैं तब वह तिलक और चक्रादि के चिह्न को देखकर चलेजाते हैं।

शैव–यदि यह बात है तो एक लोटे पर तिलक लगाकर रोगी के पास रख देने से भी यमदूत चले जा सक्ते हैं फिर शरीर को क्यों जलाना?

च०–अरे! तू बड़ा कुतर्की है, केवल यमदूत ही नहीं देखते बरन यमराज भी इन चिह्नों को देखकर बैकुण्ठ धाम देता है।

शैव–निस्सन्देह तू मूर्ख है भला यमराज के सम्मुख जीव जाता है वा पञ्चभौतिक शरीर जाता है तथा यह दाग़ शरीर पर लगता है वा जीव पर यदि लोहे की सलाई को तपाकर तुम्हारे पेट के भीतर दागा जाता तो शायद तुम कहते कि जीव पर दाग लग गया॥

शैव–अरे! बस रहनेदे जब कि तुम लोग पुराणों को नहीं मानते इससे ही तो हम तुम्हें–नास्तिक कहते हैं देख अधिक क्या कहूं तुम लोगों के स्पर्श करने का भी धर्म नहीं है लिखा भी तो है–

यथास्मशानजं काष्ठं सर्वकर्मबहिष्कृतम्।
तथा चक्राङ्कनो विप्रस्सर्ववर्णबहिष्कृतः॥

चक्राङ्कित–अरे! बकवादही किये जाता है, देख तेरा इष्टदेवही भयङ्कर वेषधारी है यथा "स्मशाने क्वा क्रीड़ा स्मरहरपिशाचास्सहचरा-चिता भस्मालेपः स्रगपिनकरोटि परिकरो–अमङ्गल्यं शीलमित्यादि।

शैव–अरे! इष्टदेव की भी निन्दा करता है अरे तेरे इष्टदेव को गीतगोविन्द में कैसा लिखा है।

नायातः सखिनिर्दयो यदिशठः।

त्वं दूतीकिं दूय-और क्या लिखा है—

तव पादयोः प्रपतामि—

शिव ! शिव ! क्या ऐसे खेल भी पूज्य होसक्ते हैं ?
देखो देवीभागवत में भी क्या लिखा है—

विहाय लक्ष्म्याः सहसा विहारं।
कोयाति मत्स्यादिषु हीनयोनिषु ?

(नेपथ्य में कोलाहल मद्य में मत्त एक शाक्त का प्रवेश)

ठुमरी।

मुकुट विचित्र चित्र देखि मन मोह्यो आज।
मन में बसी है यह मूरति सुहावनी॥
जोगनी जमात कर खप्पर बजावैं मात।
भैरों की समाज गावे भूतन नचावनी॥
शीश बाल खुलकर आये तो चरण लगि।
देखिके गईं पताल भागि सारी नागिनी॥
देख कटि भाग गये केशरि लजाय वन।
किङ्किणी किणी खि कीखि किङ्किखि बजावनी॥
देखिके अनूपरूप चकित भये हैं भूप।
तीनलोकमांहिनाहिं कोई ऐसी दामिनी॥५॥

अरे ! इस जगत् के मनुष्य बड़े मूर्ख हैं जो धर्मके नाम से अधर्म कर रहे हैं, समझते को बात है कि जब हम अपने शरीर पर ही दया न करैंगे और इसे विषयों से रहित करके सुखा डालेंगे तब हमको धर्म करने की शक्तिही कहां रहैगी, आजकल कितनेही मिथ्या धर्माभिमानी शैव और वैष्णव कहते हैं कि हम विषयों से रहित हैं पर उनका कहना ऐसाही है जैसे—

नङ्गा कहै उजाड़ में, ले कोइ कपड़े दाम।
मूक करै अभिमान चित, बूरोग़ज़लके गान॥

इसके सिवाय जो मनुष्य किसी कारण से यहां दुःख भोगता है वह पूर्व जन्म का अवश्य पापी है॥

यह देखोः—

कोई करत उपवास भूख से देह सुखावें।
कोई साधत जोग भोग से मन ललचावें॥
कोई हाथ उठाई करत करको बेकामा।
पञ्चअग्नि में ताप कोई चाहत सुरधामा॥
कोई दुर्गम बनहिं बीच अभ्यास करतहैं।
कोई भ्रमत भ्रम छाय तीर्थ में जाय मरतहैं।
कोई रमावे भस्म याहि से मुक्ती माने।
बेद पाठको आठ जाम कोई धर्मपिछाने॥
सबहिं मूढ़ कोई गूढ़तत्वको जानतनाहीं।
बाममार्गको छोड़ कभी सुख पावत नाहीं॥
मद्यमांस अरु मीन चतुर्थी कही जो मुद्रा।
पञ्चम मैथुन जान यही हैं भोग समुद्रा॥
कर इनसे तन पुष्ट इष्ट को करै सुध्याना।
भोग मोक्षका द्वार यही हमने मत माना॥

फिर जिस शास्त्र को स्वयम् शिव महाराज ने बनाया है उसही में लिखा है—

यत्रास्तिभोगो नहि तत्र मोक्षो यत्रास्तिमोक्षो न हि तत्र भोगः
श्रीसुन्दरीपूजनतत्पराणाम् भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव॥

फिर चीना चार में तो सात मकार लिखा है ओ हो! क्याही घृणा रहित धर्म है मल मूत्र का भी जिस में ग्रहण है।

(शैव और वैष्णव चकित होकर देखते हैं)

शैव—अरे यह कपाली कहां से आया।

शाक्त—तुम्हारी कपालक्रिया करने को।

शैव—कौलिका मुक्ति मिच्छन्ति स्पष्ट मेतद्विडम्बनम्।

शाक्त—अरे! तू कौलमार्ग की गतिको क्या जाने किन्तु जिसका तू भक्त है उस शिवही ने आगम शास्त्र बनाया है और उसही में शाक्त मत की उत्तमता लिखी है यथा—

वैष्णवादुत्तमं शैवं, शैवाच्छाक्तम्महोत्तमम्।
शाक्तेषुकौला श्चिज्ञया, कौलात्परतरंनहि॥

अथवा—

१ २ ३
वामेवामारमणकुशलादक्षिणे चालिपात्रम्।
४ ५ ६
अग्रेमुद्रा सरस वटुकाः शूकरस्योष्णशुद्धिः।
पृष्ठे वीरा विविध विषयाभोगभावैकभव्याः।
कोलोमार्गः परमगहनोयोगिनामप्यगम्यः॥

१ २ ३
नोटः—स्त्री, शराब का प्याला,
४ ५ ६
पूरी, बरे, सुवर का मांस—

और सुन—

हालां पिबन्दीक्षितमन्दिरेषु स्वपक्षिशायां गणिका गृहेषु।
गृहे गृहे चर्वणमेव कुर्वन् विराजते—कौलिकचक्रवर्त्ती॥

और भी—कवित्त।

कारण के पान से समान भये विप्र शूद्र,

खान पान मांहि नाहिं भेदहूं इतै रह्यौ।
अंगना को लाय अंग संग में विहार करैं।
आनंद उमंग में सुशीलहूं कितै रह्यो॥
कोई करै बमन शमन कोई चित्त करै,
कोई ज्ञान ध्यान से सुकाल को बितै रह्यौ।
बोतल बजावे कोई गावै मुस्क्यावै कोई,
देखिबीर–मण्डलीक मण्डली चितै रह्यौ॥

शैव–यह तो तू ठीक कहता है पर मद्य पीनेवालों को धर्म का ध्यान ही कहां रहता है देख मनुस्मृति में मद्य का निषेध लिखा है क्योंकि मद्य पीने से बुद्धि का नाश होजाता है।

" बुद्धिर्लुम्पति यद्द्रव्यमदकारीतदुच्यते "

अर्थात् जिस पदार्थ से बुद्धि का नाश हो उसे मद्य कहते हैं, और भी–

गौडी पैष्टी तथा माध्वी विज्ञेया त्रिविधा सुरा।
यथाह्येका तथासर्वा नपेयास्ताद्विजातिभिः॥

अर्थात् गुड़ की, जौ की, और महुये की यह तीन प्रकार की मद्य होती हैं इन में से जैसी एक वैसी सब द्विजातियों को यह न पीनी चाहिये—

शाक्त–बस जान लिया तुमने आगम शास्त्र कभी स्वप्न में भी नहीं देखा है, ऐसीही कुलकों के खण्डन करने के वास्ते ही शिव महाराज ने तन्त्रशास्त्र में लिख दिया है कि धर्मशास्त्र में जिन कर्मों की विधि है उनका तन्त्र में निषेध है और जिन कर्मोंका धर्मशास्त्र में निषेध है उनकी तन्त्र में विधि है, जैसे–

सोरठा—

तीर्थ गमन उपवास, व्रत बन्धन संन्यास पुनि।
इनसे होहु निरास, यही कौल कुलरीत गुनि॥

फिर यह भी लिखा है कि—

प्रवृत्तेभैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः।
निवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा पृथक् पृथक्॥

अर्थात् भैरवीचक्र में सबही वर्ण ब्राह्मण हैं और भैरवीचक्र से निवृत्त होने से सब वर्ण अलग २ होजाते हैं इसही कारण से जगन्नाथ में सब जाति के मनुष्य एक सङ्ग खाते हैं।

वैष्णव-(क्रोध से) अरे! तू बड़ा पाखण्डी जान पड़ता है साक्षात् विष्णुस्वरूप जगन्नाथ को भी दोष लगाता है।

शाक्त-हम किसी को दोष नहीं लगाते किन्तु जगन्नाथ आदि जितने भैरव हैं वे सबही तो मद्य मांस सेवी हैं। तुम्हारे परम मान्य उत्कल खण्डही में लिखा है, कि एक वर्ष की रथयात्रा में जगन्नाथ जी रथ से गिर पड़े तब पुरी के राजा तथा यात्रियों ने कहा कि बड़ा भारी उत्पात हुआ, तब सबका समाधान करने के वास्ते आकाश वाणी हुई:—

औत्पातिकं तदिह देव विचारणीयम्।
दामोदरः पतति चेदथवा सुभद्रः॥
कादम्बरीरस विघूर्णितलोचनस्य॥
युक्तं हि लां लपने पतनं पृथिव्याम्॥

अर्थात् यह उत्पात चिन्त्यहै चाहे कृष्ण गिरें वा

बलदेव गिरें क्योंकि मद्य में जिसके नेत्र लाल हुये रहते हैं उसका पृथ्वी में गिरना योग्यही है।

वैष्णव–अरे! तैंने जगन्नाथ को भैरव कैसे कहा?

शाक्त–मैंने सत्य कहा है देख जहां सिद्ध पृष्ठ गिनाई है वहां लिखा है—

"उड्याने विमला क्षेत्रे जगन्नाथस्तु भैरवः"

अर्थात् उड्यान पीठ की अधिष्ठात्री देवता श्री बिमला देवी हैं और उसके भैरव जगन्नाथ जी हैं, यदि यह न होता तो वहां कोकसार में लिखे चौरासी आसनों की तसवीर क्यों होती इसके सिवाय यह तो बतला कि वहां पर तीन मूर्त्ति किस २ की हैं?

वैष्णव–क्या तू जगन्नाथ जी की पुरी में नहींगया।

शाक्त–तुझे इससे क्या पर तू इतनाही बतला कि वहां मूर्त्ति किसकी हैं?

वैष्णव–वह बुद्धावतार की मूर्त्ति हैं।

शाक्त–तेरा शिर है–भला बुद्ध के संग स्त्री कहां!

वैष्णव–ठीक है! मैं भूल गया उन मूर्त्तियों में एक कृष्ण भगवान्, दूसरी सुभद्रा जी, और तीसरी बलभद्र जी की है।

शाक्त–भला जिस मूर्त्ति की बांई ओर सुभद्रा हुई उससे उसका क्या सम्बन्ध हुआ।

वैष्णव–अरे तू बड़ा पापी है।

शाक्त–इस बरसेही तो मैं कहताहूं कि जगन्नाथ भैरवचक्र पर स्थित हैं और जगन्नाथ विष्णु की नहीं बरन भैरव की मूर्त्ति है॥

फिर जगन्नाथही क्या जिन राम कृष्णके तुम लोग उपासक हो वह भी तो मद्य के सेवी थे यदि श्रीकृष्ण महाराज मद्य न पीते तो उनके कुल के यादव गण मद्य पान से विनष्ट क्योंकर होते क्या भागवत में यह झूंठही लिख दिया है॥

वारुणीम्मदिरापीत्वा मदीन्मथितचेतसः।

अर्थात् यादव लोग प्रभास क्षेत्र में बारुणी मदिरा को पीके मत्त होकर (परस्पर लड़ने लगे) फिर वैष्णवों के परममान्य भगवत् भक्त जयदेव जीके बनाये गीत-गोविन्दही में देख लीजिये लिखा है।

स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा।
रोचयति लोचनचकोरम्।

अर्थात् तुम्हारे ओठ मदिरा के पान से चञ्चल हो रहे हैं और बलराम जी को तो श्रीमत् भागवत् में तथा गर्गसंहिता में भी स्पष्ट रूपसे मद्यप लिखा है क्योंकि द्विविदमयन्द को जो बलराम ने मारा था उन का तो केवल यही अपराध था कि उन्होने बलदेव जी के रास के समय में मदिरा के घड़े फ़ोड़ दिये थे पर एक बड़ा आश्चर्य्य है कि जब बलदेव जी द्वारिका से वृज में लौट कर गये तब उन्होंने कौनसी गोपिकाओं से रास किया था? जिन गोपिकाओं से श्रीकृष्ण महाराज ने रास किया था क्या वृज में उनके अतिरिक्त और भी गोपिका थीं? यदि थीं तो भागवत का लेख झूठा हुआ और जो नहीं थीं तो वाममार्ग की रीति आय गई।

इस के अतिरिक्त भागवत ही में लिखा है कि "उभौ मध्वा सवक्षीवौ दृष्टौमेकेशवार्ज्जुनौ" अर्थात् व्यास

जी कहते हैं कि मैंने कृष्ण और अर्जुन को सदा मद्य और आसव के नशे में मतवारा देखा।

वैष्णव-अरे! कपाली! तन्त्र को हम लोग मूढ़ का बनाया मानते हैं क्योंकि जिस शिव को तू ईश्वर मानें बैठा है उसे हमारे ग्रन्थों में मूढ़ लिखा है यथा "त्वामप्राप्यस्वयं स्वयंवर परांक्षराद तीरोदरे शंके सुन्दरीः कालकूटमपिवन् मूढ़ा मृडनिपतिः"

गीतगोविन्द में लिखा है कि श्रीकृष्णभगवान् राधा से कहते हैं कि हे सुन्दरी! समुद्र के तटपर जब तुम ने स्वयंवर रचा तब तुम्हे न पाकर मूर्ख पार्वतीपति ने विष पान कर लिया था।

शाक्त-निस्सन्देह तू और तेरा गुरु मूर्ख है क्योंकि जो तुम्हारा परम इष्ट ग्रन्थ भागवत है उसे तू नहीं मानता है देख भागवत में लिखा है "विधिनोपचरेद्देवन् तन्त्रोक्ते न च केशवम्" अर्थात् विष्णुदेव की तन्त्रोक्त रीति से पूजा करनी चाहिये, फिर यह भी तुझे ज्ञान नहीं है कि विष्णुने मत्स्यावतार धारण क्यों किया देख! लिखा है-

कौलिकानां हितार्थाय मत्स्योभूद्भगवान्हरिः।

अर्थात् कौल लोगों को प्रसन्न करने के वास्ते ही विष्णुने मछरी का अवतार धारण किया था।

(एक और शाक्त का प्रवेश नेपथ्य में कोलाहल)

ठुमरी-(राज दुलारे की चाल)

चरण रतिदे जगदम्ब शिवे-टेक

कमलध्वजजामेंवेमेरेमनमानें-चरण रति० १

मधुकैटभ से चकित भये हरि हे-न कुछ
बनिआई-भई हो सहाइ, करैं सुर जै जै
गाना हे चरण रति०—२
शुम्भ निशुम्भ देव दुःखदाई है, प्रबल
रिपु मारे देव-दुःखटारे तेरी महिमा
जग छाई हे चरण रति० ३

पहिला शाक्त=आर्य्ये ! आर्य्ये ! कहिये कुछ तीर्थ सेवा की सामग्री भी है ?

पिछला शा०—अः ! हम कभी खाली रहते हैं और कुछ नहीं तो तीर्थ में भीगे पुष्प (चावल) तो अवश्य ही पास रहते हैं क्योंकि सन्ध्या के समय नित्य ही तर्पण करना पड़ता है पर यहां पर तो पशु लोग इकट्ठे होरहे हैं ।

पहिला—यह खूब कही ! बीरों को पशुओं से क्या भय है लिखा है ।

गरुचरणरताहं भैरवीमाश्रितोहं ।
पशुजनविमुखोहं भैरवाहं शिवोहम् ॥

पिछला—अच्छा तो तर्पण करना चाहिये ।

पहिला-हां तो निकालिये ।

(पिछला शाक्त शराव, सूखा मांस और मट्टी की प्याली निकालकर देता है और प्यालियों में शराब, भरकर दोनों तर्पण करते हैं)

पिछला-(दोनों हाथों की कनिष्ट अंगूठे की मुद्रा बना के और उस में मांस का टुकड़ा लेकर शराब में भिगोकर गुरु तर्पण करता है) सहक्ष मलवर यूं हसक्ष मलवर यीं सहखफ्रें अमुकानन्द नाथस्य श्रीपादुकां

पूजयामि तर्पयामि (हृदय से लगाकर) ह्सक्षमलवर यूं सह्क्षमलवर ससखफ्रें बगला देवीं पूजयामि तर्पयामि।

(दोनों हाथों में त्रिखंडा मुद्रा बना के शराब की प्याली रखते हैं और गुरु पात्र पढ़ते हैं)

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं, पीठत्रयं भैरवं ।
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुग, दूतिक्रमं शाम्भवम् ।
वीरें चाष्ट चतुष्टषष्टिनवकं, वीरावलीपंचमं ।
श्रीमन्मालिनमंत्रराजसहितम्, वन्देगुरोर्मण्डलं ।

(जुहोमिपरमामृतम् कहके पीते हैं)

चक्रांकित—अरे महानीच से पल्ला पड़ा! यह शराबी कबाबी नबाबी जता रहा है अच्छा तो अब यहां बैठना अच्छा नहीं है—

(शैव से) चलिये चलिये यहां हमारा और आप का निर्वाह नहीं है ।

शैव—ठीक है—

अपसरणमवशरणम्मौनम् तत्रराज ।
हंसस्य कटुरटति निकटवर्त्ती वाचष्टिट्टिभोयत्र ॥

(सब जाते हैं)

इति प्रथमाङ्कस्य प्रथमगर्भाङ्कः ।

—:※०※:—

॥ द्वितीय गर्भाङ्क ॥

(स्थान वृन्दावन की ज्ञान गूदड़ी)

मुमुक्षु का प्रवेश नेपथ्य में

ठुमरी ।

नहीं ले है खबर मेरी कब तक
हे परमेश्वर दीन बन्धू (टेक) ।

तारे गिन गिन रैन कटत सब
अब कहो कीजे कौन जतन मन ॥
अब कहो कीजे कौन जतन,
हारे वैद्य लखन नारी कीन्हो ।
रुग्न वा सकल खलक ॥ १ ॥
भवभयभीत भ्रमत निशि वासर,
सरन मिलतनहिं कहिं दुःखियाजन ।
काम क्रोध मद मत्सर गण
करत घात तन मन तक तक ।
नहिं ले है० ॥ २ ॥
भूषण बसन अशन हम त्यागे,
जब से लागी लगन मन जब से ।
लागो तेरो लगन जरद रंग नित,
उमगति छतियां अखियां तड़फत
ललक खलक ॥ ३ ॥
कोई काबा काशी कोई धावत
गिरिजा कोई शोर मचावत ।
पावत नहिं तोहि को परमेश्वर
बैठ रहे सब हीं थक थक ॥ ४ ॥

अच्छा तो आज यही विश्राम चाहिये आः ! यह सामने कौन चले आते हैं ? क्या वह स्त्री है नहीं नहीं मुझे भ्रम है अरे यह तो स्त्री ही है, मुझे इन की ओर से मुख फेर लेना चाहिये क्योंकि धर्मशास्त्र में लिखा है–

स्वभाव एष नारीणान्नर णामिहदूषणम्
अतोर्थान्नप्रमाद्यन्ते प्रमदासु विपश्चितः

और और भी किसी ने कहा है–

॥ कवित्त ॥

नरक निशानि अवखानि जो बखानि वेद हानि जप तप रजधानि काम क्रोध की। कान कों नसानि उसकानि मोह मद हूं की जाकी मुसकानी से सकानी गति बोध की॥ सुख बिलगानि सुलगानी काम दावा नल तन धन हानि होत हेतु अवरोध की। कामीजन मानि अरु ज्ञानी से डरानि हिय तिय जग बीच नीच कारण विरोध की॥

इनही के कराल कटाक्ष की कुटील कृपाणधार में पड़ कर ऋष्यशृङ्ग और पराशरादि के उत्कट तपोबल का विध्वंस हुआ था, इन्ही के रूपसागर में रावण और कीचक आदि बड़े २ बली डूब गये ठीक—

दोहा।

तन समुद्र मन लहर है, रूप कहर दरियाव।
बेपर भुजा सिकन्दरी, यहांन आव न आव॥

(सावधान होकर) पर यह तो परमेश्वर का पवित्र धाम वृन्दावन है इस में काम और क्रोधादि से भय नहीं है क्योंकि मैंने अनेक वैष्णवों के मुख से इस की ऐसी ही प्रशंसा सुनी है।

दोहा।

वृन्दावन की लता सम, कोटि कल्प तरु नाहि।
रजकी सम बैकुण्ठ नहीं, और लोक केहि माहि॥
वृन्दावन की गैल में, मुक्ति पड़ी किलकाय।
मुक्ति कहै गोपाल से, तू मेरी मुक्ति बताय॥

(सखी पन्थवाले दो वैष्णवों का प्रवेश)

एक सखी—हय! हय! सुने रात भर नींद न आनेदी

दूसरी–तो बौरी! काहे को प्रेम करे थी

एक स०–बहनी मैं का ऐसो जाने थी

दूसरी–हां! हां! तू काहे कों जाने थी राधा और ललितादिकन कों कथा नाय सुनी हुती? सखी! जो घर घर माखन चोरावत फिरत है बा को चित्त चोरावन में कहा पाप जान परैगो

एक स०–बौरी कहा बकतु है मैं हूं वाके संग अघ पंक्तिभाव को छोड़ मुख मोड़ बैठूंगी

होली।

स्याम के संग बैर करूंगी (टेक)

काली कालिन्दी के जल मांहि नाहि स्नान करूंगी,
कारो कसाइन कोयल कूकन कबहूं नाहि सुनूंगी।
नीलपट धोय धरूंगी॥ स्याम के०॥
नीलकमल को कर से न छ्वैहों, काली वेन्दी न लैहों,
काले मृग को मृगमद प्यारी घर से दूर धरूंगी।
केश निज नोच मरूंगी॥ स्याम के संग०॥
स्यामघटा पर ऊंची अटा से कबहुं न दृष्टि धरूंगी।
कारो काजर नैन न दैहों, कारे सांप हरूंगी। काहु
संग आज लरूंगी, स्याम के संग बैर करूंगी॥

मुमुक्षु–हे परमेश्वर यह क्या भेद है! इन दोनोंका स्वर तो पुरुषों के समान है और वेष स्त्रियों का धारण किये हैं, इन का पता जानना मुझे परम आवश्यक है क्योंकि यह भी एक धर्मसम्प्रदाय जान पड़ती है

(उठके उनके पीछे २ जाता है)

स्थान एक मन्दिर एक स्त्री भेषधारी महन्तजी गद्दी पर बैठे हैं और थोड़े से उस ही रूप के शिष्यवर्ग इधर उधर फिरते हैं।

छबीली सखी-(महन्त से) मात! आज रसोई ब-नाने की पारी चन्द्रावली की है

महन्त-तू कैसी लरकिनी है अमनिया बनावन में तू सदा अमखनात रहत है ।

छबीली-मैं काहे को अनखनाती रसोई करवे की पारी सो मेरी हती पर आज सों मेरो ऋतुकाल आ-रम्भ होयगो ।

महन्त-दूरहो बौरी अबार क्यूं करतु है ।

छबीली-जातहो मुरारे तेहि आज जीव घबड़ाय रह्यो है ।

चन्द्रावली:-मातः केलिगृहेन यामिशयने कस्मापव चन्द्रानने, जा माता तव निर्दयो हि शुभगे बध्वा तु तु मां पीड़ति—

दोहा ।

मैं जननि! नहि जाऊंगी, शयन भवन में आज ।
जा माता तव निर्दयी, हरे हमारी लाज ॥

महन्त-सुनयने ! नयने !

कुरु कज्जलम् सुजघने ! जघने कुरु भूषणम् ।
प्रियतमे ! प्रियतमाशु व्रजाधुना शशिमुखिमुखतो वचनं वद॥

दोहा ।

भूषण वसन सवांरि अंग, नैनन कज्जल सार ।
पिय समीप तिय जाइये, जियके शोक विसार॥

(पहली और दूसरी सखी भी महन्त को
प्रणाम करके एक ओर बैठगईं)

मुमुक्षु-(स्वगत) यह एक विलक्षण मत देखने में आया क्या इस सृष्टिक्रम के विरुद्ध आचरणों से भी मुक्ति मिल सकती है जोहो इस मत का भी तत्व जान लेना अवश्य ही चाहिये ।

(क्रमागत)

(प्रकट) महन्त जी महाराज मैं आप से जिज्ञासु वा शिष्य समान हो के पूछता हूं कि आप स्त्रियों का वेष धारण क्यों किये हैं? आप के मत का आचार्य्य कौन हुआ है? क्या पुरुष वेष में ईश्वर का आराधन नहीं कर सकते हैं?

महन्त-(एक शिष्य से) चौरी! लड़ैती! जौ एई को नारो ममद्दुआ किते सों आय गओ।

लड़ैती-मैं सजांपुर के कुञ्जके वृक्ष पै बैठी हुती उतैसो छबीली और चन्द्रावली के जौरै जौरै जौ आवत हुतो घर मैं याको नाम धाम नाय जानूं।

महन्त-तो याको मन्दर सो बाहर कहै

(मुमुक्षु हंसता हंसता मन्दिर से बाहर निकल आया)

(एक चौवे का प्रवेश)

मुमु०-चौवे!

चौ०-क्यों वे!

मुमु०-चौवे जी महाराज! सुनो तो

चौ०-लाला साहब कहिये

मुमु०-आप मुझे यहां के मन्दिरों की झांकी कराय दीजिये।

चौ०-हां जिजमान हमारा तो यह काम ही है!

मुमु०-अच्छा तो किसी ओर को चलिये।

चौ०-चलें कहां को यह सामने राधावल्लभ जी का मन्दिर है पहिले याही की झांकी कीजिये

मुमु०-अच्छा चलिये।

(दोनों ठाकुर ठकुरानी की जुगल मूर्त्ति के
सम्मुख जाके प्रणाम करते हैं)

मुमु०—(पूजारी से) क्यों महाराज आप राधा कृष्ण के उपासक हैं।

पुजा०—उपासक होयबो तो बड़ो कठिन है पर हां हम भी उपासक न कहाउत हैं।

मुमु०—महाराज! मुझे यह बड़ा सन्देह है कि राधा—कृष्ण महाराज की कौन थीं?

पुजा०—लाला जी! श्री राधारानी तो भगवान् की पटरानी थीं।

मुमु०—महाराज! कृष्ण भगवान् की पत्नियों के नाम—सत्यभामा और रुक्मिणी आदि जो महाभारतमें लिखे हैं उन में तो राधा नाम नहीं है फिर जिस भागवत को आजकल के वैष्णव-प्रधान ग्रन्थ मानते हैं उन में भी कहीं राधा का नाम नहीं लिखा है।

पु०—भागवत में है।

मुमु०—बताइये कहां है।

पु०—दशमस्कन्ध में ही शुकदेव मुनि ने कहा है:

"दीपावलिर्यावृषभानमन्दिरे
ध्यात्वापरान्ताम्भुविषय्यटाम्यहम्"

अर्थात् जो वृषभानु के घर की दिवाली है उसका ध्यान कर के मैं पृथ्वी में घूमा करता हूं।

मुमु०—महाराज! राधा का नाम तो इस श्लोक में भी नहीं आया और आप ने आधा ही श्लोक क्यों पढ़ा—लीजिये मैं पूरा पढ़ता हूं—

श्रीरासरंगस्य विकाशचन्द्रिका
दीपावलिर्या वृषभानुमन्दिरे,
गोलोकचूडामणिकण्ठभूषणम्
ध्यात्वा परान्वाम्भुविपर्यटाम्यहम्

इस का अर्थ यह है कि गोलोक के शिरोरत्न जो कृष्ण महाराज हैं उनका कण्ठभूषण जो कौस्तुभमणि है वही रास की रंगभूमि को प्रकाश करने वाली चन्द्र ज्योति और वृषभानु के घर दीपमाला है उसका ही ध्यान करके मैं जगत् में फिरा करता हूं।

पु०—जो बात कहा कही—श्रीराधा जी को नाम तो ब्रह्मवैवर्त्तपुराण के प्रकृति खण्ड की ५१ अध्याय में लिखी है।

आदौराधां समुच्चार्य पश्चात्कृष्णांचमावम्।
वदन्तीति हि वेदेषु वेदविद्भिः पुरातनैः ॥१॥
विपरीतं ये वदन्ति निन्दन्ती च जगत्प्रसूम्।
कृष्णपाणाधिकां प्रेममर्यीशक्तिं च राधिकाम् ॥२॥
ते पच्यन्ते कालसूत्रे यावदिन्द्रादिवाकरौ।
भवन्ति स्त्रीपुत्रहीना रोगिणः सप्तजन्मसु ॥३॥

मुमु०—महाराज! क्रोध न कीजियेगा (चरण पकड़कर) पुजारी जी! मैं पूछता हूं कि जिसने ब्रह्मवैवर्त्त पुराण बनाया था वह कुछ व्याकरण भी पढ़ा था वा भागवत बनाने वाले के समान ही वह भी था।

पु०—अरे तू बड़ो पापी है! साक्षात् नारायणांश व्यास को ऐसो खोटो वचन मुहंड़े से निकारतु है।

मुमु०—महाराज! आप भगवद्भक्त और ब्राह्मण हैं आप को क्रोध करना न चाहिये शांत होके सुनिये—

जो उक्त पुराण का बनानेवाला व्याकरण जानता तो "प्रवदन्तीतिवेदेषु वेदविद्भिः पुरातनैः" ऐसा महा अशुद्ध न लिखता किन्तु ऐसा लिखता कि "पुरातनाः वेदविदः प्रवदन्ति"

पु०-तो कहा तेरे कहिवे मात्र से राधावल्लभी सम्प्रदाय अप्रमाणिक हो जायगी यह देख "राधासुधानिधि ग्रन्थ रख्यो है या को आंखिन सो देख कहा लिख्यो है?

(मुमु० पुस्तक को हाथ में लेकर पढ़ता है)

चौ०-जे का पढ़तुहो-चलो मैं याको तत्त दिखायदैतह

मुमु०-(चकित होके) चौबे जी तत्व कैसा-

चौ०-जौ का! द्वार पर पाथर में लिख्यो है।

"सम्वत् १६४१ में हरिवंश ने इस मन्दिर को बनवा कर श्रीराधावल्लभजी की युगलमूर्त्ति स्थापन की" बस जाने जौ मन्दर बनवायो वाही ने वह पुस्तक हूं लिख लियो।

मुमु०-(पुजारी से) क्यों पुजारी जी यह हरिवंश कौन थे?

पु०-यह चैतन्य सम्प्रदाय के एक गोस्वामी स्वरूप हुते इनहीन की कृपासूं राधावल्लभी सम्प्रदाय चली है।

मुमु०-तो अब निश्चय हो गया कि इन्हीं की दौलत ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में राधा-कवच राधा स्तोत्र और राधा महात्म्य लिखाये गये हैं

चौ०-तौ का जिजमान स्वयं रात करैगो (चौबे और मुमुक्षु दोनों जाते हैं)

चौ०-(मार्ग में) जिजमान यही ब्रह्मकुण्ड है याही ठौर ब्रह्मा को मोह भयो थो।

(हाथ में झोली लिये हिरमजी में रंगे वस्त्र पहिने एक साधु का प्रवेश)

साधु-कौन पापतैं करे सकटुआ वृन्दाबन कूं आया।
शंखध्वनि से कान फूटगये हुक्के का दुःख पाया॥ (रेखता)

अरे देखो पाखण्डियों की बातैं क्या भगवान् मच्छर वा डांस हैं जो हुक्के के धुएं से डरते हैं, मन्दिरों में नाच हो, वेश्या नैन की सैन चलावैं, महा बदमाश, कुकर्म्मों की खान लड़के वेश्या बनके नाचैं भांग के लुठवद् उड़ाये जायं और उन से इन पाखण्डियों के ठाकुर जी नहीं घबड़ाते पर हमारे हुक्के की सूरत को देखते ही ठाकुर जी क्रोध करते हैं। सत्त साहब की साखी में ठीक लिखा है-

शब्द

गङ्गा फिरा हरद्वार का गुदड़ी लिया बन चार का।
भटका फिरा तो क्या हुआ जिन पुश्क में सिर नादिया॥
काबा गया हाजी हुआ, मन का कपट मीटा नहीं।
हाजी हुआ तो क्या हुआ, काबा गया तो क्या हुआ॥
बोस्तां गुलिस्तां पढ़ गया मतलब न समझा शेख का।
आलिम बना तो क्या हुआ फाज़िल हुआ तो क्या हुआ॥

चौ०-(साधु से) यहां बकत आवत है जो श्री लाड़लीलाल को पवित्र धाम वृन्दावन है, वाके पुनीत मन्दिरन में उत्तम विराजन और कथी ही जाय सकतु है और तुम सरीखे जुलाहा पन्थियन को वहां कौन

साखी ।

माई के गले में सूतन नाहीं पूत कहावें पांड़े ।
बीबी फातिमा की सुन्नत नाहीं काजी ब्राह्मण दोनों भांड़े।

चौ०-अरे तेरा गुरु तो नीच था इससे ही उसने ऐसा कहा है ।

साधु-अरे ब्रह्मनैटे तेरी मत मारी गई है देख !

जाति पांति कुल कापरा यह शोभा दिन चार ।
कहै कबीर सुनोहो रामानन्द येहू रहे झखमार॥
जाति हमारी बानी कुल करता उर मांहि ।
कुटुम्ब हमारे सन्त हां कोई मूरख समझतनाहिं॥

चौ०-जौ तो तेरी जुलहेपन को प्रकाश करन हारे वचन हैं। जो ब्राह्मण तिहारे वचनन को मानैं तो विचारे वेदन को फिर माननवारो कौन रहैगो सुन मैंने तो से फकिड़न की यह चीन्ह बनाय राखी है जो कोऊ ब्राह्मण को छोरो भिट्ट हो जात है वह तो जा बकतु है ।

राम नाम लड्डुआ गोपाल नाम घी ।
हर का नाम मिसरी तू घोल घोल पी ॥

वा सारे को खायवे ही में चित्त लग्यो रहतु है और जो कोउ ठाकुर को छोरो छापरो बिगड़ जातु है वो यों कहतु है—

राम नाम शमशेर पकड़लई कृष्ण कटारा हाथ लिया ।
दया धर्मकी ढाल बना लई यमका ...

और जो जुलाहा पुलाहा भेक धर लेत हैं वो यूंही बका करतु हैं॥

जाति पांति पूछे ना कोय। हर को भजै सो हर का होय॥

तेरी बातन सों निश्चों हो गयो तू काहु नीच जात को है देख वा सामने जो चबूतरा पर जो बैठे जप कर रहे हैं वही भगवान् के सांचे भगत हैं।

साधु—निश्चय ही तू मूर्ख और पापी है सोच तो सही।

मनका फेरत जन्म गयो गयो न मनका फेर।
करका मनका छोड़ कर मनका मनका फेर॥

चौ०—अरे! तू और तेरा गुरु बड़े कुतर्की हैं तुझे क्या मालूम है कि इन लोगों का मन स्थिर नहीं है तुम ही सरीखों के वास्ते बीरबल ने यह सवैया बनाया है।

सवैया—

एक धना दूसरे सदना कबिरा मलुका रैदास चमारी।
कौन सुने केहिकी अरजी चकचौंध रह्यो कवि ब्रह्मबिचारी
जैबो नहीं तहं जैबो चहैं अरु देखन को रघुबीर अखारो।
ऐसे कृपालु दयानिधि को इन पापिनने दर्बार बिगारो॥१॥

मुमु०—(मन में) यह भी एक मत मालूम होताहै मुझे तो इस का तत्व जानना भी आवश्यक है।

मुमु० (स्वगत) जान पड़ता है कि यह भी एक मत है न मालूम इस भारत भूमिमें कितने मतवालों ने घेर रखा है तौ भी सब के तत्व को बिना जाने सत्य का निर्णय होना कठिन है अतएव मैं इस मत के तत्व को भी अवश्य ही जानने का यत्न करूंगा।

(प्रकट) अच्छा चौबे जी अब आप कहां जायंगे?

चौ०—मैं तिहारे साथ चलूंगा।

मुमु०-अब आप मुझे कुछ देर की छुट्टी दीजिये फल फिर मैं आप को साथ लेकर झांकी करने चलूंगा।

चौ०-तू हमारी दक्षिणा देदे फिर चाहे चूल्हे में जा या भरसांई (भाड़) में जा।

मुमु०-कलको इकट्ठी दक्षिणा ले लीजियेगा।

चौ०-जिजमान दक्षिणा को उधार करनी महापाप है जो सकारें को तू मरजाय तो याको सौगुनों देना पड़ेगो और महानरक भोगनो होयगो।

मुमु०-अच्छा लीजिये-(दक्षिणा देता है)

(साधु से) क्यों महाराज! आप कहां रहते हैं और आप का वर्ण क्या है?

साधु-हमारा वर्ण काला है, अरे बाबा,

जातपांत को मतना पूछो पूछो इकला ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान॥

मुमु०-अच्छा आप की गुरु परम्परा क्या है।

सा० हम कबीर पन्थी हैं।

मुमु०-कबीर कौन थे?

रेखता।

साधु-प्रथमहि रूप जुलाहा कीन्हा।
चार वरण मोहि कोइन चीन्हा॥
रामानुज गुरुदीक्षा दीहू।
गुरुदीक्षा कुछ हम से लेहू॥

उन के जन्म का समय यों लिखा है:-

सम्बत् बारहसे औ पांचमो ज्ञानी कियो विचार।
काशी मांहि प्रकट भयो शब्द कह्यो निर्धार॥
सम्बत् पन्द्रह सौ पांचमों मगर कियो गवन।
अगहन सुदी एकादशी मिले पवन से पवन॥

देख भक्तमाल में श्री कबीर का कैसा वृत्तान्त लिखा है कि रामानन्द स्वामी के दर्शन करने किसी ब्राह्मण की एक विधवा कन्या गई और उस ने जाके प्रणाम किया रामानन्द ने उसे आशीर्वाद दिया कि पुत्रवती हो उस उनके आशीर्वाद से उस कन्या के ज्ञानी पुत्र हुआ।

उस विधवा ने सांसारिक कलंक के मारे अपने ज्ञानी पुत्र को जंगल में फेंक दिया। वहां मधुर माधवी और ललित लवंग लताओं के बीच से एक जुलाहे ने उस सुकुमार शिशुको उठाकर अपनी सन्तान विहीनता के ताप से सन्तापित भार्य्या को देदिया और जब वह बालक समर्थ हुआ तो काशी को चला गया।

(एक वृद्ध फकीरी का प्रवेश)

पहिला—सत्त साहब।

वृद्ध—साध गुरु की दया से आनन्द होय। तू इस सांसारिक को सुनावे क्या था।

पहिला—महाराज इसने कुछ कबीर साहब का हाल पूछा था।

वृद्ध—मैं तो यही सुनता आवे था कि तू इसे भक्त माल का गपोड़ा सुनाय रहा था—सुन कबीर साहब का जन्म किसी के गर्भ से नहीं हुआ था वह अयोनि हैं। उनके प्रादुर्भावकी कथा यों है कि "काशीके समीप विमल नीर भरे लहरलता नामक सरोवर में एक पद्म पत्र के ऊपर कबीर सोते थे और नीमा जुलाही अपने पति के सहित किसी विवाह में जाती थी वह बालक रूपधारी कबीर साहब को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और उन्हें उठाकर अपने पति के पास लेगई नीमा के पति से कबीर साहब ने कहा कि "हमको काशी में पहुंचा दो"

पहिला—वह सब गप्प है।

वृद्ध—क्यों ?

पहिला—यों कि इतना छोटा बालक बोल नहीं सक्ता!

वृद्ध—अरे! तुझे साध गुरु में श्रद्धा नहीं इसमें तेरा नाश होजायगा।

मुमुक्षु—अच्छा विवाद से कुछ प्रयोजन नहीं है पहिले बूढ़े साधकी सब बातें सुन लेनी चाहिये हां महाराज फिर क्या हुआ।

वृद्ध—हुआ क्या फिर वह नूरी जुलाहा कबीरसाहब की बात को सुनके बहुत डरा और भागा।

मुमु०—फिर

वृद्ध—फिर दो कोस पै जाके कबीर साहब ने उसे घेरा और कहा कि तुम मुझे काशी पहुंचा दो और मेरा पालन करो॥

पहिला—दो कोस तक उठाकर कबीर साहब को कौन लेगया था।

वृद्ध—वह सर्वशक्तिमान् थे आपही चलेगये थे।

पहिला—जो दो कोस तक आपही चलेगये थे तो काशी को भी आपही क्यों नहीं चलेगये थे!

वृद्ध—अरे! तू बड़ा पन्मुखी है जो साहब में भी ऐसी कुतर्क करता है।

पहिला—अजी गुरु जी आपने जो कथा कही वह तो झूठी जान पड़ती है।

वृद्ध—क्यों बे! यह तैंने कैसे जाना!

पहिला—इसमें यह परमान है कि कहीं तो पालन करनेवाले जुलाहे का ना मनूरी लिखा है और कहीं

लिखा है कि " अली जुलाहे ने पाया " अर्थात् अली नामक जुलाहे ने कबीर साहब को पाया था दुबधा की बात झूठी होती है।

वृद्ध—अरे ! तू महापापी है साधु गुरु का भेष रख के तू साहब की निन्दा करता है।

पहिला—गुरुजी महाराज इतना झूठ क्यों है और सुनिये लिखा कि " रामानन्द गुरुदीक्षा देहु, गुरु पूजा कुछ हमसे लेहु " पर रामानन्द परम वैष्णव थे और कबीर साहब को मुसलमान जानके उन्होंने शिष्य नहीं किया था॥

वृद्ध—अरे पाखण्डी गवरगण्ड ! मैं अभी तेरा भेक छीन लूंगा, तू क्या कबीर साहब को मुसलमान कहता है, देख गुरु रामानन्द स्वामी एक दिन रात्रि में गङ्गा स्नान कियेआते थे और कबीर साहब घाटकीसीढ़ियों पर सोते थे रामानन्द स्वामी का पैर कबीर साहब के शरीर में लग गया तब वह दूर खड़े होकर राम २ कहने लगे बस वही कबीर साहब का गुरुमन्त्र होगया।

पहिला—क्या खूब जो ऐसेही मन्त्र लेना है तो हज़ारों मनुष्य रास्ते में भली बुरी बात कहा करैं हैं तो क्या सब गुरु होजायँगे कभी नहीं।

वृद्ध—अरे ! नीच ! क्या राम नाम और बातों के समान है, और जो तू राम का अर्थ दशरथ का बेटा मानता है यह तेरी भूल है सुन।

एक राम मथुरामें भेटा, एक राम दशरथ का बेटा।
एकरामब्राह्मणकाजाया, एकराम जिनसृष्टिउपाया।

हम लोग उसही राम के उपासक हैं जो स्वयम्ब्रह्म है । और जिस कबीर साहब में तू सन्देह करता है उसको नानकसाहब ने भी गाया है देख उसके वचनोंको नानक साहब ने अपने ग्रन्थ साहब में बीसीयों जगह आदर के साथ लिखा है ।

(कबीरी गुरु का प्रवेश)

गुरु—अरे बाबा सन्त का घर बड़ाहै गुरु महाराज के भण्डारमें सब कुछ भरा है और बाम्हन टाम्हन क्या जानें देखो गुरु महाराज ने भी फुरमाया है

" बाम्हन टाम्हन मूरख भये, शूद्र पढ़े गीता ।
ठग ठगर बन्द अच्छा खावें, दुख पावें पण्डिता॥१॥
सांचे को मारे लाठी, झूठा जग पतियाय ।
गोरस गली फिरै, दारु बैठ बिकाय ॥ २ ॥
सती को मिले न धोती, मस्तन पहिरे खासा ।
कहै कबीर देखो साधो, दुनियांका अजब तमासा ३

मुमु०—महाराज ! आपके मत में कौन से ग्रन्थ माननीय हैं ।

गुरु—हमारे प्रधान धर्म ग्रन्थ ये हैं:—

सुखनिधान, गोरखनाथ की गोष्टी, कबीर पांजी, वालेकी रमैणी, रामानन्द की गोष्टी, आनन्दरामसागर शब्दावली, मङ्गलबसन्त, होली, रेखता, झूलन, कहार, हिंडोल, बारह मास, चंचर बारहखड़ी, अलिफनामा रमैणी बीजक, साखी, इत्यादि और भी कई एक ग्रन्थ हमारे मान्य हैं ।

मुमु०—यह तो ठीक है पर कबीर साहब हिन्दू थे कि मुसलमान थे ?

गुरु–५६ वें शब्द में लिखा है हम अली और राम दोनों की सन्तान हैं।

मुमु०–ईश्वर के विषय में कबीर साहब ने क्या लिखा है?

गुरु–यह तो छटी ही रमैणी में लिखा है, ओंकार ने उसकी सृष्टि नहीं की है तब हम किस तरह उसका वर्णन किस प्रकार से करें, ईश्वर तारा नहीं है चन्द्रमा नहीं है, हम उसका क्या नाम रखें, उसके लेखे दिन नहीं रात नहीं जात नहीं पांत नहीं वह गगन मंडल में करता निवास है, एकबार उस में से पतंगा निकला मैं उनकी स्त्री बनी थी।

मुमु०–भला आदि पुरुष की स्त्री कबीर जी कैसे बने थे

गुरु–साहबों की महिमा अपार है उस का अन्त किसी ने नहीं पाया है।

मुमु०–खैर! यह तो कहिये ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो हिन्दुओं में प्रसिद्ध हैं यह क्या हैं?

गुरु–यह तो पहिली ही रमैणी में लिखा है कि अन्तर्ज्योति शब्द और एक स्त्री से ब्रह्मा विष्णु महेश यह तीनों उत्पन्न हुए।

(एक कनफटे योगी का प्रवेश)

नेपथ्य में भजन।

मारो मारो सर पणी जगाय लाओ भंवरा,
अमीरस पीयो थांको काई करछि जमरा।
हो! भोला चेला॥
गुरु विन ज्ञान कैसे पावो हो! भोला चेला॥१॥
सर्पिणी कहै मैं अलियां कलियां,
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव कलियां।
हो! भोला चेला॥ २॥

सर्पिणी कहै मैं यम की दासी,
एक हाथ खड्ग दूजे हाथ फांसी ।
हो ! भोला चेला ॥ ३ ॥

मुमु०-नाथ जी आदेश

नाथ-बेटा गुरु भला करै

मुमु०-नाथ जी कबीर साहब से और गोरक्षनाथ जी से जो विचार हुआ था उसमें क्या गोरखनाथ हारे थे ?

नाथ-तू मूर्ख है क्या गोरखनाथ के समय में कबीर पैदा हुए थे और जो कबीर सच्चे होते तो महम्मद की गोष्ठी क्योंकर लिखते ? यही मालूम होता है कि कबीर जीने अपनी सिद्धि जमाने के वास्ते यह सब प्रपंच रचे हैं ।

क० गुरु-क्यों वे गुरु छाल की लपडी सत्त साहब को ऐसे वचन कहता है ?

नाथ चलबे जुलाहटे तू क्या जाने गोरक्षनाथ चारों युग के योगी थे और कबीर कल पैदा हुए थे देख तेरे पन्थ के थोड़े ही दिन में कितनी नयी शाखां होगईं तेरे एक ही पन्थ में से १२ पन्थ होगये भला यह तो बता तुम्हरे पन्थ के नाता जी ने जो कहा है "भक्ति भक्त भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक" यह कैसे सत्य होसक्ता है जो भक्त और भगवान् एक ही हैं तो फिर भगवान् का भजन ही क्यों करेंगे ?

मुमु०-नाथ जी ! यह तो कहिये कि कबीरियों में बारा पन्थ कौन से होगये ?

नाथ-१ श्रुत गोपाल, २ भगोदास, ३ नारायण दास, ४ चूड़ामनदास, ५ जग्गूदास, ६ जीवनदास, ७ कमाल, ८ टकसाली, ९ ध्यानी, १० साहिबदास, ११

नित्यानन्द, १२ कमलनाद । इनके सिवाय हंस कबीरी और मङ्गरेल कबीरी, और भी कई एक शाखा इन के पन्थ की होगई हैं ।

कबीरी गुरु०—अरे कनफटों में नीच ! तू कबीर साहब की निन्दा करता है अरे देख सब से पहले गुरु महाराज ने ही अनहद शब्द और अजपा जाप की रीति निकाली और जगत् की सन्त मण्डली को आनन्ददायक मार्ग दिखाया विचार के देख ! जो ज्ञानी का औतार न होता तो सीधा योग और मुक्ति दाता पन्थ कौन निकालता सच तो यह है कि भगवान् को आंखों से दिखाने वाला कबीर साहब का एक मार्ग है देख साहब ने कहा है ।

भजन ।

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है,
गगन मण्डल बिच उर्द्धमुख कूंवा,
सन्त वही जिन भर भर पीवा ।
निगुराप्यासाजाय,हिये अन्धियारा है॥ करनै०

नाथ—हां ! हां ! समझ लिया घुनिये जुलाहे ही मुक्ति का मार्ग न निकालैंगे तो क्या व्यासादि महर्षि मुक्ति मार्ग निकालैंगे बीरबर ने ठीक लिखा है ।

(सवैया)

एक धना दुसरा सदना कबिरा मलुका रैदास चमारो ।
कौनसुनै केहिकी अरजी चढ़ चौन्धरह्यो कवि ब्रह्म विचारो॥
जानो नहीं तहं जानो चहैं अरु देखन को रघुबीर अखारो।
ऐसे दयालु दयानिधि को इन पाजिन ने दर्बार बिगारो ॥

मुमु०—(नाथ से) नहीं नहीं महात्माओं को ऐसे वचन न कहने चाहियें पर शब्द का हाल तो यह है कि जिसे अनहद ये लोग कहते हैं और जिस के क्रम शङ्ख मृदङ्ग आदि की ध्वनी कहते हैं उस का मूल एक उपनिषद् में लिखा है मैत्रेय उपनिषद् के ५ वें प्रपाठक की यह २१ वीं ऋचा है:—

अपरे शब्द वादिनः श्रवणाङ्गुष्ठयोगेनान्तर्हृदयाकाश शब्दकर्णयन्तिसप्ता विधेयन्तस्योपमा यथा नद्यः किङ्किणी कांस्य चक्रक भेकाविः कृन्धिका वृष्टिर्निवातेवदतीति तंपृथक्लक्षणमतीत्यपरेशब्देऽव्यक्ते ब्रह्मण्यस्तं गतास्तत्रतेऽपृथक् धर्मिणोऽपृथक्विवेक्या यथा सम्पन्नामधुत्वं नानारसा इत्येवमाह

द्वे ब्रह्मणीवेदितव्ये शब्दब्रह्मपरं च यत् शब्द ब्रह्मणि-निष्णातः परंब्रह्माधि गच्छति ।

मालूम होता है कि जब कबीर साहब काशी में रहते थे तब उन्होंने किसी पं० से उक्त उपनिषद् के वचन को सुन के उस का अभ्यास किया होगा ।

नाथ—हां हां ! तू खूब समझा अरे बाबा ! जो धुनिये जुलाहों को वेद और उपनिषद् का ज्ञान हो जाया करे तो वर्षों तक जो पढ़ पढ़ कर मग़ज़पच्ची करते हैं वह क्या पागल हैं । हमारा तो यह सिद्धान्त है कि

दोहा ।

जो चमरा रैदास अरु, सदन कसाई मुक्त ।
तो सनकादिक ऋषिन को, ब्रह्म ज्ञान अयुक्त ॥
वेदविहितयज्ञादि सब, कर्म वृथा भविजान ।
साधनको बिन साधमहि, मिलतजो मुक्तिज्ञान ॥

(नेपथ्य में)

अरे ! तू कौन है जो श्री रविदास महात्मा को अपवाद कहता है, हमारे होते हुए कौन ऐसा रविदास सरीखे महात्मा को नीच कह सके।

नाथ—अरे बड़ा गजब हुआ किसी चमार ने हमारी बातों को सुन लिया।

मुमु०—अच्छा अच्छा आने दो हमें तो इन के मत का भी तत्व जानने की इच्छा है, यदि इन के मत में ही आत्मतत्व जानने और मुक्ति पाने का सुगम उपाय हो तो उसे ग्रहण करने में क्या हर्ज है ?

नाथ—अच्छा कहरे चमरे कह तेरा गुरु रैदास कब और कहां पैदा हुआ था ! किस का चेला था और कौन से साधन से उसे मुक्ति मिली थी ?।

रैदासी—अरे ! कनफैड़े ! तू बड़ा जिकवादी जान पड़ता है ! श्रीभक्त शिरोमणि रविदास को तू नहीं जानता वह श्री श्री वैष्णव शिरोमणि रामानन्द के मुख्य शिष्य थे और गुरु के शाप सेही अर्थात् गुरु के वचन को सत्य करने के वास्तेही उन्होंने चमार के घरमें जन्म लिया था पर चमारी का दूध नहीं पिया था।

मुमु—उनको गुरुने शाप क्यों दिया था ?

रैदासी—श्रीगुरु रामानन्दकी सेवा में एक ब्रह्मचारी रहता था वह जो भिक्षा मांगकर अन्न लाता था उस ही का ठाकुर जी को भोग लगता था।

नाथ—फिर इससे क्या हुआ शाप की बात कहना।

रैदासी—एक दिन वह ब्रह्मचारी एक ऐसे बनिये से भिक्षा ले आया जो—भङ्गी चमारों को अन्न बेचा करता था॥

नाथ—क्या इससे ही गुरु जी आग भभूला होगये थे ।

रैदासी—नहि नहीं अभी और बात, सुनो । जब रामानन्द स्वामी ठाकुर जी को भोग लगाने लगे तब श्री ठाकुर जीने दर्शन न दिये ।

नाथ—ठाकुर जी नहीं आये थे तो आप ही मजेसे चखते उस में क्रोध की क्या बात थी ? ठाकुर जी को भूख लगती तो झखमार के आप ही खाते !

रैदासी—रामानन्द स्वामीने उस ब्रह्मचारी से पूछा कि आज किससे भिक्षा लाया था ? ब्रह्मचारी ने सब हाल कह सुनाया रामानन्द स्वामी ने सुनके कहा जारे ! हमार तैने बुरा किया बस इस गुरु वचन को सुनते ही ब्रह्मचारी ने अपने शरीर को त्याग दिया ।

नाथ—दोनों गुरु चेला ही एक से थे बहुत क्या ते अन्न को फेंक देते पर इस गाली गलौज का क्या काम था ?

अच्छा फिर इस किस्से से और रैदास से क्या सम्बन्ध है ?

रैदासी—फिर उस ही ब्रह्मचारी ने एक चमारी के गर्भ से जन्म लिया ।

नाथ—वह कैसा पापात्मा ब्रह्मचारी था जो ऐसे उत्तम पद से चमार हुआ ।

रैदासी—अरे कनफड़े ? सब कथा सुनले ।

नाथ—अच्छा कहती जाएगा ।

रैदासी—जन्म लेतेही रैदास ऊंचे स्वर से कहने लगे ।

दोहा ।

जबलग पग देखों नहीं, श्रीगुरु रामानन्द ।
तब लग जग सूना मुझे, चित में नहिं आनन्द ॥१॥

दुग्धपान हम करब नहिं बिन देखे गुरुराय।
जीवन मम तब होयगो सद्गुरु देहु बुलाय॥ २॥

नाथ-वाह वे। चमरा खूब याद रखी।

रैदासी-इस अचरज की बात को देखकर रैदासके पिता के रामानन्द स्वामी के पास गये और सारा हाल उनको सुना दिया, स्वामी रामानन्द इस कथा को सुनतेही चमार के स्थान पर पहुंचे।

नाथ-क्यों जी! पहिले तो वह और उनके ठाकुर जी इस बात से गुस्से की आग से सुलग उठे थे कि जो बनिया चमारों से लेन देन रखता था उसका अन्न रसोई में आयगया था पर अब तो खुद बदौलतही चमार के घर पहुंच गये अब क्या होगा?

रैदासी-अरे! पाखण्डी! तू क्या महात्माओं की निंदा करता है?

मुमु०-नहीं नहीं! आप सब कथा कहजाय्ये!

रैदासी-गुरु रामानन्द को देखते ही बालरूपी रैदास गद्गद्वाणी से बोले।

भजन (बैरागा धुन)

दरस भये गुरुपद कमलन के मनके
भ्रमतम दूर भये॥ १॥
प्यासे चातक पाय वारिजिमि
जियके दुःख विनसाय गये॥ २॥
धनवञ्चित पारस पावतही हिय में
आनन्द छायगये॥ ३॥
बिछुरो दीन मीन जिमि सरसें
फिरतड़ाग को पायगये॥ ४॥

त्योंममयन पुलकित पददेखे सबही
द्वंद्व विलाय गये ॥ ५ ॥

नाथ-अच्छा रैदास की इन बातों को सुन के रामानन्द ने फिर क्यों नहीं कह दिया कि ब्राह्मण होजा!

रैदासी-अरे बाबा तू जरा चुप रह!

नाथ-वह एक दिन का बालक चुप न रहा तो एक चालीस वर्ष के बूढ़े क्यों चुप रहैं।

मुमु०-अच्छा फिर अन्त में क्या हुआ?

रैदासी-जब गुरुजी ने परीक्षा करली तब उस बालक के कान में महामन्त्र सुना दिया और बालक दूध पीने लगा।

नाथ-हमतो पहिले ही जानते थे "पांडेजी पछताओगे वही चनेकी खाओगे"।

रैदासी-रैदास जब बड़े हुए तब शालिग्राम की पूजा करने लगे और रात दिन सन्त महात्माओं की सेवा में अपने समय को बिताने लगे। जो धन उनको जूते बेचकर मिलता था उसे वह साधु सेवा में लगा देतेथे।

नाथ अच्छा फिर

रैदासी-फिर क्या इससे ब्राह्मन खिसियाये और राजा से चुगली करी कि-

जहं अपूज पूजन लहै, पूज्य अनादर पाय।
तहं अकाल, रिपुभय मरण, अवश प्रजा विनसाय॥

नाथ-ब्राह्मण भी बावले ही थे अरे बाबा जहां हजारों शालिग्राम और लोगों के पास थे एक उस के भी पास पड़ा था तो क्या बिगाड़ था! और जो शालिग्राम को चैतन्य समझते थे तो क्यों नहीं अपने बड़े २

महादेव लिंगों से कह देते कि जाओ अपनी जातवाले सालगराम को चमार के घर से ले आवो और जो वह न आवे तो उस सालगराम को जात बाहर करदो।

रैदासी—अबे! ओबे जोगने! ठाकुर जी की भी हंसी करता है खबरदार! नहीं मारे पनही के टाट गंजी कर दूंगा।

नाथ—अबे चमरे इस में हंसी क्या है जो सालग्राम चमार या ईसाई हो जाय उसे और सालगराम अपनी जात में कैसे रखते!

मुमु०—अच्छा यह बातें पीछे होगी पहिले सब कथा कह जाओ!

रैदासी—राजा ने रैदास को बुलाकर कहा कि तुम सालगराम को ब्राह्मणों को देदो। रैदास ने कहा अच्छा ब्राह्मणों को बुलाओ मैं सब के सामने सालगराम दूंगा। वह सभा हुई और एक पलंग पर ठाकुर जी रक्खे गये, ब्राह्मणों ने बहुत से स्तोत्र पढ़कर सालगराम को बुलाया पर वह ब्राह्मणों के पास न गये और ज्यों ही रैदासी विनती करी त्योंही धम्म से सालगराम रैदास की गोद में जा गिरे।

नाथ—वाह! क्या रैदास ने चुम्बक ले रक्खा था ज़रूर ऐसीही कोई बात होगी, नहीं तो सालगराम क्या कोई मेढ़क था जो कूद के गोद में जा गिरता।

रैदासी—ओवे नाथड़े चुप नहीं रहता है।

मुमु० अच्छा अब जल्दी कथा को समाप्त करो।

रैदासी—फिर स्वयम् भगवान् ने रैदासको धनदिया और उससे उन्होंने एक बड़ा भारी भगवान् का मन्दिर बनवाया॥

नाथ-हरे राम हरे राम हिन्दू धर्म डूब गया क्या भारतधर्म महामण्डल ने रैदास की कथा नहीं सुनी है कि चमार ने मन्दिर बनवाया।

रैदासी-अरे! गवर्गण्ड! तू क्या जाने श्रीरामानन्द स्वामी का वैश्नवमत बड़ा जबरा है देख उनकेही शिष्य सेन भगत के वास्ते भगवान् ने नाईका रूप धारण किया था। भक्तमाल ही में लिखा है-

सैन भगत का सांसा मैटा आप बने हरिनाई

नाथ-हांरे! हां!

चाम चमोटा सिर घसणा,
नाई का पेसा मत रखणा।

सुमु०-हां जी हां ये क्याबात है? हमने तो पुराणों में अवतार सुने हैं उन में से नाई का अवतार तो कोईभी नहीं है। ठीक कहिये परमेश्वर को खिदमत गारी क्यों करनी पड़ी थी?

रैदासी—अजी कुछ मतपूछो! उस भक्तवत्सल की महिमा अपार है जिस का जगत् भर सेवक है उसे ही भक्त भय दूर करने को नाऊ बनना पड़ा (प्रेममें मग्न होके गाता है)

पूर्बी-

वो भगवाना प्रेम दिवाना-
भक्तों को काटे कलेशवा रामा-
जब पहलदवा अति दुख पायो-
रघुवर हो गयो बघवा राम-
दौ ये संहार देवदुःख टारे,
जै जै गावैं महेशवा राम॥ १॥
वो भगवाना प्रेम दिवाना,

सारी धरतिया को कंखिया दबलस—
ओढ़कर पाय सन्देशवा राम,
नरकपुरी में असुर संहारो,
जग कर मेटल अन्देशवा राम ॥ २ ॥
वो भगवाहै प्रेम दिवाना०
सुमरी मेहरिया को जो हर लीन्हस—
तेहिको मारे औधेसवा राम,
पाण्डों की नारी की सारी बढ़वले,
कीरती गावें सुरेशवा राम ॥ ३ ॥
वो भगवाना प्रेमदिवाना०

नाथ—अरे तू भी दीवानों से कम नहीं है बात कहता नाचने लगा।

सुमु—हां हां तुमने सेनभगत की पूरी कथा न कही।

रैदासी—कथा तो उनकी यही है "बन्धगढ़के राजा के पास एक नाऊ नौकर था वह सदा हरिभक्ति और साधु संग मेंही अपने समय को बिताता था एक दिन सैनभगत तो साधुओं की रंग में बैठे हरिभजन में मग्न रहे और राजा की सेवा का वक्त आगया बस भगवान् ने झट सैन भगत का रूप धरके राजा की टहल जाय करी, जब सैन भगत को सेवाकी सुध आई तो वह सब ताल तम्बूरों को छोड़कर भागा और राजा के पास पहुंचा। राजा ने उसे दूसरी बार आया देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया और पहिले कपट का रूपधारी सेन का स्मरण करके समझा कि भगवान् थे राजा उसही समय सेन भगत का चेला होगया ॥

नाथ—वाह वे वाह? खूब कथा कही अच्छा यह तो बता कि जब विष्णु ने नाऊ अवतार लिया था तब लक्ष्मी जी नाउन बनी थीं वा नहीं?—

रैदासी-ओबे! कानफेडे तू भगवान् और भगवान् के भक्तों की बार २ हंसी करता है मारे लातोंके भेजा निकाल दूंगा नहीं तो तू यहां से उठजा।

कबीरदासी-हां हां! निकालो, इनको यह सब साधु गुरु में श्रद्धा नहीं रखते हैं।

मुमु०-अच्छा अच्छा। हम लोग जाते हैं घबड़ाये मत पटाक्षेप (सब जाते हैं)

(स्थान मथुरा नगर रामद्वारे के सामने की सड़क दो रामसनेही बैठे बातें करते हैं)

पहला-आज पहर भर दिन चढ़ गया राम आसरे से कोई माई दाई भोजन पाणी को बूझने नहीं आई।

दूसरा हांजी अपने राम भी अभी तो ऐसेही बैठे हैं काल झुमल मारवाड़ी की बहू भोजन लानेकी कह-गई थी उसही की राह देख रहे हैं॥

पहिला-अभी साध लोग रामभजन से निबटे हैं अब विषयी लोगों के आने का वखत हुआ है, सो भी आती होगी॥

दूसरा-हां ठीक है अबही माई लोगों के दल का भजन आरम्भही नहीं हुआ। (नेपथ्य में)

सांई किया सो होरहा, जो कुछ करै सो होय।
करता करै सो होत है, काहे कलपै कोय॥
दादू सहजै होयगा, जो कुछ रचियाराम।
काहे को कलपै मरै, दुःखी होय बेकाम॥
जो तैं किया सो होरहा जो तू करै सो होय।
करना करावना एक तू, दूजा नाहीं कोय॥
सोई हमारा साइयां, जो सबका पूर्णाहार।
दादू जीवन मरण का, जिसका हाथ विचार॥

अरे! क्या मुर्दे की माफिक राम २ कहरहे हो एक बार तोप खासा गोला मारदो।

दादूपन्थी—राम!

रामस्नेही—आय्ये! आय्ये! बंसीदास जी! अच्छे तो रहे आज किधर भूल पड़े।

दादूपन्थि—आः विलासीरामजी बैठे हैं! यह कौन बहजराम हैं? अच्छा राम राम।

(मुमुक्षु का प्रवेश)

मुमु०—(आपही आप) मैंने इन प्रधान तीर्थों में जाकर अनेक सम्प्रदाय के आचार्य्यों से और साधुओं से प्रश्न उत्तर किये पर चित्त को सन्तोष नहीं हुआ, क्या ईश्वर और जगत् के तत्त्व को जानने वाला कोई भी नहीं है? ओः! बड़ा आश्चर्य्य है जिसने इस जगत् को रचा उसको ही कोई नहीं जानता है! यह सामने से कैसी भीड़ चली आती है। एं एं जाना यह लोग मुर्दे को लिये आते हैं भला अब राम राम सत्य कहने से क्या लाभ है? अरे! मूर्खो जीते जी तो सिखाते रहे कि जगत् सत्य है और जब जीव चला गया और मिट्टी ही रह गई तब पुकारते हो, "राम राम सत्य है" भला अब इससे क्या होता है। (कान लगा कर) अरे यह कौन गाता है?

लावनी—

सीतापतको सुमरा जिसने वही तो कुछ आराम में है।
सब पूछो तो फकत आराम राम के नाम में है॥
कोई पुकारैं ईसा या कोई मू महम्मद हद में है।

कोई कृष्ण की गाथा गावैं कोई जिद्द बेहद में हैं ॥
कोई काशी कोई जाते मथुरा कोई मक्के की कद में हैं ।
कोई मदीना जाय पुकारैं भोने राह के सद में हैं ॥
कोई संग असवद को चूमैं कोई पूजा के मद में हैं ।
कोई बपतिस्मा जल को पीवैं कोई न्हाते मउन्द में हैं ॥
नहीं गिरजा, मसजिद में वो और नहीं वो पारो धाम में हैं।
सच पूछो तो फकत आराम राम के नाम में है ॥

मुमु०–(चौंक कर मन में) अरे ! यह कौन हैं हां हां मालूम हुआ यह लावनी के रंगीले छबीले छैल हैं पर इस का भेष तो संन्यासियों का सा है अच्छा बूझूं तो यह कौन है (प्रकाश) महाराज आप कौन हैं ?

संन्या०–(चाल लावनी) काशी गिर परमंस बोलते आशिक़ एक्कानी मुझको,

मुमु०–महाराज ! मैं यह पूछता हूं कि आप का पन्थ क्या है ?

संन्या०–(लावनी) बनारसी यों कहैं इश्क़ ने कर दिया गुसाईं मुझ को । कहैं दीवाना कोई कहता है सौदाई मुझ को ॥

मुमु० आः आः आप बनारसी हैं ! खैर तब तो आप बड़े पण्डित हैं क्योंकि आप की लावनी बड़ी बड़ी उत्तम हैं ।

संन्या०–(बैंत) मत कहो हमें कोई पण्डित हमतो बड़े बदमाश हैं । ऐब जितने हैं जहां के सब ही हमारे पास हैं ।

मुमु०–क्यों महाराज ! आप क्या गांजा भी पीते हैं?

संन्या०–खाली गांझा ही क्यों ? शराब कबाब कुछ

भी हम से नहीं छूटा है फक्कड़ लोग ला मज़हब होते हैं क्या तैने सुना नहीं है? "तर्क दुनियां तर्क औक़ा तर्क उक़बा तर्क तर्क"

मुमु०—बाबा जी! आपसे खाना, पाखाना तो छूटा ही नहीं तब दुनियां तर्क कैसे हुई?

संन्या०—(लावनी) सदा अनलहक़ कहैं हमें अब प्यारी यही सदा लगी।

खुदी मिट गई खुदाकी दिलपै याद अब खुदा लगी।

मुमु०—अच्छा मालूम भया तब तो आप धर्म्म के तत्व को खूब समझते हैं! खैर! चलिये कुछ मथुरा की सैर तो कराइयें!

संन्या०—अच्छा चलो (कुछ दूर जाके) वह देखोवे रांड स्नेही बैठे हैं।

एक रामस्नेही—(बनारसी से) तुम ने हम को रांडस्नेही क्यों कहा?

संन्या०—तुम्हारी चाल ही ऐसी है।

रामस्नेही—हम तो राम जी का भजन करते हैं और माइओं से भजन कराते हैं और हमारी चाल क्या बुरी है?

मुमु०—और क्या चाल होती-सुनिये

दोहे

दुहता, भगिनी मात के, साथ न एकाकी बैठ।
इन्द्रिय गन बलवान् हैं, कबहीं जैहैं ऐंठ॥
नरक निशानी नरन को, नारी चतुर सुजान।
यहिते नारिन के विषे, दुखद प्रमाद प्रमान॥

रामस्नेही—ये बात तो ठीक है पर माइओं की गति कैसे होगी? पुरुष ही उन को उपदेश न करैं तो उन्हे राम की भक्ति कैसे मिले?

मुमु०—महाराज ! स्त्रियों के वास्ते पति ही उपदेश करने वाला होता है ।

रामस्नेही—रामराम राम ! भला साधू लोग क्या उपदेश करेंगे ? वे तो आप ही कुछ नहीं जानते ।

मुमु०—हां महाराज ! जब से अभागे पुरुष मूर्ख हो गये तब से ही तो उनकी स्त्रियां तुम्हारे बशमें हो गईं मैंने कई एक बदमाश फकीरों के मुख से सुना है ।

(दोहा)

नहीं सन्त ब्याहन चढ़े, ना सिर बांधें मौर ।
करी कराई ले भगैं, ये सन्तन के तौर ॥
बड़े घरन की सुन्दरी, सन्तन देख लजायं ।
इसी पाप से कूकरी, घर घर मारी जायं ॥

(भजन गाते हुए स्त्रियों के झुण्ड का प्रवेश)

भजन

राम जी के चरनो मेरा मन लागा ।
हाथ लोटा कन्धे धोती ॥
चलो जी गंगा जी का न्हान न्हाये । राम जी के०॥
चोला चीर उतार धरियो तो ।
धोती पहरे गंगा जी में न्हाइयो ॥ राम जी के० ॥
चोला चीर किसन ले भागे तो ।
हम गंगा जी में खड़ी उघाड़ी ॥ राम जी के० ॥
हमरे तो बस्तर देहु मुरारी तो ।
हम जल बीच खड़ी हैं उघाड़ी ॥ राम जी के० ॥
तुमरे तो बस्तर हर बीन देस्यूं ।
जल से तो हो जाव न्यारी न्यारी ॥ राम जी के० ॥

जल से तो न्यारी हरबीन होरहूं ।
हो जाऊं जीवड़े से न्यारी न्यारी ॥ राम जी के०॥
हाथ देदे निकली हैं नारी तो ।
गाली, देदे हसैं है मुरारी । राम जी के० ॥
तिरिया जनम मत देहु बिधाता तो,
कैसे परसूंगी ठाकुर द्वारा । राम जी के० ॥
तिरिया जनम तेर सुफल फलैगा तो,
नित उठ परसोगी ठाकुर द्वारा । राम जी के० ॥

राम०—हमारा मतही इस वास्ते है कि शूद्र और स्त्रियों का उद्धार कियाजाय ।

मुमु०—स्त्रियों का उद्धार तो केवल पति सेवा सेही होता है क्योंकि किसी धर्मशास्त्र में भी स्त्रियोंके वास्ते पतिव्रत के सिवाय और कोईभी व्रत नहीं लिखा है ॥

राम०—तैंनेही बड़ा धर्मशास्त्र पढ़ा है । जो भगवान् के वर्त्त, चर्त्त, पूजा, पाठ सबकीही निन्दा करता है जो जो माई लोग वर्त्त न करैं भगवान् की सेवा न करैं तो दुनियां से धर्मही उठ जाय क्या तैंने सुना नहीं है गोपीचन्द भरथरी ने क्या कहा है ?

"अलवर तिजारा रहे वर्षधारा
नाई का हेत बालू का कुहेत
आधे में सोना आधे में रेत " ।

मुमु०—इसका तो अर्थ हमने नहीं समझा ।

राम०—गोरखनाथ के चेला गोपीचन्द और राजा भर्थरी एक समय घूमते हुए अलवर में पहुंच गये और कुम्हार के घर आसन जमा दिया कुम्हार की स्त्री सा-

धुओं की श्रद्धा से सेवा करै थी और कुम्हार सेवा नहीं करै था इस सेही साधुओं के वचन से कुम्हार के आंवे में आधे बर्त्तन मिट्टी के रह गये और आधे सोने के होगये बस समझ जाओ! साईं के परताप से ही वाबू तरते हैं॥

मुमु०-अच्छा हमको साधुओं से झगड़ा नहीं करना है। तुम, यह बतलाओ रामसनेही पन्थ कबसे चलाहै?

राम०-राम सनातन हैं और उसके भगत भी सदा से होते आये हैं।

दादूपन्थी-ये कल्ह के मुण्डे क्या जानें, इस पन्थ की जड़को मैं जानताहूं मुझ से बूझो।

मुमु०-अच्छा तुमही कहो।

दादू-इनके पन्थको निम्बार्क सम्प्रदायके रामचरण नामक एक मनुष्य ने मूर्त्तिपूजा से चिढ़के चलाया था।

मुमु०रामचरण कब और कहां उत्पन्न हुआ था?

दादू०-संवत् १७७६ में जयपुर राज्य के सूरासेन नामक गांव में रामचरण का जन्म हुआ था।

मुमु०-उसने नया मत को क्यों चलाया?

दादू-तुम जानतेही हो कि "सन्तका निन्दक कोई नहीं कोई ब्राह्मण होय तो होय" बस ब्राह्मणों ने उसकी निन्दा करनी और उसको कष्ट देना आरम्भ किया तब बेचारा रामचरन घबड़ाकर संवत् १८०७ में अपने गांव से भागकर उदयपुर में चलागया और वहीं रहने लगा

मुमु०-फिर!

दादू०–फिर यह कि उन दिनों उदयपुर में महाराणा भीमसिंह राज्य करते थे, रामचरण के विचारको सुनके उदयपुरके ब्राह्मण बिगड़े और भीमसिंहसे कहा कि रामचरण के रहने से तुम्हारा राज्य नष्ट होजायगा, इस सलाह को जानके महाराणा भीमसिंह ने रामचरण को अपने राज्य से निकलवा दिया॥

मुमु०–फिर क्या हुआ?

दादू०–पीछे शाहपुरे के अधीश्वर दूसरे भीमसिंह ने रामचरण की दुर्दशा पर दया करके अपने नौकर चाकरों को उदयपुर भेजा और रामचरण को अपने यहां बुलवा लिया। तब रामचरण ने रामस्नेही पन्थ चलाया संवत् १८१६ में)

मुमु०–अच्छा रामचरण का फिर क्या हाल हुआ?

दादू०–भीलवाड़े राज्य का साधराम नाम का एक व्यवहारी रामचरण का शत्रु होगया और उस ने एक सीङ्गी को रामचरण को मार डालने के वास्ते भेजा पर वह सीङ्गी रामचरण के शान्तस्वभाव को देख कर मार न सका। तब संवत् १८५५ में रामचरण ७९ वर्ष की अवस्था भोग कर अपनी मृत्यु से मर गया।

मुमु०–रामचरण ने अपने पन्थवालों को कुछ उपदेश भी किया था।

दादू०–रामचरण ने ३६२५० शब्द बनाये हैं।

मुमु०–उन के मत में क्या सब शब्द रामचरण के ही बनाये चलते हैं?

दादू०–नहीं और लोगों के बनाये भी शब्द चलते हैं।

मुमु०–और किस के शब्द हैं?

दादू०-रामचरण के मरने के पश्चात् रामजन नामक एक मनुष्य उनकी गद्दी पर बैठा और उसने १८ हज़ार शब्द बनाये ।

मुमु०-यह रामजन कहां उत्पन्न हुआ था ?

दादू०-यह सिरसाम गांव में उत्पन्न हुआ और संवत् १८२५ में रामचरण से दीक्षा ली थी और १२ वर्ष दो महीने ६ दिन तक महन्ती करके संवत् १८६६ में मर गया ।

मुमु०-क्या और भी कोई ग्रन्थकार रामस्नेहियों में हुआ था ?

दादू०-हां रामजन के पीछे दूलहराम महन्त ने चार हज़ार शाखी बनाई थीं ।

मुमु०-वाह ! वाह ! साधराम जी तुम तो खूब इन के घरियाने को जानते हो ।

दादू०-साध क्या भेड़ चराने को बने हैं ?

मुमु०-अच्छा तो इनके और महन्तोंके नाम कहिये ?

दादू०-दूलहराम के बाद छत्रदास और उनके पीछे नारायणदास महन्त हुये थे ।

मुमु०-महन्त क्या आप से आप हो जाते हैं ?

दादू०-नहीं ! नहीं ! आप से आप महन्त कैसे बनते।

मुमु०-फिर कौन महन्त बनाता है ?

दादू०-जब पहिला महन्त मर जाता है तब नये महन्त को गद्दी पर बठलाने के वास्ते शाहपुर में सब रामस्नेही (उदासी और विषयी) इकट्ठे होकर किसी को चुन लेते हैं बस वही महन्त बनता है ।

मुमु० क्या इन के मत का महन्त कोई गृहस्थ भी हो सक्ता है वा नहीं ?

दादू०—नहीं क्यों? जरूर होसकता है पर गृहस्थ विदेही और मौनी नहीं हो सक्ता है।

मुमु०—विदेही और मौनी किसे कहते हैं?

दादू०—विदेही उन्हे कहते हैं जो सदा नङ्गे रहते हैं और मौनी वह कहलाते हैं जो बोलते नहीं हैं।

मुमु०—क्या विदेहीलोग जाड़े में भी कपड़ा नहीं ओढ़ते हैं? क्या अग्नि भी नहीं तापते हैं?

दादू०— साथ पत्थर के तो होतेही नहीं जो जाड़े में आग न तापें और न लिहाफ ओढ़ें। कितने ही भगत और साधु लोग जाड़ों में विदेही लोगों के ऊपर लिहाफ डाल जाते हैं।

मुमु०—फिर नङ्गा रहने से क्या फायदा है। नङ्गा रहने से प्रयोजन तो यह है कि तितिक्षा वा सहिष्णुता प्राप्त हो, पर शरीर पर तो १० सेर रुई की झूल पड़ी रहे और चार अंगुल के कपड़े की लंगोटी न पहरना ही धर्म समझ लिया।

दादू०—यह तो ठीक है कि जब तक मन में दुःख और सुख को सहने की दृढ़ शक्ति नहीं होती तबतक यह सब पाखण्ड ही है।

मुमु०—(मन में) इस दम्भ दुष्ट ने किसी को नहीं छोड़ा, आशा पिशाचिनी सबको ताड़ना देरही है, लोभ भयङ्कर रूप धारण करके जोंक के समान सबके रुधिर को चूस रहा है, काम कसाई केवल मनुष्यों के ही नहीं वरन प्राणी मात्र के गलेको काट रहा है।

मालती छन्द।

मम मति फुलवारी, क्रोध दावा उजारी।
जहि लगत पियारी, वासना त्रासमारी॥

मदन कदन कारी, शान्ति वृक्षापहारी ।
शठ कपट दुःखारी, त्रास देते हैं भारी ॥
तन मन धन माही, लिप्त है जो सदाही ।
दुःख अनल सदाही, कीजिये शान्ताही ॥
जग मग सब भूला, लीन दम्भादि मूला ।
प्रभु वन अनुकूला, नाशिये पाप शूला ॥

आः—यह प्रचण्ड पाखण्ड का मार्तण्ड उदय होरहा है, तौं भी कोई सनातन वेदविद्या का जानने वाला इस को अस्ताचल की चोटी पर पहुंचाने का यत्न नहीं करता है। जिस देश में मूर्ख ही आचार्य्य बने हुए हैं उस देश की दुर्दशा क्यों न हो ! यही कारण है कि भारतवर्षकी दिनों दिन अधोगति होती जाती है। क्या ? काशी में एक भी वेद को जानने वाला नहीं है जो इन मूर्खों को आकर उपदेश करे कि विना यज्ञादि कर्म किये मुक्ति नहीं होती है, अच्छा जो वेद ईश्वर का वचन है तो वही इन के चित्त को वेद की ओर क्यों नहीं फेरता ? कुछ जाना नहीं जाता क्या है ? (दादू-पन्थी से) क्यों महाराज आप भी इस ही पन्थ में हैं ?

दादू०—नहीं हम तो श्रीदादू दयालु की शरण में पड़े हैं।

मुनु०—दादू दयालु का क्या कोई जुदा पन्थ है ?

दादू०—आः ! ! तुम नहीं जानते हो दयाल जी तो सदेह भगवान् में मिल गये थे।

मुनु०—(अचरज के साथ) यह क्या बात है जीते जी हड्डी और मांसके मल मूत्र भरे शरीर सहित भगवान् में कैसे मिल गये ?

दादू०–अहमदाबाद में एक धुनिये (बेहने) के घर दादूजी का जन्म हुआ था जब वह बारह १२ वर्ष के थे तब ही उन को आकाशवाणी ने कहा कि तुम भगवान् की भक्ति करो।

मुमु०–फिर।

दादूपन्थी०–फिर वह अपने घर को छोड़ के अजमेर क़िले के सरभरगांव में चले गये।

मुमु०–क्या वहीं भगवान् रहता था जिसमें मिल गये

दादू०–नहीं नहीं वहां जाकर बुद्धन के चेला हुए।

मुमु०–क्या खूब! जैसे गुरु वैसे ही चेला।

कवित्त।

वेद के कहैया और गीता के गवैया गये।
काल के कलेवा भये कलि मल हारो जू॥
योग व्रत धारि अधिकारी नेम संयम के।
यम के सिधारे गेह देह त्याग प्यारो जू॥
धुनिये जुलाहे, नाई सदन कसाई भाई।
भक्त सुखदाई भये मची जग रुधारी जू॥
बुद्धन के दादू औ कमाल के जमाल शिष्य।
जैसे उपदेशक भये वैसे अधिकारी जू॥ १॥

अच्छा आगे कथा कहो?

दादू०–फिर कुछ दिन तक कल्याणपुर में रहकर नरैन गांव में गये और वहां से वह रण पर्वत पर जाके परमेश्वर में लीन होगये।

मुमु०–इसे कौन जानता है कि कोई शेर भेड़िया खागया वा भगवान् खागया।

दादू०–अरे तू बड़ा दुष्ट है महात्माओं को ऐसा वचन कहता है।

मुसु०-अच्छा महाराज! क्षमा कीजिये।

दादू०-नहीं नहीं! मैं क्रोध नहीं करता हूं पर यह कहता हूं कि दयाल जी का घराना बड़ा है वह आप रूप भगवान् में मिल गये थे। देखो कहा भी है।

दोहा।

ज्ञानी मुक्त विदेह में, जैसा होय अभेद।
दादू आदू रूप सों, जाहि बखाने वेद॥
नाम रूप व्यभिचार में, अनुगत एक अनूप।
दादू पद को लक्ष्य है, अस्ति भांति प्रियरूप॥

मु०-धन्य है बाबा जी! पहिले आप ने कथा कहा था कि दादू जी धुनिये के पुत्र थे और अब उन्हे परमेश्वर ही बताने लगे यदि वह ब्रह्म ही थे तो बुद्धन के चेला क्यों बने थे।

भला जो किसी का पुत्र होगा वह जगत् का आदि क्योंकर होसक्ता है।

रामस्नेही-अरे बाबा दादू तो जहांगीर बादशाह के वखत में पैदा हुआ था उसे जगत् का आदि क्यों कहते हो?

दादू०-चुप रहो! हम तुम से मन्मुखी और निगुरे नहीं हैं, हम गुरु गोविन्द को एक रूप मानते हैं।

रामस्नेही-तू ज़रूर निगुरा है, अवे अपने गुरु के उपदेश को भी मानता है वा नहीं? देख दादू जीने क्या लिखा है?

विश्वास का अङ्ग।

जो तैं किया सो ह्वै रहा, जो तू करे सो होय।
करण करावण एक तू, दूजा नाहीं कोय॥

सोई हमारा सांइयां, जो सबका पूरण हार।
दादू जीवन मरण का जाके हाथ विचार॥
दादू स्वर्ग भुवनपाताल, मध्य आदि अन्त सब सृष्ट
सिरजि सबन को देत है, सोई हमारा इष्ट।
करण हार करता पुरुष हमकै ऐसी चीत।
सबकाहू की करत है सो, दादू को मीत॥

अरे जब तेरा परम गुरु दादू ही जगत् के बनाने वाले को अपना इष्ट कहता है तो तू कौन खेतका बथुवा है जो दादू के जगत् का आदू बताने लगा।

मुमु०-(रामस्नेही से) यह इस बेचारे का दोष नहीं है, यह तो किहडौली गांव के रहने वाले निश्चल दास का दोष है।

राम०-वह क्या दादू के वचनों को नहीं मानता था?

मुमु०-नहीं वह शंकराचार्य्य के मत पर चलता था?

राम०-तब ऐसे गुरुद्रोही की चर्चाही मत करो उन का क्या विश्वास है जो अपने बाप को छोड़कर दूसरे को पिता पुकारने लगे उस में भी परमेश्वर के भक्त के मतको त्यागकर खुदखुदा बनने का मत ग्रहण करलिया।

मुमु०-खैर इस झगड़े को जाने दीजिये यह बतलाये कि दादूपन्थियों के मतकी कोई और भी शाखा है?

दादू०-क्योंबे! बाबूड़े! दादू दयाल के मत में शाखा कहां से आई? यह तो अखण्ड मत है किसी के मत में साहब को बहरा समझते हैं और चिल्लाते हैं किसी मत में ठाकुर जी को लला लड्डूड़ा समझ कर स्नान कराते और भोजन कराते हैं पर दादू दयाल के मत में यह कुछ भी झगडे नहीं हैं

राम०—अबे! अपने पन्थ की बातों को छिपाता क्यों है? (मुमु०) अजी! दादू पन्थी तीन तरह के होते हैं। १ नागा, २ विस्तरधारी, और ३ विरक्त इन में से नागा लोग राजों की फौज में नौकरी करते हैं।

मुमु०—इनके सिवाय और तो कोई शाखा नहीं है?

राम०—इनके सिवाय दादू पन्थियोंकी ५२ शाखाऔरहैं

मुमु०—क्या इन के सिद्धान्तों को बतासक्ते हो?

राम०—इनके मतकी सब बातों को कोई भी नहीं जानता है पर इनके मत में टीका टुरा मुरा कुछ भी नहीं होता है।

नेपथ्य में।

सुरत यमुना बही ज्ञान मथुरावसा।
ग्राम गोकुल विश्वास आया॥
शान्ति यशोदा देवकी सत् गुरु—
नन्दवसुदेव प्रीत लाया॥
जीव और ब्रह्म श्रीकृष्ण बलदेव जी।
कंस अहङ्कार को मार लाया॥
विवेक वृन्दावन सन्तोष का कदम।
है ग्वाल दो बीच दाया॥
सन्देह श्रीराधिका शीलकी ओमनी।
तत्त्व माखन छीन खाया ८

दोहा।

गोविन्द ऐसा वामना, पढ़े निवालालेय।
पल्टू ऐसा वाणिया, उठ सूते नाजाय॥

(सब चकित होके देखते हैं) अरे! यह तो पल्टू दासी चले आते हैं इनसे वकवाद कौन करेगा यह सोच

तो न रामको मानें और न रहीम को मानें। इन से विचार वह करे जो देव का हो और न पितरका हो, चलो चलो अब यहां बैठना अच्छा नहीं है (सब जाते हैं।)

मुमु०—(पलटूदासी साधु से) महाराज जी दण्डवत्।

साधु—खुस रहा बच्चा, यहां क्यों बैठा है?

मुमु०—महाराज! मैं संसार के झगड़ों से घबड़ाया हूं, मेरी यही इच्छा है कि परमेश्वर की प्राप्ति का मार्ग पाकर उस ही की चिन्ता में रात दिन मनको मग्न रखूं।

प० दा० साधु—परमेश्वर के पाने का सीधा मार्ग तो पलटू साहब के सिवाय किसी ने कहा ही नहीं है देख साहब ने अपने मूंसे फर्माया है—

"भाग रे भाग फकीर के बालके।
दामक कामिनी दो बाघलागे॥
मारलेंगे पड़ा चिचियायगा।
भया बेवकूफ नाहीं भागे॥
शृङ्गी और नारद को मारके खालिया।
बचे न कोई जो लाख त्यागे॥
पलटूदास कहैं ... ...

देखरे देखगुरु गममस्ताना । गैबनगरसहजे चढ़जाना ॥
इड़ापिङ्गलाबामरढोरे । सुखमनघनघनबजतनिशाना ॥
देख रे देख०
गंगायमुनासरस्वतीधारा । लाग मदोदरकरअसनाना ॥
देख रे देख०
तुरियाचढ़चढ़ गर्जन लागे । देख रूपयमराज डराना ॥
देख रे देख०
गुरुगोविन्दसेसबसुखमिलिहै । आशिकहो पलटूबोराना ॥
देखरेदेखगुरुगम मस्ताना । गैबनगरसहजेचढ़ि जाना ॥

मुमु०—महाराज ! इन भजनों से तो क्रिया नहीं आती है जैसे इस में आरम्भ की प्राणायाम कही है वैसे करके दिखलाओ तबतो हम को ज्ञान हो ।

प० दा० साधु—बच्चा ! क्रिया तो हमारी यही है कि चार घरों में माई बाबा करके मांगलाना और राम रोट पकाके खालेना तथा अपना सीताराम सीताराम की धुन लगाये रहना और कुछ बताई ही नहीं ।

मुमु०—महाराज ! यह तो बतलाइये कि आप का पन्थ कबसे और कहां से चला है ।

दोहा

—मैज में. बारा गाडी पोल ।

प० दा० सा०-जिस समय श्री अयोध्यापुरी में नवाब सहादतअली का राज था उसी ही समय पलूटू साहब ने अयोध्या को जा चिताया था। साहब ने पहिले गोविन्द साहब से उपदेश लेके सन् १७६७ ई० में बनारस ज़िले के अहरौरा और मोड़कूड़ा ग्राम में अपना स्थान जमाया, अयोध्या में रामनौमी के दिन पलूटू साहब की गद्दी पुजती है। पलूटू दास के शिष्य रामकृष्ण दास, उनके चेला रामसेवक दास हुए। हमारे पन्थ के साधु गले में तुलसी का हीरा धुड़ची (गुंजा) पहिरते हैं, सफेद मट्टी का नाक से चोटी तक लम्बा तक लगाते हैं पीले कपड़े पहिरते हैं और आपुस मस्कार के स्थान में सत्य राम बोलते हैं।

मुमु०-महाराज वह देखिये वह कौन साधु है?

दा० सा०-अरे बाबा वह तो आपा पन्थी है पन्थ बड़ा बुरा है ज़रा इसे आने देतो मैं सब दूंगा॥

(गाते हुये आपापन्थीका प्रवेश)

(राग पूर्वी चैत की चाल)

पलटूदा०—इन का पन्थ ही निगुरा है मल्लापु का रहने वाला एक सुनार जो आप ही कुछ पढ़ लिखा नहीं था उस ही ने इस पन्थ को चलाया था इनके गुरु मुन्नादास की गद्दी अयोध्या से पश्चिम ओर मड़वा नामक गांव में है वह स्वयम् किसी का चेला नहीं हुआ था इधर उधर की बातें सुन सुना के अतीव घृणित आपापन्थ नाम का पन्थ उसने चलाया था मुन्ना दास का शिष्य गुन्नदास और गुन्नदास का चेल भागन दास हुआ।

मुमु०—क्यों बाबा जी तुमने इनके पन्थको घृ क्यों कहा?

प० दा०—इन लोगों में ऐसी बुरी गुप्त क्रिया जिसको कहते लज्जा आती है यह लोग मु पढ़ कर शुक्र निकालते हैं, और मैंक्या कहूं।

मुमु०—बाबा जी! छिपाइये मत।

प० दा०—हमारी तीन सम्प्रदायों में गुप्त रीति से की जाती है उसका नाम "गा स वही सब पापों का मूल है।

उसका कुछ आभास तो मुझे